चैतन्य लहरी

हिन्दी आवृत्ति

खण्ड VII अंक 10, 11 व 12 (1995)

''शरीर का सुख महत्वपूर्ण नहीं है, आत्मा का सुख महत्वपूर्ण है। यदि आपका शरीर सुख चाहता है तो आप उन सुखों का त्याग करना सीखें। शरीर को अपना दास बनाने का प्रयत्न करें, आप स्वयं इसके दास न बनें। यदि आप ऐसा करने का प्रयत्न नहीं करते तो सहजयोग में आप कहीं भी नहीं हैं।''

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

(जन्म दिवस स्वागत-समारोह)

21-03-1995

चैतन्य लहरी

चैतन्य लहरी (1995) खण्ड VII, अंक 10, 11 व 12

–: विषय–सूची :–

1. परम पूज्य श्री माताजी की एक कविता 3
2. कुण्डलिनी और श्री गणेश पूजा, 22 दिसम्बर, 1979 4
3. ईस्टर पूजा, कलकत्ता, अप्रैल–1995 12
4. सहस्रार पूजा, कबेला, 7 मई–1995 16
5. चिकित्सा सम्मेलन, रूस, 14 अप्रैल–1994 23
6. ध्यान–धारणा, 14 मार्च–1983 26
7. कुण्डलिनी और ब्रह्म शक्ति 28

सम्पादक : श्री योगी महाजन

मुद्रक एवं प्रकाशक : श्री विजयनालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली–110 067

मुद्रित : प्रिन्टेक फोटोटाईपसैटर्स,
35, ओल्ड राजेन्द्र नगर मार्केट,
नई दिल्ली–110 060
फोन : 5710529, 5784866

कविता

ओ मेरे पुष्प सम बच्चो

ओ मेरे पुष्प सम बच्चो,
आप जीवन से नाराज़ हैं,
नन्हें शिशुओं की तरह,
माँ जिनकी अंधेरे में खो गई।
यात्रा के निष्फल अन्त की निराशाभिव्यक्ति के कारण
रुष्ट हो तुम,
सौन्दर्य की खोज में,
असौन्दर्य ओढ़े हो तुम।
सत्य के नाम पर
असत्य का नाम लेते हो तुम।
प्रेम प्याला भरने की खातिर
भावनाएं बहाते हो तुम।
मेरे मधुर मधुर बच्चो,
स्वयं से, अपने अस्तित्व से,
और साक्षात आनन्द से युद्ध-रत हो,
किस प्रकार शान्ति प्राप्त कर सकते हो तुम?
शान्ति की बनावटी नकाब और
त्याग के प्रयत्न काफी हुए,
अपनी गरिमामय माँ की गोद में,
कमल की पंखुड़ियों पर अब करो विश्राम।
सुन्दर पुष्पों से सजाऊँगी जीवन तुम्हारा,
आनन्द सुगन्ध से भर दूँगी हर पल तुम्हारा।
दिव्य प्रेम से तुम्हारे मस्तक का करुंगी अभिषेक।
कष्ट तुम्हारे अब मुझसे सहन होते नहीं,
आओ डुबो दूं तुम्हें आनन्द सागर में
डुबो दो अपने अस्तित्व को
एक महान अस्तित्व में,
जो आत्मा के बाह्यदल पुंज में मुस्करा रहा,
सदा तुम्हें छेड़ने के लिए,
रहस्यमय ढंग से छुपा हुआ।
चेतन होकर देखो उसे
दिव्य आनन्द से तुम्हारे रोम-रोम को
चैतन्यित करता हुआ,
पूर्ण ब्रह्माण्ड को प्रकाश से भरता हुआ।

परम पूज्य माताजी
(हिन्दी रूपान्तरण)

कुण्डलिनी और श्री गणेश पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

अमरहिंद मंडल, दादर, बम्बई, 22-9-1979

आज नवरात्रि के प्रथम दिवस की शुभ घड़ी में, ऐसे इस सुन्दर वातावरण में इतना सुन्दर विषय! सभी योगायोग मिले हुए दिखते हैं। आज तक मुझे किसी ने पूजा विषय की बात नहीं कही थी परन्तु वह बहुत महत्वपूर्ण है। विशेषत: इस योग भूमि में, भारत भूमि में, महाराष्ट्र की पुण्य भूमि में, जहां अष्टविनायकों की रचना स्वयं सृष्टि देवी ने (प्रकृति ने) की है, वहां श्री गणेश का महत्व बहुत से लोगों को मालूम नहीं हैं। इसका मुझे बहुत आश्चर्य है। हो सकता है जिन्हें सब कुछ पता था, जो बड़े-बड़े साधु सन्त इस आपकी सन्त भूमि में हुए हैं, या तो उन्हें किसी ने बोलने का मौका नहीं दिया या उनकी किसी ने सुनी नहीं। परन्तु इसके बारे में जितना कहा जाए उतना कम है और एक की जगह सात भाषण भी रखते तो भी श्री गणेश के बारे में बोलने के लिए मुझे वो कम होता।

आज का सुमुहूर्त घटपूजन का है। घटस्थापना अनादि है। मतलब जब इस सृष्टि की रचना हुई, (सृष्टि की रचना एक ही समय नहीं हुई वह अनेक बार हुई है।) तब पहले घटस्थापना करनी पड़ी। अब 'घट' का क्या मतलब है? यह अत्यन्त गहनता से समझ लेना जरूरी है। प्रथम ब्रह्मतत्व में जो स्थिति है, वहाँ परमेश्वर का वास्तव्य होता है। उसे हम अंग्रेजी में Entropy कहेंगे। इस स्थिति में कहीं कुछ हलचल नहीं होती है। परन्तु स्थिति में जब इच्छा का उद्गम होता है या इच्छा की लहर 'परमेश्वर' को आती है, तब उसी में परमेश्वर की इच्छा समा जाती है। वह इच्छा ऐसी है कि अब इस संसार में कुछ सृजन करना चाहिए। यह इच्छा उन्हें क्यों होती है? वह उनकी इच्छा है! परमेश्वर को इच्छा क्यों होती है, ये समझना मनुष्य की बुद्धि से परे है। ऐसी बहुत सी बातें मनुष्य की सर्वसाधारण बुद्धि से परे हैं। परन्तु जैसे हम कोई बात मान लेते हैं, वैसे ही ये भी मानना पड़ेगा कि परमेश्वर की इच्छा उनका शौक है। उनकी इच्छा, उन्हें जो कुछ करना है वे करते रहते हैं। यह इच्छा उन्हीं में विलीन होती है (एकरूप होती है) और वह फिर से जागृत होती है, जैसे कोई मनुष्य सो जाता है और फिर जाग जाता है। सो जाने के बाद भी उसकी इच्छाएं उसी के साथ सोती हैं, परन्तु वे वहीं होती हैं और जगने के बाद पुन: कार्यान्वित होती हैं। वैसे ही परमेश्वर का है। जब उन्हें इच्छा हुई कि अब एक सृष्टि की रचना करें, तब इस सारी सृष्टि की रचना की इच्छा को, जिसे हम तरंग कहेंगे या जो लहरें हैं, एकत्रित करके एक घट में भर दिया। यही वह 'घट' है। अर्थात परमेश्वर व उनकी इच्छाशक्ति अगर अलग की जाय, हम अगर ऐसा समझ सकें तो समझ में आएगा। मानव के साथ भी उसी तरह है, परन्तु थोड़ा सा फर्क है। आप और आपकी इच्छा शक्ति में फर्क है। वह पहले जन्म लेती है। जब तक आपको किसी बात की इच्छा नहीं होती तब तक कोई नहीं होता। मतलब अब जो ये सुन्दर विश्व बना है वह किसी की इच्छा के कारण है। हर एक बात इच्छा होने पर ही कार्यान्वित होने के लिए उसे उनसे अलग करना पड़ता है। अगर वह परमेश्वर में समायी रहेगी तो निद्रावस्था में रहेगी। इसलिए वह उनसे अलग होकर कार्यान्वित होती है। उसे हम 'आदिशक्ति' कहेंगे। ये प्रथम स्थिति जब आयी तब घटस्थापना हुई। यह अनादि काल से अनेक बार हुआ है और आज भी जब हम घटस्थापना करते हैं। तो उस अनादि अनंत क्रिया को याद करते हैं। तो उस नवरात्रि के प्रथम दिन हम घटस्थापना करते हैं। कितनी बड़ी ये बात है! याद रखिए। उस समय परमेश्वर ने जो इच्छा की वह कार्यान्वित करने से पहले एकत्रित की और एक घट में भर दी। उसी 'इच्छा' का हम आज पूजन कर रहे हैं। उसी का आज हमने पूजन किया। परमात्मा की इच्छा ही हमें मनुष्यत्व तक लायी, हमें इतनी महान स्थिति तक पहुँचाया। अब आपका ये परम कर्त्तव्य है कि उनकी इस इच्छा की पहले वंदना करें।

उस इच्छा को हमारे सहजयोग की भाषा में श्री 'महाकाली की इच्छा' कहते हैं या महाकाली की शक्ति कहते हैं। ये महाकाली की शक्ति है और ये जो नवरात्रि के नौ दिन (विशेषकर महाराष्ट्र में) आरंभ होते हैं वे इस महाकाली के अनेक अवतरणों के बारे में है। अब महाकाली शक्ति से पहले यानी इच्छा शक्ति के पहले कुछ भी घटित नहीं हो सकता। इसीलिए इच्छा शक्ति आदि है, और अंत भी उसी में होता है। प्रथम इच्छा से ही सब कुछ बनता है और उसी में विलीन होता है। तो ये श्री सदाशिव की शक्ति या आदिशक्ति है। ये आप में महाकाली की शक्ति बनकर बहती है। अगर आपने अपना शरीर विराट का अंशस्वरूप माना तो उसमें जो बायीं तरफ की शक्ति है वह आप की ईड़ा नाड़ी से प्रवाहित होती है। उस शक्ति को महाकाली की शक्ति कहते हैं। इसका मनुष्य में सबसे ज्यादा प्रादुर्भाव हुआ है। पशुओं में उतना नहीं है। अपने में वह (मनुष्य प्राणी में) अपनी दायीं तरफ से सिर में से निकलती है। उसके बाद बायीं तरफ जाकर त्रिकोणाकार अस्थि के नीचे जो श्री गणेश का स्थान है वहां खत्म होती है। मतलब महाकाली की शक्ति ने सर्वप्रथम केवल श्री गणेश को जन्म दिया। तब श्री गणेश स्थापित हुए। श्री गणेश सर्वप्रथम स्थापित किए हुए देवता हैं। श्री महाकाली की तरह ही श्री

गणेश हैं। ये बीज हैं और बीज से सारा विश्व निकल कर उसी में वापस समा जाता है। श्री गणेश, ये जो कुछ है, उसी का बीज है, जो आपको आंख से दिख रहा है, कृति में है, इच्छा में है, उसका बीज है। इसीलिए श्री गणेश को प्रमुख देवता माना जाता है। इतना ही नहीं, श्री गणेश का पूजन किए बगैर आप कोई भी कार्य नहीं कर सकते। फिर वे कोई भी हो, सभी प्रथम श्री गणेश का पूजन करते हैं। उसका कारण है कि श्री गणेश तत्व परमेश्वर ने सबसे पहले इस सृष्टि में स्थापित किया। श्री गणेश तत्व मतलब जिसे हम अबोधिता कहते हैं या अंग्रेजी में innocence कहते हैं। अब ये तत्व बहुत ही सूक्ष्म है, ये हमारी समझ में नहीं आता। जो बच्चों में रहता है, जिसकी चारों तरफ कमी है और जिसकी सुगंध फैली हुई है। इसीलिए छोटे बच्चे इतने प्यारे लगते हैं। ऐसा यह अबोधिता का तत्व है जो श्री गणेश में समाया है। अब ये मनुष्य को समझना जरा मुश्किल है कि एक ही देवता में ये सब कुछ समाया है? परन्तु सूर्य में जिस प्रकार प्रकाश देने की शक्ति है उसी प्रकार श्री गणेश में ये अबोधिता है। तो ये जो अबोधिता की शक्ति परमेश्वर ने हममें भरी है उसकी हमें पूजा करनी है। मतलब हम भी इसी प्रकार अबोध हो जाएं। अबोधिता का अर्थ बहुतों को लगता है 'अज्ञानी'। परन्तु अबोधिता का अर्थ है भोलापन, जो किसी बच्चे में है या मासूमियत कहिए, वह हमारे में आनी चाहिए। ये कितना बड़ा तत्व है ये आप नहीं समझते हैं। एक छोटा बच्चा हर चीज़ का खेल बना लेता है। (वैसे आजकल के बच्चों में भोलापन नहीं रहा है।) उसका कारण आप बड़े लोग ही हैं। हम दूसरों को क्या बताएं, हम कौन से अपने धर्म का पालन कर रहे हैं? कितने धार्मिक हम हैं जो अपने बच्चों को धार्मिक बनाएं? ये सब उसी पर निर्भर है। इसीलिए बच्चे ऐसे हैं। अब ये जो मनुष्य में 'अबोधिता' का लक्षण है वह किसी बच्चे को देखकर पहचाना जा सकता है। जिस मनुष्य में अबोधिता होती है वह कितना भी बड़ा हो वह उसमें रहती है। जैसे कोई छोटा बच्चा खेलेगा, खेल में वह शिवाजी राजा बनेगा, किला बनवाएगा, सब कुछ करेगा, उसके बाद सब कुछ छोड़कर वह चला जाएगा। मतलब सब कुछ करके उससे अलिप्त (अलग) रहना। जो कुछ किया, उसके प्रति अलगाव। उसके पीछे दौड़ना नहीं।

ये साधारणतया एक बच्चे का बर्ताव होता है। आपने किसी बच्चे को कुछ दिया तो वह उसको संभालकर रखेगा। फिर थोड़ी देर बाद आपने उसे कुछ फुसलाकर वह वापस ले लिया तो उसे उसका कोई दु:ख नहीं होगा। परन्तु कुछ बातें ऐसी हैं जो छोटा बच्चा कभी नहीं छोड़ता। उसमें एक बात बहुत महत्वपूर्ण है। वह है उसकी 'मां'। अपनी मां को वह नहीं छोड़ता। बाकी सब कुछ आपने उससे छीन लिया तो कोई बात नहीं। उसे कुछ नहीं मालूम, पैसा नहीं मालूम, पढ़ाई नहीं मालूम, कुछ नहीं मालूम। उसे केवल एक ही बात मालूम है। वह है उसकी मां। यह मेरी मां है, ये मेरी जन्मदात्री है, यही मेरी सब कुछ है। वह मां से ज्यादा किसी भी चीज़ को महत्व नहीं देता। मतलब हम सभी में बचपन से ये बीज तत्व है। इसीलिए हम अपनी मां को नहीं छोड़ते। हमें याद रहता है कि उसने हमें जन्म दिया है। परन्तु उसके अतिरिक्त भी एक दूसरी मां परमेश्वर ने आपको दी है और वह आपके अन्त:निहित आपकी 'कुण्डलिनी' है। कुण्डलिनी माता, जो आपमें त्रिकोणाकार अस्थि में परमेश्वर ने बिठायी है वह आपकी मां है। उसे आप हमेशा खोजते हैं। आपकी सभी खोजों में, फिर वो राज-काज में हो, सामाजिक हो या शिक्षा-क्षेत्र में हो, किसी भी चीज़ का आपको शौक हो, उन सभी शौकों के पीछे आप उस कुण्डलिनी मां को खोजते है। यह कुण्डलिनी मां आपको परम पद को पहुँचाती है, जहां सभी तरह का समाधान मिलता है। इस मां के प्रति आकर्षण आपमें अन्तर्जात होता है। वह आपमें श्री गणेश तत्व के कारण जागृत रहती है।

जिस मनुष्य का श्री गणेश तत्व एकदम नष्ट हुआ होता है उसमें अबोधिता नहीं होती है। अबोधिता के बहुत से गुण मनुष्य में अभिव्यक्त होते हैं। मां-बहन, भाई उनके प्रति पवित्रता रखना। सांसारिक जीवन में केवल एक स्त्री आपकी पत्नी हो सकती है, बाकी सब लोग जो हैं उनसे आपका पवित्र रिश्ता है। ऐसा परमेश्वर ने बताया है, और ऐसा अगर आपके व्यवहार में दिखने लगा तो मानना पड़ेगा कि इस मनुष्य में सच्ची अबोधिता है। वह उनकी सच्ची पहचान है। अबोधिता की ये पहचान है कि मनुष्य को सभी में पवित्रता दिखाई देती है क्योंकि अपने आप पवित्र होने के कारण वह अपवित्र नजरों से किसी को नहीं देखता। अब अपने यहां पवित्रता समझाने की बात नहीं है। अपने यहां पवित्रता क्या है ये मनुष्य को मालूम है। इंग्लैंड में, अमेरिका में समझाना पड़ता है क्योंकि उनके दिमाग ठिकाने नहीं होते। परन्तु आप अभी भी सही हैं। विशेषत: इस भारत भूमि पर परमेश्वर कृपा से, अष्टविनायक कृपा से या आपकी पूर्वपुण्याई से, आपके गुरु-सन्तों की हुई सेवा के कारण पृथ्वी पर महाराष्ट्र एक ऐसी भूमि है कि जहां से ये पवित्रता अभी तक नहीं हिली है। और इसी पवित्रता का आज आप पूजन कर रहे हैं। **मतलब पूजन करते समय आपमें वह पवित्रता है कि नहीं है इधर ध्यान देना जरूरी है।** अब हमारे सहजयोग में जिनमें गणेश तत्व नहीं है वह व्यक्ति किसी काम का नहीं, क्योंकि ये जो गणेश बिठाये हैं वे गौरी के पुत्र हैं और श्री गौरी आप की कुण्डलिनी शक्ति है। यही ये गौरी शक्ति है। आज श्री गौरी पूजन है और आज श्री गणेश पूजन है। मतलब कितना बड़ा दिन है ये आप समझ लीजिए। आज आपका श्री गणेशतत्व श्री गौरी से उत्पन्न है। ये मनुष्य ठीक है कि नहीं, मतलब उसमें कितनी सुन्दर व्यवस्था की है, ये आप देखिए।

ईड़ा और पिंगला ये दो नाड़ियां आप में हैं। इसमें एक महाकाली और एक महासरस्वती है। महाकाली से महासरस्वती निकली है। महासरस्वती क्रियाशक्ति है। पहली इच्छाशक्ति है और दूसरी क्रियाशक्ति है। इन दोनों शक्तियों से आपने जो कुछ इस जन्म में किया है पूर्वजन्मों में किया है, जो कुछ सुकृत है और दुष्कृत हैं

उन सबका ब्यौरा ये श्री गणेश वहां बैठकर देखते हैं। वे देखते हैं इस मनुष्य ने कितना पुण्य किया है। अब पुण्य क्या है, ये तो आजकल के मॉडर्न लोगों को मालूम नहीं और उस बारे में उन्हें कोई मतलब नहीं। लोगों को लगता है इसमें क्या रखा है? पुण्य क्या है, कितना है? अगर पाप-पुण्य की भावना ही नहीं है तो पाप और उसका क्षालन ये बातें समझाने का कोई मतलब ही नहीं है। मनुष्य में पाप और पुण्य भाव है, जानवरों में नहीं है। जानवरों में बहुत से भाव नहीं है। अब देखिए किसी जानवर को आप गोबर में से ले जाओ या गन्दगी में से ले जाओ उसे बदबू नहीं आती। उसे सौंदर्य क्या है ये भी नहीं मालूम। मनुष्य बनते ही आपको पाप-पुण्य का विचार आता है। आप जानते हैं ये पाप है, ये गलत है इसे नहीं करना है। ये पुण्य है इसे करना चाहिए। पाप-पुण्य का न्याय आप नहीं करते, आप में बैठे श्री गणेश इसका हिसाब करते हैं। प्रत्येक मनुष्य में श्री गणेश का स्थान प्रोस्टेट ग्लैंड (Prostate gland) के पास है, उसे हम मूलाधार चक्र कहते हैं। त्रिकोणाकार अस्थि को मूलाधार कहा है। वहां कुण्डलिनी मां बैठी हैं। उस त्रिकोणाकार अस्थि के नीचे श्री गणेश उनके मान की रक्षा करते हैं। अब आपको मालूम होगा श्री गणेश की स्थापना श्री गौरी ने कैसे की थी। उनकी शादी हुई थी पर अभी पति से भेंट नहीं हुई थी। उस समय वह नहाने गयीं और अपना (बदन का) मैल जो था उससे श्री गणेश बनाये। अब देखिए हाथ में अगर चैतन्य लहरें (vibrations) हैं तो सारे शरीर की भी चैतन्य लहरें होंगी तो वह चैतन्य गौरी माता ने मैल में ले लिया तो वह मैल भी चैतन्यमय होगा और उसी मैल का उन्होंने श्री गणेश बनाया। उसे अपने स्नानघर के बाहर रखा। अब देखिए सामने नहीं रखा, क्योंकि स्नानघर से सारी गन्दगी बहकर बाहर आती है। अपने यहां बहुत से लोगों को मालूम है। ये जो स्नानघर का बहता पानी है उसमें लोग अरबी के पत्ते व कभी-कभी कमल के फूल उगाते हैं और वहां पर ही वे अच्छे उगते हैं। ठीक इसी तरह श्री गणेश का है मतलब सबसे गन्दगी का जो हिस्सा है उस हिस्से के ऊपर ये कमल है और वह अपने सुगंध से उस सारी गन्दगी को सुगंधित करता है। ये जो उनकी शक्ति है वह आपके जीवन में भी आपकी बहुत मदद करती है। अपने में जो कुछ गन्दगी दिखाई देती है वह इस श्री गणेश तत्व के कारण दूर होती है। अब इस श्री गणेश तत्व से कुण्डलिनी का, माने श्री गौरी का, पहले पूजन करना पड़ता है। मतलब अपने में अबोधिता होनी चाहिए। आपको आश्चर्य होगा, जब अपनी कुण्डलिनी का जागरण होता है तब श्री गणेश तत्व की सुगंध सारे शरीर में फैलती है।

बहुतों की, विशेषत: सहजयोगियों की, जिस समय कुण्डलिनी का जागरण होता है उस समय खुशबू आती है। क्योंकि श्री गणेश तत्व पृथ्वी तत्व से बना है। इस श्री महागणेश ने पृथ्वी बनायी है। तो अपने में जो श्री गणेश हैं, वे भी पृथ्वी तत्व से बने हैं। अब आपको मालूम है कि सारे सुगंध पृथ्वी में से आते हैं। सारे फूलों के सुगंध पृथ्वी में से आते हैं। इसलिए कुण्डलिनी का जागरण होते समय बहुतों को अनेक प्रकार के सुगंध आते हैं। इतना ही नहीं बहुत से सहजयोगी तो मुझे कहते हैं, श्री माताजी आपकी याद आते ही अत्यंत खुशबू आती है। बहुतों को भ्रम होता है कि श्री माताजी कुछ इत्र वगैरा लगाती हैं। पर ऐसा नहीं है। अगर आप में श्री गणेश तत्व जागृत हो तो अंदर से खुशबू आती है। तरह-तरह के सुगंध मनुष्य के अंदर से आती है। परन्तु कुछ दुनिया में ऐसे भी लोग हैं और अपने आपको साधु-सन्त कहलवाते हैं और उन्हें सुगंध अच्छा नहीं लगता। अपने आपको परमेश्वर कहलाते हैं और उन्हें सुगंध अच्छा नहीं लगता। अपने आपको परमेश्वर कहलाते हैं और उन्हें सुगंध से नफरत है। अपने यहाँ किसी भी देवता का वर्णन आपने पढ़ा होगा, विशेषत: श्री गणेश तो सुगंधप्रिय हैं, वे कुसुमप्रिय भी हैं, और कमलप्रिय है। वैसे ही श्री विष्णु के वर्णनों में लिखा है श्री देवी के वर्णनों में लिखा है। इसका मतलब है कि जिन लोगों को सुगंध प्रिय नहीं व जिनको सुगंध अच्छा नहीं लगता उनमें कुछ भयंकर दोष है। वे परमेश्वर के विरोधी में है, उनमें परमेश्वरी शक्ति नहीं है। जिस मनुष्य को सुगंध बिल्कुल अच्छा नहीं लगता उसमें कुछ भयंकर दोष है और परमेश्वर के विरोधी तत्व बैठे हुए हैं, यह निश्चित है। क्योंकि सुगंध पृथ्वी तत्व का एक महान् तत्व है। योगभाषा में उसके अनेक नाम है। परन्तु कहना ये है कि जो कुछ पंचमहातत्व है और उनके पहले उनके जो प्राणतत्व है, उस प्राणतत्व में आद्य या सर्वप्रथम सुगंध है। उसी तत्व से हमारी पृथ्वी भी बनी है। उसी प्राणतत्व से बना हुआ श्री गणेश है। तो श्री गणेश का पूजन करते समय प्रथम हमें अपने आप को सुगंधित करना चाहिए। मतलब यह कि अपना जीवन अति सूक्ष्मता में सुगंधित होना चाहिए। बाह्यत: मनुष्य जितना दुष्ट होगा, बुरा होगा उतना ही वह दुर्गन्धी होता है। हमारे सहजयोग के हिसाब से ऐसा मनुष्य दुर्गंधी है। ऊपर से उसने खुशबू लगायी होगी तो भी वह मनुष्य सुगंधित नहीं है। सुगंध ऐसा होना चाहिए कि मनुष्य आकर्षक लगे। किसी मनुष्य के पास जाकर खड़े होने पर अगर उस मनुष्य के प्रति सुप्रसन्नता और पवित्रता लगे तो वह मनुष्य सच में सुगंधित है। दूसरा मनुष्य जिसमें से लालसा और गन्दगी बाहर वह रही है उस मनुष्य के पास जाकर खड़े होने से गन्दा लगेगा। परन्तु ऐसे मनुष्य को देखकर कुछ लोगों को अच्छा भी लगता होगा। यह उनके दोष पर निर्भर है। वे लोग श्री गणेश तत्व के नहीं हैं।

श्री गणेश तत्व वाला मनुष्य अत्यंत सात्विक होता है। उस मनुष्य में एक तरह का विशेष आकर्षण होता है। उस आकर्षकता में इतनी पवित्रता होती है कि वह आकर्षकता ही मनुष्य को सुखी रखती है। अब आकर्षकता की कल्पनाएं भी विक्षिप्त हो गयी हैं। इसका कारण है कि मनुष्य में श्री गणेश तत्व रहा नहीं हैं। आकर्षकता भी श्री गणेश तत्व पर निर्भर है। सहज ही है। जहां आकर्षकता (श्री गणेश तत्व) है वही आकर्षकता महसूस होगी। परन्तु आजकल के युग में अगर आपने पवित्रता की बातें कीं तो आप में जो बड़े-बड़े

बुद्धिजीवी लोग हैं, उन्हें यह बिल्कुल मान्य नहीं होगा। उन्हें लगता है ये सब पुरानी कल्पनाएं हैं। और इसी पुरानी कल्पनाओं से कहते हैं यह मत करो, वह मत करो, ऐसा मत करो वैसा मत करो, ऐसा नहीं करना चाहिए, वैसा नहीं करना चाहिए। इस तरह से आप लोगों को बांधते हैं ऐसी बातों से फिर मनुष्य बुरे मार्ग की तरफ बढ़ता है। कहने का मतलब है कि मनुष्य में पवित्रता मां-बाप की संगति से आती है। प्रथमत: अगर मां पवित्र नहीं होगी तो बेटे का पवित्र रहना बहुत मुश्किल है। परन्तु बहुत अच्छा जीव भी अत्यंत बुरी औरत के यहां जन्म लेता है और वह इसीलिए पैदा होता है कि उस औरत का उद्धार हो जाए। और वह खुद बहुत बड़ा जीव होता है। विशेष पुण्यवान आत्मा होती है। मतलब जैसे गन्दगी में कमल का फूलना वैसे ही वह मनुष्य जन्म लेता है। ऐसा है, पर ये अपवादात्मक है? निसर्गत: अगर मां पवित्र होगी तो लड़का या लड़की पवित्र होती है, या सहजता में उन्हें पवित्रता प्राप्त होती है।

पवित्रता में सर्वप्रथम बात है कि उसे अपने पति के लिए निष्ठा होनी जरूरी है। अगर श्री पार्वती में श्री शंकर के लिए निष्ठा नहीं तो उसमें क्या कोई अर्थ है? श्री पार्वती का श्री शंकर के बिना कोई अर्थ नहीं। वह श्री शंकर से ज्यादा शक्तिशाली हैं। परन्तु वह शक्ति श्री शंकर की है। श्री सदाशिव की वह शक्ति प्रथम शंकर की शरण गयी है। परन्तु वह उनकी शक्ति है। परमेश्वर की व अन्य देवताओं की बातें अलग होती हैं और मनुष्य की अलग। मनुष्य की समझ में ये नहीं आएगा। उन्हें समझ में नहीं आएगा, पति और पत्नी में इतनी एकता है कि उनमें दो हिस्से नहीं है। नहीं जैसे चंद्र और चंद्रिका या सूर्य और सूर्य की किरणें, वैसी उनमें एकता मनुष्य के समझ में नहीं आएगा? मनुष्य को लगता है पति और पत्नी में लड़ाइयां होनी चाहिए। अगर लड़ाइयां नहीं हुई तो ये कोई अजीब बात है। एक तरह का एक अत्यंत पवित्र बंधन पति व पत्नी में या कहना चाहिए श्री सदाशिव व श्री पार्वती में है और अपना पुत्र श्री गणेश श्री पार्वती ने केवल अपनी पवित्रता और संकल्प से पैदा किया है। कितनी महानता है उनकी पवित्रता में! उन्होंने यह संकल्प से सिद्ध किया हुआ है। सहजयोग में हमने हमारा जो कुछ भी पुण्य है वह लगाया है। उससे जितने लोगों को आत्म साक्षात्कार देना संभव है उतनों को देना, यही एक हमारे जीवन का अर्थ है। फिर भी कोई हमें "श्री माताजी देवी हैं" कहता है तो वह पसन्द नहीं। ऐसा कुछ नहीं कहना। क्यों कहना है? लोगों को यह पसन्द नहीं है। क्या जरूरत है यह कहने की? उन्हें गुस्सा आएगा। अपने से कोई ऊंचा है, ऐसा कहते ही मनुष्य को गुस्सा आता है। परन्तु धूर्त लोगों ने अपने-आप को देवता या भगवान कहलवाया तो लोग उनके सामने माथा टेकते हैं। उन्हें वे एकदम भगवान मानने लगते हैं, क्योंकि वे बेवकूफ बनाने की प्रेतविद्या, भूतविद्या व शमशानविद्या, संमोहनविद्या काम में लाते हैं। उससे मनुष्य का दिमाग काम नहीं करता। उन्हें बिल्कुल नंगा बनाकर नचाया या पैसे लूट कर दिवालिया बनाया तो भी चलेगा, पर वे उन्हें भगवान कहेंगे। परन्तु जो सत्य है उसे पाना होता है। और अगर वो आप पा लेंगे तो आप समझेंगे उसमें कितना अर्थ है और क्यों ऐसा कहना पड़ता है? वह मैं आज आपको बताने जा रहीं हूं। मतलब श्री गणेश को अगर आपने भगवान नहीं माना तो नहीं चलेगा। परन्तु वह प्रत्यक्ष में नहीं दिखाई देता। इसलिए लोगों की समझ में नहीं आता। एक डॉक्टर भी घर में श्री गणेश की फोटो रखेगा, उसे कुंकुम लगाएगा, टीका लगाएगा। परन्तु उसे अगर आपने बताया कि श्री गणेशतत्व आपके शरीर में स्थित है और उससे आपको कितने शारीरिक फायदे होंगे तो वह ये कभी भी मानने को तैयार नहीं। परन्तु उन्हें मैंने कहा, आप श्री गणेश की ये फोटो उतारकर रख दीजिए, तो ये भी वे मानेंगे नहीं। लेकिन मैंने ये कहा श्री गणेश तत्व के बिना आप हिल भी नहीं सकते तो वे ये बात मानने को तैयार नहीं हैं। अब देवत्व आप नहीं मानते परन्तु सहजयोग में श्री गणेश को मानना ही पड़ेगा। उसका कारण है कि आपको कोई बीमारी या परेशानी इस गणेश तत्व के कारण हुई होगी तो आपको श्री गणेश को ही भजना पड़ेगा। **मतलब कि आपमें स्थित श्री गणेश नाराज होते हैं तो आपका श्री गणेश तत्व खराब होता है और आपको प्रोस्टेट ग्लैंड की तकलीफ व युटरस् का कैंसर वगैरा होता है।** श्री गणेश तत्व को अगर आपने ठीक से नहीं रखा, मतलब अपने पुत्र से अगर ठीक से व्यवहार नहीं किया, माने आपमें मातृत्वता की भावना नहीं हो तो इन सब बातों के कारण युटरस का कैन्सर होता है। श्री गणेश तत्व के कुछ बहुत पवित्र नियम है। उनका अगर आपने ठीक से पालन नहीं किया तो आपको ऐसी तकलीफें होती हैं। परन्तु इन तकलीफों का संबंध डॉक्टर श्री गणेश तत्व के साथ नहीं जान सकते। पर उनका संबंध श्री गणेश के ही साथ है। वे यहां तक ही जानते हैं कि प्रोस्टेट ग्लैंड खराब है या ज्यादा से ज्यादा पेलव्हिक प्लेक्सस (pelvic plexus) खराब हो गया है। परन्तु इसके पीछे जो परमात्मा का हाथ है, मतलब अंतर ज्ञान का या यों कहिए परोक्ष ज्ञान से जो जाना जाता है, जो ऊपरी ज्ञान से परे है, जो आपको दिखाई नहीं देता, उसके लिए आपके पास अभी आँखें नहीं हैं, संवेदना नहीं है, अभी तक आपकी परिपूर्ति नहीं हुई है, तो आप कैसे समझोगे कि ये तकलीफें श्री गणेश तत्व खराब होने से हो गई हैं? श्री गणेश हम से नाराज हैं तो उन्हें प्रसन्न किये बिना हम सहजयोग नहीं पा सकते। ऐसा कहते ही वे डॉक्टर एक दम बिगड़ गये। 'हम श्री गणेश को मानने को तैयार नहीं, हम केवल विज्ञान को ही मानते हैं।' फिर देख लीजिए आपका कैन्सर श्री गणेश तत्व को माने वगैर ठीक नहीं होने वाला। श्री गणेश तत्व खराब होने से कैन्सर होता है। श्री गणेश तत्व हर जगह प्रत्येक अणु-रेणु (कण-कण) में सब तरफ संतुलन देखते हैं। **हम कैन्सर ठीक करते हैं, किया है और करेंगे। पर ये हमारा व्यवसाय नहीं है।** तो ये श्री गणेश तत्व कितना महत्वपूर्ण है, उसे जितनी महत्ता दें उतनी कम है।

ये अत्यन्त सुन्दर चार पंखुड़ियों से बना श्री गणेश तत्व हम

में है। इस चार पंखुड़ियों के बने हुए गणेश तत्व में बीचोंबीच बैठे गणेश हमारे शरीर में हैं। मतलब अपने शरीर में उनके एक-एक अंग है। उनके चार अंग होते हैं। उसमें से पहला अंग मानसिक अंग। मानसिक अंग का जो बीज है वह श्री गणेश तत्व का है। इच्छाशक्ति, माने जो बायें तरफ की शक्ति है, जो अपने में सारी भावनाएं पैदा करती है, उन भावनाओं के जड़ में श्री गणेश बैठे हैं। मतलब मनुष्य पागल है, उसका श्री गणेश तत्व खराब है। इसका मतलब ये नहीं कि वह मनुष्य अपवित्र है। परन्तु उसकी पवित्रता को किसी ठेस पहुँचाने पर उसे ऐसा होता है। किसी मनुष्य को अगर दूसरे लोगों ने बहुत सताया तो भी उसका श्री गणेश तत्व खराब हो सकता है। क्योंकि उसे लगता है अगर श्री गणेश हैं तो इस मनुष्य को वे मार क्यों नहीं देते? इस तरह के सवाल उसके मनमें आने पर धीरे-धीरे उसका बायां भाग खराब होने लगता। बायां भाग खराब होने से वह पागल बनने लगता। अब देखिए गणेश तत्व का कितना संतुलन है। अगर आपने बहुत परिश्रम किया और तकलीफें उठायीं, बुद्धि से बहुत मेहनत करी और आगे का माने भविष्य का बहुत विचार किया (आजकल के लोगों में एक बीमारी लगी हुई है सोचने की) और उसमें कहीं संतुलन नहीं रहा तो आपका बायां भाग एकदम खराब हो जाता है। दायां भाग भी सूख जाता है। बायीं तरफ की सभी बीमारियां हैं गणेश तत्व खराब होने के कारण होती हैं। उसमे डायबिटीस, ये बीमारी श्री गणेश तत्व खराब होने के कारण होती है। श्री गणेश की जो संतुलन व्यवस्था है, वे यह बीमारी ठीक करने के लिए लगाते हैं। ऐसा मनुष्य काम कम करता है। उसी प्रकार हृदयविकार होता है। क्योंकि श्री गणेश जी का स्वस्तिक अपने शरीर में बना है वह दो बाती की तरह दिखने वाली शक्तियाँ एकाकार होती हैं। एक बायीं तरफ की शक्ति महाकाली की इस तरह आती है व दूसरी दायीं तरफ की शक्ति महासरस्वती की। बीचों-बीच उनका मिलन बिंदु महालक्ष्मी शक्ति के बीच की खड़ी रेखा में है। बायें तरफ की सिपथेटिक नर्वस सिस्टम जो है वह महाकाली की शक्ति से चलती है। माने इच्छाशक्ति से चालित है। अब किसी मनुष्य की इच्छा के विरोध में बहुत कार्य हुआ और उसकी एक भी इच्छा पूरी नहीं हुई तो वह पागल हो जाता है। नहीं तो उसे हार्टअटेक (दिल का दौरा) आता है। मतलब ऊपर कही गयी सारी बीमारियां अति सोचने से होती है। और उसका संतुलन श्री गणेश ला देते हैं। ये श्री गणेश का काम है। आपने देखा होगा कि लोग कितनी भी जल्दी में हों तब भी श्री गणेश का मन्दिर देखते ही नमस्कार कर लेंगे। सिद्धिविनायक के मन्दिर में भी कितनी बड़ी लाइन लगती है। परन्तु उससे कोई लाभ है? वह करके तभी फायदा होगा जब आपमें आत्मसाक्षात्कार आया होगा। अगर आप में आत्मसाक्षात्कार आया नहीं तो आपका परमात्मा से कनेक्शन (सम्बन्ध) नहीं होगा। कौन झूठा गुरू है, कौन सच्चा गुरू है, ये भी आपके समझ में नहीं आएगा। मतलब आपमें ये जो बीज श्री गणेश का है वह कुण्डलिनी उठने पर उसको सर्वप्रथम समझा देते हैं और ये कुण्डलिनी दिखा देती है उस मनुष्य को कौन सी तकलीफ है।

अगर किसी को Liver (जिगर) की तकलीफ होगी तो वह (कुण्डलिनी) वहाँ जाकर धड़केगी आपकी आँखों से दिखाई देगा। अगर आपका नाभिचक्र पकड़ा हुआ होगा या नाभिचक्र पर पकड़ आयी होगी तो नाभिचक्र के पास कुण्डलिनी जब उठेगी तब आप अपनी आँखों से उसका स्पंदन देख सकते हैं। किसी व्यक्ति को अगर भूतबाधा होगी तो वह पूरी पीठ पर जैसे धप्धप् करेगी। आपको आश्चर्य होगा! हमने उस पर फिल्म ली है। कुण्डलिनी हमसे जागृत होती है इसमें कोई शक नहीं है। कुण्डलिनी उठती है परन्तु अगर श्री गणेश तत्व खराब होगा तो श्री गणेश उसे फिर नीचे खींच लेते हैं। वह ऊपर आयी हुई भी वापस नीचे आ जाएगी। मतलब सर्वप्रथम आपको श्री गणेशतत्व सुधारना पड़ेगा।

कुण्डलिनी जागृत होने पर हाथ में ठंडी हवा आनी चाहिए। कुछ लोगों में बहुत गरमी होती है। वह श्री गणेश तत्व के खराब होने से होती है। दिल्ली के पास रहने वाले एक आदमी ने मुझे तार दिया था कि किसी विकृति के कारण वह यहाँ से वहाँ इतना भागता था कि जैसे उसे हजार बिच्छू काट रहे हैं। वह कहता था श्री माता जी महीना हुआ मुझे इस तकलीफ ने ऐसा सताया है, जैसे बिच्छू काट रहे हैं। तब मैंने कहा दो मिनट बैठिए। उनसे बिल्कुल बैठा नहीं जा रहा था। तब मैंने उनके पास जाकर उन्हें शांत किया। पाँच मिनट में। इसका कारण पृथ्वी माता, जमीन पर खड़े थे। आप आज जमीन पर बैठे हो मुझे बहुत खुशी हुई। आज बिल्कुल सभी बातें मिल गयी हैं। उस पृथ्वी माता ने उनकी सारी गरमी खींच ली। अब आप कैसे पृथ्वी माता से कहेंगे कि हे पृथ्वी माता! आप हमारी सारी गर्मी निकाल लीजिए। वह नहीं निकालेगी, पर सहजयोगी की गर्मी वह निकाल लेगी। उसका कारण है कि एक बार श्री गणेश तत्व आपमें जागृत होने पर वही तत्व इस पृथ्वी में होने के कारण, उसी तत्व पर यह पृथ्वी चलने के कारण, वह सब बाधाएं खींच लेती है। और इसीलिए अपने में यह तत्व जागृत रखना चाहिए और वह पवित्र रखना चाहिए। इतना नहीं सहजयोग में पवित्रता की मूर्ति, पवित्रता के बादशाह श्री गणेश को तीन बार नमस्कार करके उसका पावित्र्य अपने में लाने का हमें प्रयत्न करना चाहिए।

अब जो बातें करनी नहीं चाहिए और जो लोग कहते हैं उनका बहुत बोलबाला हुआ है। और इसी तरह बहुत से तान्त्रिकों ने भी हमारे देश में आक्रमण किया है। उनका आक्रमण राजकीय नहीं है, फिर भी वह इतना अनैतिक और इतना घातक है कि उस की तकलीफें हम आज उठा रहे हैं। इन तांत्रिकों ने सारी गंदगी फैला रखी है। इसका कारण ये है कि उस समय के राजा लोग बहुत ही विलासी, लापरवाह थे। इस तरह के लोगों के पैसों पर तान्त्रिकों ने मजा उड़ाया। ज्यादा पैसा होने से यही होता है। सबसे पहले श्री गणेश तत्व खराब हो जाता है। पैसा ज्यादा होने से वह पहले श्री गणेश तत्व के पीछे पड़ता

है। जवान लड़कियों के पीछे पड़ना, छोटी-अबोध लड़कियों को सताना, ये सब श्री गणेश तत्व खोने की निशानियाँ हैं। ये तान्त्रिक लोग भी यही करते हैं। कोई अबोध नारी दिखायी दी कि उसे सताना। कोई भी अबोध मनुष्य दिखायी देने पर उसे मारना। अपनी भी अबोधिता खत्म करना। इससे पता चलता है कि ये विलासी लोग परमात्मा का सामीप्य नहीं पा सकते। इसी प्रकार अनेक कर्म काण्डी लोग जिन्होंने परमेश्वर के पास जाने का बहुत प्रयत्न किया, फिर भी परमेश्वर उन्हें नहीं प्राप्त हुए। अपने में विलासिता की तरह कर्मकाण्ड भी बहुत है। महाराष्ट्र में तो कर्मकाण्ड कुछ ज्यादा ही है। मतलब सुबह 17 बार हाथ धोने जरूरी है। किसने बताया पता नहीं! किसी औरत ने 16 बार हाथ धोये 17 बार नहीं धोये तो उसे नींद नहीं आएगी। कुछ तो बत्तियां (बाती) बनाना ही चाहिए (महाराष्ट्र में दीपक की बत्तियाँ बनाने का काम बूढ़ी औरत बहुत करती हैं।) कुछ लाख जप होना ही चाहिए। परन्तु जो करना जरूरी है, वह उनसे नहीं होता। मतलब बत्तियाँ बनाते समय अपनी बहुओं की या लड़कियों की बुराइयां करना; इस तरह की अजीब बातें हमारे यहां है। तो कहना है कि सहजयोग इस तरह के लोगों में नहीं फलने वाला।

''ये-या गबाळ्या वे काम नोहे'' (ऐसे ऐरे-गैरों का ये काम नहीं) श्री रामदास जी ने हमारे काम की पूरी पूर्व-पीठिका बनायी है। अगर आपने 'दासबोध' पढ़ा है तो आपको कुछ बताने की जरूरत नहीं। ('दासबोध' गुरू रामदास जी का लिखा हुआ मराठी ग्रंथ है)। उन्होंने ये सारा बताया हुआ है और वह सच है। **जिस मनुरूय में उतना धैर्य है और जो सचमुच उतनी ऊँचाई का होगा, उसी मनुष्य को सहजयोग प्राप्त होगा। सबको नहीं होगा। मतलब चैतन्य लहरियाँ आएगी, पार भी होंगे, पर उसमें फलने वाले थोड़े हैं।** हमने हज़ारों लोगों को जागृति दी। क्योंकि लोगों की नज़र ही उल्टी तरफ जाती है तो हमें ही जागृत करना पड़ेगा। और वैसा ही समय आया है। अगर अब सहजयोग नहीं हुआ तो ये परमेश्वर के घर का न्याय है ये आपको समझ लेना चाहिए। अब ऐसा कुछ नहीं चलेगा अभी आपको पार होना पड़ेगा। आगे जो कुछ होने वाला है वहां पर फिर आपको अवसर मिलने वाला नहीं। उस समय 'एकादशरुद्र' आने वाले हैं। एक ही रुद्र इस पूरे विश्व को खत्म करने के लिए काफी है और एकादश माने ग्यारह। जब ग्यारह रुद्र आएंगे तब आप उनकी कल्पना नहीं कर सकते। वे पूरी तरह खत्म कर देंगे। उससे पहले जिन लोगों को चुनना है वह हो जाएगा। वह न्याय अभी सहजयोग से होगा। और लोगों को उसे पाना चाहिए। पर ज़्यादातर लोग छोटी-छोटी बातों को लेकर बैठ जाते हैं और चले जाते हैं। अगर हम कुछ पैसे लेते और पाखंड रचते तो लोगों को ज्यादा पसन्द आता।

मतलब मनुष्य के अहंकार को बढ़ावा दिया जाए तो मनुष्य आने के लिए तैयार है। परंतु सहजयोग में तो ये सब सहज घटित होता है। उसे पैसे की जरूरत नहीं है। एक फूल से जैसे फल बनता है, वैसे ही आपका भी होने वाला है। जिस तरह आपको नाक, आँखें, मुंह और ये स्थिति मिली है, उसी तरह ''अतिमानव स्थिति'' परमेश्वर ही आपको देने वाले हैं, ये उनका दान है। वह आपको जो दे रहे हैं उसमें आप कुछ नहीं बोल सकते। ये भूमिका मानने को मनुष्य बिल्कुल तैयार नहीं है। उसे इतना अहंकार हो गया है कि उसे लगता है मैं जब तक सर के बल दस दिन खड़ा नहीं होऊंगा तब तक मुझे कुछ मिलने वाला नहीं है। पहले ये समझना चाहिए कि जिस परमात्मा ने ये अनन्त चीजें बनायी हैं उसमें से हम एक भी नहीं तैयार कर सकते। कोई भी जीवत कार्य आप नहीं करने वाले। परन्तु इतना ही होता है कि पार होने पर मनुष्य को मनुष्य योनि में ही मालूम होता है कि मैं पार हो गया हूँ। ये पहली बात है। दूसरी उसमें वह शक्ति आती है जिससे वह दूसरों को पार करा सकता है। उसमें से वह शक्ति प्रवाहित होने लगती है। वह एक-एक करके अनेक हो सकता है। मतलब उसे देवत्व प्राप्त होता है। वह स्वयं देवत्व में उतरता है। अब ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने अच्छे-अच्छे गुरु बनाये हैं। गुरु बड़े-बड़े हैं, पर उनके शिष्यों में मैंने देवत्व आया हुआ नहीं देखा। उनमें परिवर्तन नहीं हुआ। वे जहां पर हैं वहीं पर हैं। क्योंकि, शिष्य भी हुए तो भय के कारण, या श्रद्धा से वे पूरी तरह घटित नहीं हुए हैं। वह घटना घटित नहीं हुई है। वह परिवर्तन अंदर से नहीं आया है। मतलब इनकी अगर जड़ें ही ठीक करनी हैं या फूल का फल बनाना है तो पूर्णत: बदलना पड़ता है। ऐसी स्थिति अभी किसी की नहीं आयी है। तो कहना ये है कि उसके लिए अपना श्री गणेश तत्व जागृत होना चाहिए। उसे आपको सर्वप्रथम संभालना चाहिए। आजकल के जमाने में हम तरह-तरह के सिनेमा, नाटक देखते हैं, विज्ञापन देखते हैं और पढ़ते हैं। कुछ विज्ञापन तो पूरी तरह अश्लीलता से भरे रहते हैं और पूरी तरह की उनमें अपवित्रता है। और ये जो शहरों में हुआ है वही अब गांवों में भी हो रहा है। इस अपवित्रता से उनका सर्वनाश हुआ है। उससे कुछ लोग इतने दु:खी हैं कि अब रात-दिन उनकी योजना बन रही है कि हम किस प्रकार से आत्महत्या करें! यह उनकी स्थिति है। तो आपको उस मार्ग पर चलते समय ठीक से सोचना चाहिए। उसी प्रकार रूढ़ीवादी लोगों को सोचना होगा कि हर एक पुरानी बात हम क्यों कर रहे हैं? हम मनुष्य स्थिति तक आये हैं तो हमको इसका अर्थ जानना होगा। जिन्दगीभर वही-वही बातें करने में कोई अर्थ नहीं है। **जैसे-जैसे लोग परमेश्वर को तत्वत: छोड़ रहे हैं वैसे-वैसे वे केवल परमेश्वर के नाम से चिपके हुए हैं। सुबह उठकर भगवान को दिया दिखाया, घंटी बजायी कि हो गया काम पूरा। इस तरह का बर्ताव करने वाले लोग हैं। उन्हें समझ लेना होगा कि इस तरह की फिजूल की बातों से परमात्मा कदापि प्राप्त नहीं होंगे। परमात्मा आप में है। उन्हें जागृत करना पड़ेगा और हमेशा जागृत रखना पड़ेगा, और दूसरों में वह जागृत करना चाहिए।** केवल कुण्डलिनी मां है और श्री गणेश उनकी कृति हैं श्री गणेश ही उनकी

जड़ है।

आपमें जो कुण्डलिनी है वह केवल श्री गणेश के हाथ पर घूमती हैं। श्री गणेश के हाथ में क्या है ये आपने देखा होगा। उनके पेट पर एक सर्प बंधा रहता है या श्री गणेश के हाथ में काफी बार साँप होता है। यों कहा जाए तो श्री गणेश के चार ही हाथ हैं, परन्तु सच कहा जाए तो उनके अनंत हाथ हैं। जिस हाथ में सर्प दिखाते हैं वही ये कुण्डलिनी है। उसी प्रकार हमारे सहजयोगियों का है। आश्चर्य की बात ये है कि सहजयोगी ये जो पार होते हैं उनके हाथ पर कुण्डलिनी चढ़ती है। उनके हाथ ऊपर करते ही दूसरों की कुण्डलिनी ऊपर उठती है। मतलब अब छोटा सा सहजयोगी लड़का भी कुण्डलिनी ऊपर उठाता है। दो-दो साल के बच्चे, पांच-छः साल के बच्चे आपको बताएंगे कि आपकी कुण्डलिनी कहां पर अटकी है, उसकी क्या स्थिति है। मेरी नाती सात-आठ महीने की थीं, तब ये श्री मोदी मेरे यहां आये थे, और उनका आज्ञा-चक्र पकड़ा हुआ था तो बातें करते करते उनकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह घुटनों पर चलते चलते अपने हाथ में कुमकुम की डिबिया लेकर आयीं और उनके माथे पर कुमकुम् लगाया और उनका आज्ञाचक्र उसने छुड़ाया। हर वक्त उसको यही अच्छा लगता है। यही मैंने अपने और सहजयोगियों के बच्चों में देखा है। कितने लोग जन्म से ही पार हैं। जन्म से पार होना कितनी बड़ी बात है। परमेश्वर ने अब शुरूआत की है। मतलब साक्षात जन्म से ही पार अब संसार में पैदा हो रहे हैं। उसके लिए सन्यास लेने की जरूरत नहीं है। जिसे संन्यास लेने की जरूरत लगती है समझो वे अभी तक पार नहीं हुए हैं। पार होने से संन्यास बाहर से लेने की जरूरत नही है। यदि अन्दर से संन्यास लिया है तो उसका प्रदर्शन व विज्ञापन करने की क्या आवश्यकता है? अगर आप पुरुष हैं तो आप के चेहरे को देखकर ही लोग कहेंगे ये पुरुष है या स्त्री है। उसका आप विज्ञापन लगाकर तो नहीं घूमते कि हम पुरुष हैं, हम स्त्री हैं। उसी तरह ये हो गया। आप मन से सन्यासी हैं तो बहुत कुछ होने पर भी अंदर से इस शरीर में ऐहिक, पारमाथिक सुख, समाधान वगैरा सहजयोग में सहजता से मिलता है। उसके लिए संन्यास वगैरा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। संसार से (प्रपंच से) जाने की भी आवश्यकता नहीं है। श्री शंकर जी की जो स्थिति है या कहिए श्री शंकर जी ने जो स्थिति प्राप्त की है उसके लिए उन्हें भी श्री गणेश निर्माण करने पड़े। उसी प्रकार आपको भी श्री गणेश निर्माण करने होंगे।

पश्चिमात्य देशों में नयी-नयी मूर्खता पूर्ण कल्पनाएं बनाकर उन्होंने उनके जीवन से अबोधिता खत्म कर दी है। वे कहते हैं, बच्चों को दुबला-पतला रहना है। पुष्ट नहीं होना है क्योंकि उनके आदर्श सिनेमा के अभिनेता, अभिनेत्रियां हैं। वहाँ पर सभी तरह की सुख-सुविधा होते हुए भी वहाँ के लोग बच्चों को प्यार नहीं देते। छोटा बच्चा जन्मने पर उसकी मां उसकी हिन्दुस्तानी मां की तरह परवरिश नहीं करती, उसे एक कमरे में डाल देती है। इसीलिए बचपन में वहाँ के बच्चों को मां की ममता व प्यार नहीं मिलता।

मजे की बात देखिए वहाँ की भाषा में 'दूडदूड धावणे' (छोटे बच्चे का मंदगति से क्रीड़ा मय आमोदकारी भागना-दौड़ना) इस क्रिया का प्रतिशब्द ही नहीं है। छोटे बच्चों को वे कभी भागते दौड़ते हुए देखते भी है कि नहीं, पता नहीं। यहाँ 'दूडदूड धावणे' वात्सल्य रस है। अपने यहाँ श्री कृष्ण का या श्री राम का बचपन का वर्णन पढ़ते समय आनन्द होता है। परन्तु आपको उनकी भाषा में येसु का बचपन का वर्णन कहीं नहीं मिलेगा।

श्री गणेश क्या हैं? और श्री गणेश तत्व क्या है? पवित्रता माने क्या? 'मैं ही सब कुछ हूँ', ऐसा जो समझता है उसका ये श्री गणेश तत्व नष्ट हो जाता है। परन्तु उसका एक सुन्दर उदाहरण है–सन्यास लेना और विवाह नहीं करना। घर से बाहर रहना और दूसरे किसी के साथ सम्बन्ध नहीं रखना। ये भी दूसरे ही लोग हैं। **श्री गणेश तत्व अगर आप में जागृत है तो संसार में रहकर ही आपको परमेश्वर-प्राप्ति होगी और देवत्व चाहिए तो भी संसार में रहना होगा। अगर आपने बहुत तीव्र और कठिन वैराग्य का पालन किया तो ब्रह्मर्षिपद मिल सकता है।** परन्तु मुझे ऐसा महसूस होने लगा है कि ब्रह्मर्षि भी बहुत पहुँचे हुए हैं, मैं जानती हूँ उन लोगों को, परन्तु वे अब कुछ करने को तैयार नहीं हैं, उनमें इतनी आन्तरिकता, आत्मीयता नहीं और वे इतनी मेहनत करने को भी तैयार नहीं हैं। मुझे कभी-कभी बहुत दुःख होता है। उनकी भावना है कि ये जो भक्त लोग हैं, उन भक्तों की अभी तक कुछ भी तैयारी नहीं है। पर, अगर मेहनत की तो हम तैयारी कर सकते हैं और उसे (भक्त को) आगे ला सकते हैं। बहुत बार मुझे लगता है कि ये सभी मेरी मदद के लिए अब दौड़कर आयें तो कितना अच्छा होगा। मुझे बहुत मानने वाले एक कलकत्ता के पास हैं, उनका नाम श्री ब्रह्मचारी है और वे बहुत पहुँचे हुए हैं। उन्होंने मेरे बारे में किसी अमेरिकन मनुष्य को कहा कि श्रीमाता जी अब साक्षात् आयी हैं तो हम अब उनका काम देख रहे हैं। हमें भी यही काम करना है और कुछ राक्षसों का नाश हम मनन-शक्ति से करते हैं। जब वे मेरे पास आये तो मैंने उन्हें कहा आप अमेरिका क्यों नहीं जाते? वे अमेरिका गये परन्तु वहाँ से पाँच दिनों में भाग आये और मुझे कहने लगे, मुझे ऐसे लोगों से नहीं मिलना है, वे एकदम गन्दे लोग हैं। मतलब ये ब्रह्मचारी जैसे लोग मनुष्यों में न रहने की वजह से एकदम 'माणसधाणे' (मनुष्य जिसे बदबू आये ऐसा) हुए हैं। ऐसा ही करना चाहिए। ऐसे कोई साधु-सन्त आने पर आप ज्यादा से ज्यादा उनके चरणों पर जाओगे। उन पर श्रद्धा रखोगे, उसके कारण आपकी स्थिति में सुधार आएगा। पर फिर आपके साक्षात्कार का क्या? क्योंकि उसके लिए हाथ चलाने पड़ते हैं। **बच्चे को ठीक करना है, उसे संभालना है तो माँ को गन्दगी में हाथ डालना पड़ता है। अगर वह 'गन्द-गन्द' कहने लगी तो बच्चे को कौन साफ करेगा?** और इसीलिए ये एक माँ का काम है और वही हम सहजयोग में करते हैं। आप सब उसमें

नहा लीजिए, उसका आनन्द उठाइये, यही एक माँ की इच्छा है। माँ की एक ही इच्छा होती है, अपनी शक्ति अपने बच्चे में आनी चाहिए। जब तक सामान्यजन को उसका फायदा नहीं होता, जब तक सामान्यजन उसमें से कुछ प्राप्त नहीं करते और जब तक उनको अपनी माँ की शक्तियाँ नहीं प्राप्त होती तो ऐसी माँ का क्या फायदा? ऐसी माँ न हो तो अच्छा। तो जिन को माँ या गुरु माना जाय, अपने से बड़ा माना जाए, उन्होंने अगर 'स्व' का मतलब नहीं जाना तो आपको उनके जीवन से क्या आदर्श मिलने वाला है? सहजयोग में 'स्व' का मतलब है, आपकी आत्मा।

मूलाधार चक्र पर श्रीगणेश का स्थान कैसे है, उसमें कुंडलिनी-की आवाज कैसे होती है और कुंडलिनी कैसे घूमती है, हर-एक पंखुड़ी में कितनी तरह-तरह के रंग हैं और वे किस तरह पंखुड़ी में रहते हैं और सारा शोभित करते हैं, वगैरा बहुत कुछ है। उसका सब ज्ञान आपको मिलना चाहिए। और वह मिलेगा। और उसमें से हम कुछ भी छिपा कर नहीं रखेंगे। हर-एक बात हम आपको बताने के लिए तैयार हैं। परन्तु आपको भी तो पार होकर पुरुषार्थ करना होगा। आपने पुरुषार्थ नहीं किया तो आपको कोई फायदा नहीं होने वाला।

अब पूजा में क्या करना चाहिए यह सवाल लोगों का रहता है। श्रीमाता जी श्री गणेश का पूजन कैसे करें? क्योंकि, हम 'परोक्ष विद्या' जानते हैं, जो आपको दिखाई नहीं देता, जिसे नानक जी ने 'अलख' कहा है। उस आँख से हम देखते हैं। जो हमें कहना है, सर्वप्रथम देखिये आप में पवित्रता है कि नहीं। स्नान वगैरा करना ये तो है ही, परन्तु उसका इतना महत्व नहीं है, वह अगर न भी हो तो कोई बात नहीं। एक मुसलमान भी श्रीगणेश पूजा बहुत अच्छी करता है। आपको आश्चर्य होगा, अल्जीरिया के करीब पांच सौ मुसलमान सहजयोगी हैं। जवान लड़के-लड़कियां पार हुए हैं। परन्तु उनका प्रमुख जो है, उसका नाम श्री जमेल है और वह श्री गणेश पूजा इतनी सुन्दर करता है कि देखने लायक। श्री गणेश को रखकर स्वयं उनकी सुन्दर पूजा करता है। मतलब सहजयोग में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी आते हैं और फिर उनके देव-देवता कैसे सहजयोग में हैं, वह उसमें दिखाया है। अब ये श्री गणेश तत्व आज्ञाचक्र पर आकर श्री ईसा मसीह के स्वरूप में संसार में आए हैं। देवी महात्म्य, अर्थात देवी भागवत, जो श्री मार्कण्डेय जी ने लिखा है, ये आप पढ़िये। उसमें जो श्री महाविष्णु का वर्णन है, वह आप पढ़िये। उन्होंने कहा है, श्री राधा जी ने अपना पुत्र तैयार स्वत: किया था, जिस तरह श्री पार्वती जी ने किया था। परन्तु श्री गणेश तत्व उनमें मुख्य तत्व है और उस श्री गणेश तत्व पर आधारित जो पुत्र बनाया था वह इस संसार में श्री ईसा मसीह बनकर आया। अब 'क्रिस्त' क्योंकि, राधा जी ने बनाया था इसलिए कृष्ण के नाम पर वह श्री क्रिस्त हुआ। और यशोदा है वहाँ, इसलिए येशू। और इसी तरह उन्होंने ये जो गणेश तत्व है, उसको पूर्ण रूप से अभिव्यक्त किया, वह श्री क्रिस्त स्वरूप में है। अब ये अपने आपको क्रिश्चन कहने वालों को मालूम नहीं है कि ये येशु क्रिस्त पहले श्री गणेश थे। और ये श्री गणेश तत्व का आविर्भाव है वह अब एकादशरुद्र में किस तरह आने वाला है वह मैं आपको बाद में बताऊंगी। कहने का मतलब है कि मूलाधार चक्र पर जो श्री गणेश फरसा हाथ में लेकर सबको थाड्-थाड् मारते थे वही आज्ञा चक्र पर आकर क्षमा का एक तत्व बन गये। क्षमा करना ये मनुष्य का सबसे बड़ा लक्षण है। यह एक साधन होने से उसे हाथ में तलवार भी नहीं चाहिए। केवल उन्होंने लोगों को क्षमा किया तो उन्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। इसलिए आजकल के जमाने में सहजयोग में जिसका आज्ञाचक्र पकड़ता है उसे हम इतना ही कहते हैं, ''सबको माफ करो''। और उससे कितना फायदा होता है, वह कितनों को पता है? और सहजयोगी लोगों ने उसे मान्यता दी है। देखा है, सब कुछ सहजयोग में प्रत्यक्ष में है। अगर आपने क्षमा नहीं की तो आपका आज्ञाचक्र नहीं खुलने वाला, आपका सिरदर्द नहीं जाने वाला और आपका भार भी नीचे नहीं आनेवाला। इसीलिए क्षमा करना ही चाहिए। क्योंकि जब तक नाक नहीं पकड़ो तब तक मनुष्य कोई बात मानने के लिए राजी नहीं है। इसीलिए ये सभी बीमारियाँ आयी है, ऐसा मुझे लगने लगा है। क्योंकि, कितना भी मनुष्य को समझाओ फिर भी वह एक पर एक अपनी बुद्धि चलाता है। इसका मतलब है आपको अभी अपने आपका अर्थ नहीं मालूम हुआ है। आपका यन्त्र जुड़ा नहीं है। पहले उसे जोड़ लीजिए। पहले आत्म-साक्षात्कार पा लीजिए, यही हमारा कहना है। उसमें अपनी मत चलाइए। जो विचारों से, पुस्तकें पढ़कर नहीं होता, वह अन्दर से होना चाहिए। ये घटना घटित होनी चाहिए। कभी-कभी इतने महामूर्ख लोग होते हैं, विशेषत: शहरों में, गांवों में नहीं, वे कहते हैं, अजी हमारा तो कुण्डलिनी जागरण हुआ ही नहीं है। देखिए हम कैसे? मतलब बहुत अच्छे हैं आप। क्या कहने? **अगर आपका कुण्डलिनी जागरण नहीं हुआ है तो आप में कोई बहुत बड़ा दोष है-शारीरिक हो, मानसिक हो, बौद्धिक हो, उसे निकलवा लीजिए। वह कुछ अच्छा नहीं है। साफ होना पड़ेगा। साफ होने के बाद ही आनन्द आने वाला है। यह जानना होगा। फिर सब कुछ ठीक होगा।**

अब जो अहंकार का भाव है वह श्री गणेश जी के चरणों में अर्पण कीजिए। श्री गणेश की प्रार्थना करिए, 'हमारा अहंकार निकाल लीजिए।' ऐसा अगर आपने उन्हें आज कहा तो मेरे लिए बहुत आनन्द की बात होगी क्योंकि, श्री गणेश जैसा सबका पुत्र हो, ऐसा हम कहते हैं। उनके केवल नाम से हमारे पूरे शरीर में चैतन्य लहरियां बहने लगती हैं। ऐसे सुन्दर श्री गणेश को नमस्कार करके आज का भाषण पूरा करती हूँ।

('भक्ति-संगम' अप्रैल 1983 में मुद्रित मराठी भाषण का हिन्दी अनुवाद) ●●

ईस्टर पूजा

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कलकत्ता अप्रैल 1995 (सारांश)

ईस्टर न केवल ईसा के लिए बल्कि हम सबके लिए भी अत्यन्त प्रतीकात्मक है। पुर्नजन्म के दिन का बहुत महत्व है। ईसा का पुर्नजन्म ईसाई धर्म का संन्देश है क्रॉस का नहीं। पुनर्जीवित होकर ईसा ने दर्शाया कि इसी मानवीय शरीर के साथ आप पुनर्जीवित हो सकते हैं। बिना पुर्न जीवित हुए वे अज्ञन्य चक्र को पार न कर सकते। नि: सन्देह उनका जीवन बहुत छोटा था, वे केवल साढ़े तीन वर्ष जीवित रहे। वे भारत आये और एक शालीवाहन से मिले, शाली वाहन ने जब उनका नाम पूछा तो उन्होंने बताया कि उनका नाम ईसा मसीह है। साथ ही उन्होंने कहा कि वे मलेच्छों के देश से आये हैं, मलेच्छ अर्थात् जिन्हें मल की इच्छा हो। उन लोगों की इच्छा अपवित्र रहने की है, इस कारण मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे वहां रहूं? मेरे लिए यही (भारत) मेरा देश है। परन्तु शालीवाहन ने उन्हें वापिस जा कर अपने लोगों को 'परम निर्मल तत्व' दे कर उनकी रक्षा करने के लिए कहा। अत: वे वापिस चले गए और साढ़े तीन वर्ष में ही उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया।

अपनी मृत्यु के समय उन्होंने क्षमाशीलता की बहुत सी सुन्दर-सुन्दर बातें बताई, परन्तु अन्तत: उन्होंने कहा "सावधान, मां आई है"। इसका अभिप्राय यह है कि मां (आदि शक्ति) के आने की आशा की जानी चाहिए। अपने जीवन काल में भी उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें 'परम चैतन्य' (Holy Ghost) भेजूंगा जो आपको चैन, मशवरा और मुक्ति प्रदान करेंगे। ये सारी बातें उन्होंने इस लिए कही क्यों कि वे सारी दैवी योजना को जानते थे। उन्होंने यह भी कहा कि आप मेरे विरूद्ध यदि कुछ कहेंगे या करेंगे तो मैं इसे सहन कर लूँगा परन्तु आदिशक्ति (Holy Ghost)के विरुद्ध मैं कुछ भी सहन न करूंगा, किसी भी मूल्य पर नहीं। यह बात भी सत्य है। अत: आदि-शक्ति के विरुद्ध जाना बहुत भयानक है। इस विषय में कोई सन्देह नहीं। मैं भयानक नहीं हूँ, परन्तु ये देवी-देवता अत्यन्त भयानक हैं।

सहजयोग में शरीर के रहते हुए आप का पुर्नजन्म होता है। इससे पूर्व आप सर्व व्यापक शक्ति से न जुड़े थे और अपने मस्तिष्क या भावनाओं के माध्यम से आप सभी कार्य करते थे। अपनी भावनाओं, इच्छाओं, कर्मों तथा अहँ की कब्र से आप न निकल पाये थे। आत्मसाक्षात्कार पाकर, आप जानते है, आप कितने स्वतन्त्र हो गए हैं! आपने अपने व्यक्तित्व को कितना विकसित कर लिया है। बहुत से उदाहरण हैं जिनके माध्यम से हम बता सकते हैं कि ईसा ने कहा कि अच्छी तरह से 'स्वयं को जान लें'। वे जानते थे कि बिना स्वयं को समझे व्यक्ति का पुर्नजन्म नहीं हो सकता। परन्तु सहजयोग की बात ही अलग है, आपको पुर्नजन्म मिल जाता है तथा आप स्वयं को जान भी जाते हैं। आत्मसाक्षात्कार पाने का यह अत्यन्त सहज तथा मधुर मार्ग है।

ईसा के जीवन पर यदि आप दृष्टि पात करें तो उन्होंने अफवाहें फैलाने वाले लोगों (Murmuring Souls) की बात की है। सहजयोग में भी ऐसे लोग हैं क्योंकि यह सभी के लिए खुला है और सभी प्रकार के लोग इसमें आते हैं। हमें बहुत से उथले लोग सहजयोग में दिखाई पड़ते हैं जो अत्यन्त गैरजिम्मेदार ढंग से सहजयोग और इसके कार्य के विषय में बात करके अपने उथलेपन की अभिव्यक्ति करने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु ईसा ने कहा था कि अफवाहें फैलाने वालों से सावधान रहना होगा। हमें भी इनमें सावधान रहना है। आरम्भ में जब आप सहजयोग में आते हैं तो आप इन अफवाहें फैलाने वाले लोंगों के शिकंजे में फंस सकते हैं क्योंकि वे एक प्रकार से आसुरी (Negative) शक्तियों के दूत हैं। आसुरी शक्तियों के इन दूतों को खोज निकालने का आप प्रयत्न करें। वे हर चीज की शिकायत करते हैं और अत्यन्त गैरजिम्मेदार ढंग से बात करते हैं। जब आप उन्हें इस प्रकार बातें करता देखें तो उनसे दूर हट जायें। मात्र पुर्नजन्म पा लेना ही पर्याप्त नहीं। आत्मसाक्षात्कार पाने के पश्चात आपने विकसित होना है। और इस विकास के लिए आवश्यक है कि हम सावधान रहें कि कहीं हम इस प्रकार के उथले लोगों से प्रभावित तो नहीं हो रहे। सहजयोग में जो उतर जाते हैं वे सुन्दर देवदूत बन जाते हैं। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं। परन्तु एक चीज़ जो हमने समझनी है वह है अपने आत्मसाक्षात्कार का सम्मान करना। आप चिन्ता न करें कि लोग क्या बातें कर रहे हैं, क्या कह रहे हैं, क्या आलोचना कर रहे हैं, हर समय आप अपनी ओर देखें तथा अपनी गहनता में उतरने का प्रयत्न करें।

जीवन का यह अति महान अवसर है कि आप पुर्नजीवित हो रहे हैं, हमारे विकास की यह अन्तिम सीढ़ी है। परन्तु अब आपको अपना मस्तिष्क गौण कर देना चाहिए। आप मस्तिष्क से ऊपर नहीं उठ पाते, परन्तु इससे ऊपर उठ कर ही आप सहजयोग को प्राप्त कर सकते हैं। तब आप स्वयं को पहचान जाते हैं क्योंकि आप को आत्म-ज्ञान मिल जाता है। आपको अपने तथा दूसरों के चक्रों का ज्ञान हो जाता है। यह सब आपको मिल सकता है परन्तु इसके लिए आप को सूक्ष्मतर बनना

होगा। एक स्थूल व्यक्तितत्व नहीं। यदि आप सूक्ष्म व्यक्ति बन जाएँ तो भिन्न प्रकार से आपकी आन्तरिक शक्तियाँ विकसित होंगी और इस विकास को देख कर आप आश्चर्यचकित रह जाँएगे।

मैंने देखा है कि सहजयोग में कुछ लोग अतिमहत्वाकाँक्षी हैं। वे कहते हैं कि श्री माता जी मैं परमात्म-साक्षात्कारी होना चाहता हूँ, मैं यह करना चाहता हूँ, मैं वह करना चाहता हूँ। यहां दफ्तर की तरह नहीं कि किसी की उन्नति कर दी जाए, आपको स्वयं विकसित होना है। तब वे अपनी डींगें हांकने लगते हैं। हम उन्हें 'महायोगी' कहते हैं। उनमे से कुछ तो यह कहने लगे थे कि उन्होंने बहुत उच्च स्थिति प्राप्त कर ली है परन्तु अन्ततः वे पागल खाने पहुँच गए। **लोग यदि आपको उल्टे-सीधे मशवरे दें तो आप उनका विरोध करें।** परन्तु कुछ ऐसे भी लोग हैं जो ऐसे मुँहफट व्यक्ति का साथ देते हैं। अतः अवश्य याद रखें कि 'अन्तिम निर्णय' हो रहा है और निरन्तर एक बहुत बड़ा छनना लगा हुआ है, श्रेष्ठ को छांटने का बहुत बड़ा प्रबन्ध है। जो सूक्ष्म हैं वे अधिक सूक्ष्म हो रहे हैं। परन्तु जो तुच्छ, स्थूल और मूर्ख हैं वे नष्ट होते चले जा रहे हैं तो यह अंतिम छंटनी बहुत शीघ्र आरम्भ होती है और, जहां भी हम महसूस करते हैं, जहाँ भी हम है, वहाँ पर कार्य करती है।

अब इसका माप दण्ड क्या है? सर्वप्रथम आपकी सुहृदता है। आपकी सुहृदता विवेकशील होनी चाहिए। कभी-कभी लोग नकारात्मक लोगों के प्रति भी सुहृद होते हैं। सहजयोग में आने के पश्चात आपको किस के प्रति करुणामय होना है, चैतन्य लहरियों द्वारा आप पता लगा सकते हैं। यह जान लेना अति सुगम है कि आप कैसे व्यक्ति का सामना कर रहे हैं। परन्तु पहले आपको चैतन्य लहरियों का ज्ञान होना चाहिए। बिना चैतन्य लहरियों के ज्ञान के आप नहीं जान सकते कि भला क्या है और बुरा क्या है। अतः आप सब ध्यान-धारण करें। बिना अपनी आलोचना किए आप प्रतिदिन ध्यान कर सकते हैं। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। मैं तुरन्त जान जाती हूँ कि कौन ध्यान-धारणा करता है और कौन नहीं। तुरन्त। ध्यान-धारणा करने वाला व्यक्ति स्पष्टतः देव दूत होता है। ऐसे व्यक्ति की सभी प्रतिक्रियाओं, आचरण और पूर्ण दृष्टिकोण से अध्यात्मिक परिपक्वता की अभिव्यक्ति होती है और आप आर्श्चय चकित रह जाते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, 'सहस्रारे महामाया'। मुझे समझना सुगम नहीं हैं कुछ समय के लिए आप समझ जाते है कि 'मैं क्या हूँ', परन्तु अचानक आप भूल जायेंगें यही युक्ति है। यदि आप मुझे हर प्रकार से समझ जायेंगे तो आप यहां बैठेगें भी नहीं। आप मेरे नजदीक तक भी नहीं आयेंगे। इस प्रकार महामाया हर समय कार्यरत हैं परन्तु लोगों को इसी प्रकार ही परखा जा सकता है।

अन्तिम निर्णय सुगम कार्य नहीं है। हजारों निर्णायक भी यह निर्णय नहीं कर सकते। हर समय आपने वास्तविकता को समझना है। मैं सभी कुछ जानती हूँ परन्तु इस बात को मैं कभी प्रकट नहीं करुंगी। इस प्रकार मैं कार्य करती हूँ और धीरे-धीरे जान जाती हूँ कि इस व्यक्ति के विषय में मुझे क्या करना है।

आपका पुनरुत्थान ईसा के पुनरुत्थान से कहीं अधिक आर्शिवादित है। ईसा अकेले थे, लोग उन्हें मान्यता न देते थे। जहां लोगों ने उनके हाथों और पैरों में कील गाड़े थे पुर्नजीवित हो कर लोगों को विश्वस्त करने के लिए उन्हें उन स्थानों पर बने चिन्ह दिखाने पड़े। परन्तु आज स्थिति ऐसी नहीं है। **आपको केवल मुझे पहचानना होगां बस इतना ही! मुझे जानने की कोई आवश्यकता नहीं है, ऐसा करना सुगम नहीं है। मुझे समझना अत्यन्त कठिन है, परन्तु यदि आप मुझे पहचान जायें तो काफी है।** यह सब आपकी संवेदनशीलता पर निर्भर करता है। आपका पुनरुत्थान पूर्ण होना चाहिए और आपको सहजयोग में परिपक्व होना होगा। यदि आप परिपक्व नहीं हो सकते तो मैं कहूंगी कि सहजयोग छोड़ दो। थोड़ी देर के लिए बाहर जाएं जहां आप यह समझ सकें कि क्या चल रहा है, तब आप लौट आयेंगे।

सहजयोग में आप से ईसा की तरह जीवन बलिदान करने की आशा नहीं की जाती। आपकी मां ऐसा नहीं चाहती। फिर भी आपको कुछ बलिदान करने है;—जैसे कभी-कभी आपको गणपति पुले में कष्ट दायी स्थान पर ठहरना होगा, यात्रा करते हुए कई कष्ट उठाने होंगे, सम्भवतः यहां आना भी इतना आराम देय न हो जितना आपका अपने घर पर रहना। **परन्तु मुख्य बलिदान तो आपके अंह का है। आपको अपना अंहकृसारोपित करना होगा। अंह ही आपको सारी मूर्खता पूर्ण बदमिजाज़ियां सिखा है।** यदि आप अपने अंह को समर्पित कर सकें तो आपको काफी सहायता मिलेगी। परन्तु यदि अंह के विषय में सोचते हुए आप इसका समर्पण करते हैं तो आप अपनी मानसिक सामर्थ्य का उपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार का कोई भी कार्य जब आप करते हैं तो यह मानसिक क्षमता के माध्यम से करते हैं जिसके द्वारा आप अपने अंह का उपयोग कर रहे हैं। अतः ध्यान-धारण करना और निर्विचार समाधि में चले जाना ही सर्वोतम मार्ग है तब आप स्वतः ही समर्पित हो जाते है।

मुझे आपसे क्या लेना है? कुछ नहीं! मुझे कुछ नहीं चाहिए। आप लोग ही मुझे कुछ न कुछ देने का प्रयत्न करते रहते हैं और मैं इस सबसे छुटकारा पाने का प्रयत्न करती रहती हूँ। आपके सन्तोष के लिए मैं स्वीकार भी कर लेती हूँ। मुझे स्वयं सहजयोग नहीं करना होता, परन्तु यह तो आपकी मां का प्रेम है कि वे पृथ्वी पर अवतरित अधिक से अधिक मानवों की रक्षा करना चाहती हैं, उन्हें पुर्नजीवन प्रदान करना चाहती हैं। यह समय अति विशेष है कि आप मेरे माध्यम हैं। सर्वत्र जा कर आप सहजयोग फैला सकते हैं और अन्य लोगों को मुक्त करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

आज के दिन हमने स्वयं को वचन देना है कि सहजयोग की सूझ-बूझ और संवेदनशीलता में हम अत्यन्त गहनता में उतरेंगे। यह विकास घटित होना ही चाहिए और इसके लिए मुझे ध्यान-धारणा करनी होगी। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

दूसरे, लोग यह कहते हैं कि यहां पर लोग अत्यन्त कंजूस है।

वे किसी भी कार्य के लिए धन नहीं देना चाहते मेरे विचार से उदारता आपके प्रेम की एक अभिव्यक्ति है। आप मुझे तो देना चाहते हैं, ठीक है, परन्तु जब खर्च की बात आती है तो या तो मैं खर्च करूं या कोई अन्य खर्चे के बोझ को उठाये। अब चीजों में सुधार हुआ है परन्तु अभी भी हमें समझना चाहिए कि बहुत सा कार्य होने वाला है जिसके लिए हमें धन की आवश्यकता है। मुझे आवश्यकता नहीं है, मैं अपना पैसा खर्च करती हूँ। परन्तु उदारता सर्वश्रेष्ठ है और सहजयोगियों के लिए यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मैनें देखा है कि लोग कभी-कभी अति सर्तक और स्वार्थी होते हैं। वे मुझे कुछ साड़ियां लाने के लिए कह देंगे। कुछ साड़ियां ले लें, ठीक है। परन्तु वे कहते हैं कि हम इन्हें नहीं खरीदना चाहते। मैं कोई व्यापार तो कर नहीं रही, आपके कहने पर मैं इन्हें छांट कर लाई थी। अब यह कहना कि हम इन्हें लेना नहीं चाहते! न कोई व्यापार है और न ही विपणन। यही समस्या है जब मैं सहजयोगियों को समझ नहीं पाती। उन्हें समझना चाहिए कि अपना पैसा खर्च कर मां यह सब ले कर आई हैं। क्या फर्क पड़ता है यदि वे ये कहें कि सहजयोग के लिए आप थोड़े से पैसे अधिक ले लें। आखिरकार इतनी बड़ी संस्था चल रही है और बहुत से देश तो एक पैसा भी नहीं दे सकते, उनके लिए भी खर्च करना पड़ता है।

ईसा को तीस रुपये में बेच दिया गया था, आप कल्पना कीजिये कि उन्हें तीस रुपये के लिए बेच दिया गया। इससे यह प्रकट होता है कि जब आप आयोजन-कर्त्ताओं की आर्थिक कठिनाईयों को नहीं समझते और उनकी सहायता नहीं करते तो वास्तव में आप अपने अन्दर के ईसा मसीह को बेच रहे हैं। आप ईसा को नहीं बेच सकते, आप सहजयोग को नहीं बेच सकते। परन्तु इसका यह भी नहीं है कि आप इसका अनुचित लाभ उठायें। अत: मुझे यह बताना है कि उदारता आपकी सहायक होती है क्योंकि लक्ष्मीतत्व भी जागृत होना आवश्यक है। मुझे यह बात इस लिए करनी पड़ी क्योंकि मुझे शिकायत मिली थी कि लोग किसी भी कार्य के लिए पैसा नहीं देना चाहते। यह तो प्रशंसनीय बात है कि कुछ लोग सारा भार उठा लेते हैं। परन्तु सभी लोगों को योगदान करना चाहिए। ऐसा करना आवश्यक है क्यों कि हम परमात्मा का कार्य कर रहे हैं। बिना किसी की शिकायत किए आपको अन्य कार्य करने के लिए आगे आना चाहिए। इसका आनन्द लें। मुझे प्रसन्नता हुई कि सहजयोगियों ने सारे पोस्टर लगाए और आप देख सकते हैं कि पूरा स्थान चैतन्यित हो गया है। आप देख सकते हैं कि किस प्रकार ये कार्यान्वित हुआ। **अत: हर व्यक्ति को यथासम्भव सभी कुछ करने के लिए आगे आना चाहिए। सहजयोग में पूर्ण हृदय से समर्पित होने के अतिरिक्त किसी अन्य चीज की आवश्यकता नहीं।** तब आप देखें कि किस प्रकार आप विकसित होते हैं। अपने हृदय के माध्यम से ही अपने भविष्य के लिए आप सारा पोषण प्राप्त करेंगे। अत: अपना हृदय खोलिए। हिसाब-किताब न लगाते रह जाइये।

मुझे आप सब से हिन्दी में भी बात करनी है। यह अति आवश्यक है। आज के दिन ईसा मसीह मृत्यु लोक से बाहर आये और उनका पुर्नजन्म हुआ। आपके शरीर को भी उसी प्रकार पुर्नजीवित होना है जिस प्रकार ईसा मसीह का हुआ। मृत्यु के पश्चात नहीं, जीवित रहते हुए। इसी जीवन में आपका पुर्नजन्म हुआ है। आपको उत्थान की मुख्य विशेषताओं को समझना चाहिए। पुनरुत्थान पाकर आपको अधिक सूक्ष्म हो जाना चाहिए। **सहजयोग में आकर भी यदि आपका मस्तिष्क धनार्जन, व्यापार और महत्वाकांक्षाओं से परिपूर्ण है तो आप गलत स्थान पर आ गए हैं। तब आपको कहीं और जाना चाहिए। सहजयोग में आपको अपने अध्यात्मिक उत्थान के विषय में सोचना चाहिए, कोई अन्य विचार आपको मस्तिष्क में घुसना ही नहीं चाहिए।**

सभी लोग पूछते हैं कि श्री माता जी बंगाल में 'लक्ष्मी-तत्व' क्यों नहीं जागृत हुआ? क्योंकि यहां पर बहुत से तान्त्रिक हैं। जहां भी ये तान्त्रिक जाते हैं लक्ष्मी जी वहां से दौड़ जाती हैं। इतना ही नहीं, शराब के कारण भी ये दूर चली जाती है। कुछ दिन तो ठीक ठाक चलता है, परन्तु बाद में शराब के कारण लक्ष्मी चली जाती है। बंगाल में बहुत तान्त्रिक हैं।

मेरे विचार में इसका कारण यह है कि बंगाल के लोग अत्यन्त सादे और भावुक हैं, जब भी कोई आकर उनसे कहता है कि वह परमात्मा का दूत है तो वे उनपर विश्वास कर लेते हैं। इसके विषय में सोचते तक नहीं। हरे-रामा आन्दोलन भी बंगाल से चालू हुआ। सनकी लोगों की तरह हरे-राम, हरे-राम करते हुए सड़कों पर दौड़ते हैं। क्या लाभ है? गरीबी और अधिक बढ़ गई। बंगाल में जो भी कोई कुछ कहे, लोग उसका अनुसरण करने लगते हैं। किसी ने मुझे बताया कि वह हरा धनियां नहीं खाती है, मैनें उससे इसका कारण पुछा तो वह कहने लगी क्योंकि उसकी बहन नहीं खाती इसलिए वह भी हरा धनियां नहीं खाती। सभी प्रकार के कर्म काण्डों में फंस कर हम इन्हीं में खो जाते हैं। हम पूरी तरह खो जाते हैं। हमें खोज निकालना चाहिए कि इन कर्मकाण्डों के पीछे क्या है। सहजयोग में कोई कर्मकाण्ड, जातिवाद और अन्य धर्मों की आलोचना नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि हृदय से विश्व बन्धुत्व की स्थापना हो गई है। जिस दिन हम सब में विश्व बन्धुत्व की भावना आ जाएगी हम इन तान्त्रिकों को भगा सकेंगे। एक अकेला सहजयोगी अपनी शक्ति से इन तान्त्रिकों को भगा सकने में समर्थ है। बम्बई में गिरगाओं नामक स्थान पर एक स्त्री यह कह कर नाचने लगती थी कि उसमें देवी का प्रवेश हो गया हैं एक दिन एक सहजयोगिनी वहां चली गयी, उसके जाते ही नाचना बंद करके वह भाग खड़ी हुई। देवी की शक्ति इन सांसारिक शक्तियों से कहीं शक्तिशाली है। पुर्नजन्म पाकर आप शुद्ध एवं पवित्र हो गए हैं। पवित्रता की आन्तरिक शक्ति अभिव्यक्त होने लगी है।

स्वयं को शुद्ध करके सहजयोगियों को पवित्र हो जाना चाहिए। परन्तु इसके स्थान पर वे भक्ति तथा मानसिक संसार में चले जाते

हैं। यह तो ठीक है परन्तु अन्तस में विचरण करना ही सर्वोतम है। अपनी शक्तियों को दृढ़ करें। जिस दिन आपकी शक्ति दृढ़ हो जाएगी उस दिन तान्त्रिक सिर पर पांव रख कर भाग खड़े होंगे। अत: आज पुर्नजन्म के दिन, आपको शपथ लेनी है कि आप स्वयं को बहुत उच्च स्तर तक परिवर्तित करेंगे और अत्यन्त गहन सहजयोगी बनेंगे। इसके लिए हमें ध्यान-धारणा करनी होगी, तीन घंटे ध्यान करने की आवश्यकता नहीं है, हृदय पूर्वक दस मिनट का ध्यान ही काफी है। ध्यान करते हुए हृदय का इसमें होना आवश्यक है।

बंगाल के लोग विशाल हृदय एवं प्रेममय हैं, फिर भी आपको पात्र देखने होंगें। यदि आप सहजयोगी हैं तो स्वयं को प्रेम करें, जब आप ऐसा करने लगेंगे तो आपका प्रेम अन्य लोगों तक भी फैलने लगेगा। आप क्रोधित हो जाते हैं, आप इच्छाओं तथा बन्धनों से जकड़े हुए हैं। जब आप स्वयं को इन सब बन्धनों से मुक्त कर लेंगे तब आप पुर्नजीवित हैं। आपका व्यक्तितत्व जब इन बन्धनों से मुक्त हो जाएगा तब कोई तान्त्रिक यहां टिक न सकेगा। कोई तान्त्रिक यहां रह न सकेगा।

आप लोगों के पास इतनी सुन्दर संगीत कला है, संगीतज्ञ स्त्रियां और पुरुष कोई बस या ट्रक किराये पर लेकर गावों में जाकर घोषणा करें कि श्रीमाता जी के भजन होंगे। तब आप सब वहां जा कर भजन गायें, प्रवचन दें और धीरे-धीरे मेरे कैसेट चलाने लगें। उत्तर-भारत, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरयाना बहुत से लोगों को इस प्रकार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ है। इस विधि से बहुत से स्थानों पर सहजयोग फैलाने में सहायता मिली है। जब आप लोगों के पास संगीत की यह कला है तो क्यों नहीं गांव-गांव जाकर लोगों को मुग्ध करके पुनरुत्थान में उनकी सहायता करते? ऐसा करने से सभी तान्त्रिक भाग खड़े होंगे। मेरे नाम को सुन कर ही वे कांप उठते हैं, जब आप मेरे भजन गायेंगे तो न जाने क्या प्राप्त कर लेंगे! अपनी मां से जो प्रेम आपको मिला है उसे बांटें। इस प्रान्त के लोग प्रेम के बहुत भूखे हैं, गावों में जाकर आप यह बात देखें। आपके वहां होने मात्र से वहां लक्ष्मी आ जाएगी। वहां आपके जाने से वहां की शारीरिक, मानसिक और सर्वोपरि अध्यात्मिक स्थिति में सुधार होगा। इस प्रकार हमने अपने देश के लोगों को परिवर्तित करना है, पर इसके लिए आपको गांवों में जाकर कार्य करना होगा।

आज का दिन यह प्रमाणित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि ईसा मसीह की तरह हर मानव स्वयं अपना उत्थान प्राप्त कर सकता है। परन्तु ईसा द्वारा रखी गई शर्तों पर चल पाना हम लोगों के लिए सम्भव नहीं उन्होंने कहा था कि एक आंख से यदि आप कोई अपराध करते हैं तो स्वयं ही इसे निकाल दें। आप का हाथ यदि कोई अपराध करता है तो इसे काट दें। मैं इसाई लोगों में रही हूँ परन्तु मैनें एक भी इसाई ऐसा नहीं देखा जिसका हाथ कटा हो या आँख निकली हुई हो। अत: उस समय उन्होंने ईसा की बात ताक पर रखदी। परन्तु सहजयोग में आप सब अब स्वयं से शत्रुता न करें। स्वयं अन्तर्दर्शन कर के देखें कि क्या आप में कोई दोष है। यदि आप वास्तव में स्वयं से प्रेम करते हैं तो उन दोषों को दूर करें। ऐसा करने से ही आप पूर्णत: अपना उत्थान प्राप्त कर सकेंगे।

इन दोषों के दूर होते ही आपके आश्चर्य की सीमा न रहेगी कि आप कितने आनन्दित, शान्त और शक्तिशाली है। अपनी शक्ति के मार्ग में आने वाली सभी बाधाओं को, किसी भी मूल्य पर, आपको दूर करना होगा। हमारे मार्ग में बाधाएं आने का कारण यह है कि अपने उत्थान की अपेक्षा हम अन्य चीज़ों को अधिक महत्व देते हैं। अन्य चीज़ें हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। हमारा पुर्नजन्म हो चुका है, अब हम परमात्मा के साम्राज्य में हैं, परन्तु वहां सिंहासन पाने के लिए हमें स्वयं को शुद्ध करना होगा। अन्य चीज़ों के पीछे भटकते रहने से आपको कोई उपलब्धि न होगी, आप बस शिकायत ही करते रह जाएंगे कि मुझे यह नहीं मिला, मुझे वह नहीं मिला। सर्व प्रथम आपको अपना अपमान करना और गलत रास्ते पर चलना बन्द करना होगा। अन्यथा किस प्रकार आपको शान्ति प्राप्त होगी? यह अत्यन्त कठिन कार्य है। लोग कहते हैं श्री माता जी हम अशान्त हैं इसलिए हमें उल्टे-सीधे कार्य करने पड़ते हैं। शान्ति प्राप्त करना कठिन नहीं परन्तु इसके लिए व्यक्ति को ध्यान-धारणा करनी होगी तथा सारा कार्य हृदय पूर्वक करना होगा, तब कुछ भी कठिन नहीं रहेगा। सहजयोग में मैं देखती हूँ कि बहुत से लोगो ने यह उँचाइयां पा ली हैं और उनके प्यार में ऐसी शक्तियां हैं।

आज मैं ऐसे एक व्यक्ति के विषय में बताऊँगी। यह व्यक्ति मां के प्रति अत्यन्त समर्पित है। प्रेग स्टेशन से हम वायु-पतन जा रहे थे। हम हालैंड जा रहे थे और एक सहजयोगी ने हमें बताया कि वायुयान ग्यारह बजे जाएगा। उसी समय के अनुसार हम तैयार हुए। तब उसने बताया कि यान जल्दी छूटेगा, अत: आप शीघ्रातिशीघ्र यहां पहुंचें। हम कैसे इतनी जल्दी पहुँच सकते थे? हमें पहुँचने में पन्द्रह मिनट की देर हुई। वहां एक आस्ट्रियन पतन परिचारिका हम पर चिल्लाई कि आप लोग ऐसे हो, वैसे हो, तुम्हें समय की कोई कीमत नहीं अब यह व्यक्ति, जिसने मुझे समय बताया था, यह सब सहन न कर सका। हम सब जाकर यान में बैठ गए। यह व्यक्ति अति भावुक हो गया और उसकी आँखो से आँसुओं की झड़ी लग गई। वह एक जर्मन है। वह पिछली सीट पर बैठा था। बाकी सभी सहजयोगियों ने उसे शान्त होने के लिए कहा। मैने उसकी ओर देखा तथा शान्त होकर निश्चिन्त होने के लिए कहा। तभी किसी ने हमें बताया कि खराबी के कारण यह यान नहीं जाएगा। परन्तु जिस क्षण मैंने उसकी आंखों मे आसूं देखे, पूरे आकाश पर काले मेघ छा गए। सहजयोगी हैरान थे कि काले हाथियों जैसे ये मेघ कहां से आ गए? उसके प्रेम की शक्ति को देखें! यान अधिकारियों ने हमें पतन पर जाने के लिए कह दिया क्योंकि वायु-यान न जा पाएगा। जब हम हवाई पतन पर पहुँचे तो मूसलाधार वर्षा होने लगी। वहां से एक भी वायुयान न उड़ सका। हमें बताया गया कि केवल हमारा यान पाँच बजे जाएगा। तब यह सहजयोगी उस परिचारिका के पास गया और कहा कि अब हमें

देर हो रही है, क्या हम भी आप पर चिल्लायें? वह प्रबन्धक के पास गई और उसे सब बताया। इन लोगों को विश्वास हो गया कि हम कोई शक्तिशाली व्यक्ति हैं। एक भी बादल न था। तब उन्होंने हमें बाहर जाकर अपनी इच्छानुसार लौटने को कहा। हमारे लिए सभी प्रकार के प्रबन्ध किए।

जब हम दूसरे यान से जाने वाले थे तो एक महिला, जो देख रही थी, मेरी ओर आई और मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसके हाथ का दर्द ठीक कर दूं। मैंने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा। तब उसने अपना हाथ इस पर रखा और कहने लगी कि दर्द समाप्त हो गया है। हवाई पतन का मुख्याधिकारी आया और कहने लगा कि उसे पीठ-दर्द का रोग है और ठीक करने के लिए प्रार्थना की, तब मैंने उससे कहा कि हमें देर हो रही है, तो वह कहने लगा कि मैं आपके आगे-आगे चलूंगा, आप अपना हाथ मेरी पीठ पर रख दें। इस प्रकार हम यान तक आए। पीछे मुड़ कर वह कहने लगा कि वह ठीक हो गया है। इन लोगों को कैसे पता चला कि हमारे पास कोई शक्ति है! इस व्यक्ति के प्रेम तथा उसके प्रेम की शक्ति को देखें!

आप यदि स्वयं से प्रेम करते हैं तो स्वयं को सुधारें। कभी आप पद, कभी धन तथा कभी अन्य चीज़ों की ओर दौड़ते हैं। स्वयं को भी कुछ समय दें। बंगाल में सहजयोगी कार्य कर रहे हैं। परन्तु बंगाल की स्थिति तभी परिवर्तित होगी जब गांव-गांव जाएंगे। आप सब का पुनरुत्थान किया गया है, आज मैं आपसे कह रही हूँ कि आप केवल कलकत्ता में ही न बैठे रहें, अन्य स्थानों तथा गांवो में जा कर कार्य करें। आपकी अमूल्य उपलब्धि तभी बढ़ेगी जब आप इसे बांटेंगे। इसी प्रकार सहजयोग तभी बढ़ेगा जब आप इसे अन्य लोगों में बांटेंगे। इससे पूरे बंगाल का हित होगा।

पूजा पर आये इतने सारे लोगों की उपस्थिति आनन्ददायी है। परन्तु मुझे आशा है कि जब मैं अगली बार आऊँगी तो ग्रामीण लोग भी यहां आए हुए होंगे। इस वैभव शाली संस्कृति तथा अपनी संगीत की कला को पूरे बंगाल में सहजयोग फैलाने के लिए उपयोग करें।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें। ●●

सहस्रार पूजा

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कबेला, इटली, - 7-5-95

आज का दिन सभी सहजयोगियो के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन, सहस्रार खुला था। यह मात्र एक चमत्कार था, क्योंकि मैं नहीं सोचती कि मैं उस स्थिती में थी कि यह कार्य कर सकती। अत: मैं प्रतीक्षा करना चाहती थी, परन्तु कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिन्होंने मुझे सहस्रार खोलने पर विवश कर दिया। यह ऐसी स्थिती थी कि मुझे लगा कि देर करना उचित न होगा क्योंकि इससे सभी कुगुरुओं को चहुँ ओर भ्रम फैलाने में सहायता मिलती। कार्य करने की यह सहज विधि है। अब पच्चीस वर्ष बीत चुके हैं, इस समय में आप सब लोग इकट्ठे हुए हैं, बहुत से लोग यहां नहीं आये परन्तु उन्होंने बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त कर ली हैं। परन्तु सम्भवत: हम नहीं जानते कि हमने वास्तविकता में क्या पा लिया है। आपको चैतन्य लहरियां प्राप्त हुई, आप इस सर्वव्यापक शक्ति को अनुभव कर सकते हैं। आप इस आनंद के सागर में तैर रहे हैं। आप सब सामूहिकता का आनंद ले रहे हैं, आप अपनी कई सीमाओं से आगे बढ़ गये हैं। यह सब आपके साथ घटित हुआ क्योंकि यह प्राप्त करना आपका अधिकार है। मैं इसके लिए कोई श्रेय नहीं लेती। इस समय एक ही वस्तु पर मैं आपको इशारा करती हूँ कि आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर चुके हैं अत: स्वयं का आनंद लें।

अपने आस पास देखने पर हम पाते हैं कि पूरी प्रकृति स्वयं का आनंद लेती है। यह किसी चीज़ के लिए परेशान नहीं होती। उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ और न हीं उन्होंने परम चैतन्य का अनुभव किया है। फिर भी वे यह कैसे जानते हैं कि उन्हे आनंद लेना है। फूल कुछ समय के लिए आते हैं और मुरझा जाते हैं। मगर जितनी देर वे जीते हैं वे बहुत प्रसन्न होते हैं वे अपने भूत या भविष्य के बारे में नहीं सोचते। वे वर्तमान का आनंद लेते हैं और वर्तमान में वे अपनी सुगन्ध का आनंद लेते हैं और दूसरों को भी अपनी सुगन्ध देते हैं। वे सुन्दर हैं और दूसरों को सुख प्रदान करते हैं। सारी प्रकृति इसी प्रकार की है। यदि आप पक्षियों या किसी और वस्तु को देखें, जिसे हम प्राकृतिक कहते हैं, तो यह सब एक प्रकार की ध्यानावस्था में हैं। यह सब छोटे-बड़े पर्वत ऐसे दिखते हैं मानो सभी घटनाओं के साक्षी हों।

अब हमें सबसे पहले देखना है कि वास्तव में हमने क्या प्राप्त किया है। यह महत्वपूर्ण है। क्योंकि यदि पहाड़ पर चढ़ते हुए आप पीछे देखें तो आप को आघात लगेगा और आप गिर भी सकते हैं। साधारणतया लोग कहते हैं कि पीछे मत देखो। मगर एक व्यक्ति जिसने खजाना अर्जित किया है, वह बार-बार जाता है और गिनता है और मालूम करता है कि उसने कितना प्राप्त किया है, हर बार वह उसे देखता है, और आनंद लेता है। तुलनात्मक रूप में मालूम करना कि

हमने क्या प्राप्त किया है और कैसे हमने कोई वस्तु प्राप्त की है, निश्चित रूप से आपको मस्तिष्क की शक्ति और जीवन का वैभव प्रदान करेगा।

प्रथम घटना जो आपके साथ घटित हुई है, जो बहुत महत्वपूर्ण है, यह है कि आपने सर्वव्यापक शक्ति को अनुभव किया है। यह दिखाता है कि आप अवश्य ही सत्य के महान जिज्ञासु रहे होंगे, ईमानदार, निष्कपट और विवेक शील। केवल मेरे कार्यक्रम में आने मात्र से आपने चैतन्य का अनुभव किया और उसके बाद, जमना आरम्भ कर दिया। आप में से बहुतों ने अनुभव किया और आश्चर्य चकित रह गए। वे पता लगाना चाहते थे कि यह सच है या नहीं। मगर तब आप विश्वस्त थे कि आप ने अपने जीवन में एक नया आयाम प्राप्त किया है और आप इस दिव्य प्रेम की सर्वव्यापक शक्ति को अनुभव कर रहे हैं। आपने सार के रूप में इसमें से, पूर्ण स्वतन्त्रता को प्राप्त किया है। आपने अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता पा ली है।

सबसे पहले स्वतन्त्रता आपको आपके अहँ से मिली। अहँ की इस दीवार को आप पार कर चुके हैं। आप इस अहंकार के बन्धन से मुक्त हो चुके हैं जो कि वास्तव में आपके लिए परेशानियों से भरा था। यह अहंकार बहुत से ऐसे कार्य करता है जिसके बारे में आप नहीं जानते। यदि व्यक्ति अहंकारी है तो वह किसी को दुख पहुँचाने में संकोच नहीं करता। वह दु:ख पहुँचाता है परन्तु यदि उसे दु:ख हो तो वह इसे पसन्द नहीं करता, वह एकदम रोना आरम्भ कर देता है। विशेषतया वे लोग जिनमें बहुत अधिक अहंकार है बहुत आसानी से दु:खी हो जाते हैं, मगर वे यह नहीं समझते है कि उन्होंने पहले कितने लोगों को चोट पहुँचाई है और कितने वास्तव में ऐसे व्यक्ति से डरे हुए हैं। किसी दूसरे मनुष्य को चोट पहुँचाना पाप मय है, किसी भी चीज़ के लिए, किसी भी कारण से सबसे पहली बात बदला है। बदले का विचार यहां है कि जिसने मुझे चोट पहुँचाई है या जिसने मेरे साथ कुछ गलत किया है मैं उससे बदला लूं। बदले का विचार तब आता है जब आप प्रतिक्रिया करते हैं। कुछ लोग बहुत आक्रामक तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं। बदले के लिए लोग एक दूसरे की हत्या कर देते हैं। संसार में प्रतिशोध नामक एक मूर्खता पूर्ण विचार है। परन्तु यदि आप बदले के सूक्ष्म पहलू पर जायें तो यह क्या है? आपने क्या बदला लिया है? मान लें किसी ने आपको परेशान किया है और आप उस व्यक्ति पर नाराज हैं और आपने उस व्यक्ति की हत्या कर दी तो वास्तव में आपने उस व्यक्ति को बचा लिया है। उसे कुछ करना नहीं है, वह बस समाप्त हो गया है। बदला क्या है? बदला केवल तभी हो सकता है जब व्यक्ति दूसरे को मारने के विचार से छुटकारा पा ले। बदला जो हम सोचते हैं कि हम दूसरे व्यक्ति से ले सकते हैं बदला नहीं है क्योंकि बदले की भावना से किये गये कार्य का कुप्रभाव लौट कर हमीं पर होता है और हमें कहीं अधिक चोट पहुँचाता है।

ईश्वर के नाम पर इतना अधिक बदला लिया जा रहा है। केवल इसलिए कि लोग उस धर्म को नहीं मानते जिसे आप मानते हैं या वे जो आप कर रहे हैं उससे अलग कुछ कर रहे हैं। आप केवल लोगों को मार रहे हैं, उनका विनाश कर रहे हैं जब कि वे यह भी नहीं समझ पाते कि आप किस बात का बदला ले रहे हैं। बिना प्रतिशोध लिए यदि आप मामले को परमात्मा पर छोड़ देते हैं तो दिव्य शक्ति इसे अपने हाथों में ले लेती है तथा आपसे प्रतिशोध लेने वाले व्यक्ति जाति या संस्था को अच्छा पाठ पढ़ाती है। आप को चिन्ता करने की आवश्कता नहीं पड़ती। लोग बम रख रहे हैं और उससे हज़ारों बेकसूर व्यक्ति मारे जा रहे हैं। तो आप किस प्रकार का बदला ले रहे हैं? वे बदले के योग्य नहीं है? यह बदले की भावना बहुत से निर्दोष लोगो की हत्या करती है और निसन्देह इसकी प्रतिक्रिया आप पर होगी। आप इससे बाहर नहीं जा सकते है। यह बदले की बहुत लम्बी प्रतिक्रिया है। बरमूडा त्रिकोण के बारे में कहते हैं कि, बहुत से अश्वेतों को दास बनाकर ले जाया गया और वहां उन्हें डुबो दिया। उनकी आत्मायें भटक रहीं है, जो पास से गुजरने वाले लोगों को डुबो देती हैं। प्रतिशोध की भावना से किए गए हर कार्य की प्रतिक्रिया होती है। तो किसी भी तरह से आपको उस बदले की भावना से मुक्त होना है। इस विचार से मुक्ति पा लें। बिना प्रतिशोध लिए यदि आप मामले को परमात्मा पर छोड़ देते हैं तो दिव्य शक्ति इसे अपने हाथों में ले लेती है तथा आप से प्रतिशोध लेने वाले व्यक्ति, जाति या संस्था को अच्छा पाट पढ़ाती है। आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इन 25 वर्षों में मैं ने देखा कि लोग मेरे प्रति बहुत ही कठोर रहे है। कई संस्थायें, धर्म कहलाने वाले, सब प्रकार की वस्तुएं हमारे पीछे पड़े हैं। समाचार पत्रों को लें, उन्होंने हमें इतना परेशान करने की कोशिश की है। कोई बात नहीं, अभी तीन समाचार पत्रों के व्यक्ति जो भारत गये थे उनके वारंट निकले हुए हैं। यदि वे भारत गये तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जायेगा। मैंने कुछ नहीं किया। वे सारे अखबार अब दिवालिया हैं। हमने उस बारे में कुछ नहीं किया है। हम न तो वहां गये और कहा कि वो दिवालिया हो जाये। हमने कोई बदला नही लिया है। हम क्यों करें? हम परवाह नहीं करते कि इन लोगों ने हमारे साथ क्या किया है, मगर कानूनी तौर पर ये इस तरह से फंसे है कि उनके वारंट निकले हुए हैं और यदि वो भारत गये तो वे गिरफ्तार कर लिये जायेंगे। सारी फ्रेंच सरकार उनके साथ है, वे सभी इतना प्रयत्न कर रहें है मगर यह सजा उनके सिर पर है। अपने जीवन काल में ही उन्होंने यह दण्ड प्राप्त किया है। क्षमाशीलता ही सारी व्यवस्था को देखती है कि कैसे दूसरे व्यक्ति को सही रास्ते पर लाया जाये। एक बार आप बदले की इस भावना से बाहर आ जायें तो आप वास्तव में गहन शांति का अनुभव करते हैं क्योंकि यह शांति जो आपके साथ है, आपके अन्दर है यह अप्राकृतिक नहीं है। यह मानसिक नही है, यह आपके अन्दर घटित होती है। बहुत सी घटनाएं स्वत: ही घटित हुई हैं। टर्की में इंग्लैण्ड का एक लड़का था, उसने समाचार पत्रों के सहज के विरोध में कुछ कहा और वह सब छप गया। मगर अन्त

में उसने दूरदर्शन पर स्वीकार किया कि उसने जो भी कहा था वह गलत है। किसी ने भी ऐसा करने के लिए न तो उसे कहा और न उसे लिखा।

आपके दृष्टिकोण से आप अवश्य समझ लें कि आपने बदला लेने के किसी झंझट में नहीं पड़ना क्योंकि आप ईश्वर के साम्राज्य सम्बन्धित हैं। यह सरकार बेहद सतर्क है, अत्यन्त विशुद्ध, बेहद कार्यकुशल। आप सब ईश्वर के उस महान साम्राज्य से सम्बन्धित हैं जहां पर आप स्वयं को पूर्णरूपेण सुरक्षित समझें। जो व्यक्ति सुरक्षित हैं वो कभी भी नहीं डरता। आप अपने भय से भी मुक्त हो जाते हैं। मैं नहीं जानती कि आप इससे या उससे क्यों डरे हुए हैं, सेहत, परिवार, बच्चे, घर। सहजयोगियों को कोई चिंता नहीं है। यह सब कार्यान्वित होता है। हम चिंता क्यों करें? चिंता का यन्त्र अब समाप्त हो गया है। अब वह बेकार हो गया है। अब आप ऐसी स्थिति में हैं जहां आपके पास चिंता करने का समय नहीं है क्योंकि आप स्वयं का आनंद ले रहे हैं।

भय का लोगों पर इतना प्रभाव होता है कि भय के कारण उन्हें बहुत सी बीमारियां हो जाती हैं। विशेषतया बाईं ओर की बीमारियां। डरने के लिये क्या है? यह इस प्रकार से है कि आप धरती माँ को यह कहते हुए पीटें कि वहां साँप है। वहां कोई साँप नहीं है। मगर इसकी कल्पना करके आप बस चलते ही जाते हैं। यह मृग-मरीचिका या राक्षस का भय सब मिथ्या है। आपके लिए इसका अस्तित्व नहीं है। अंधेरे में चलते हुए आप आकृतियां देखते हैं, परन्तु वास्तव में वो होती नहीं। मगर मनुष्य का डर उसे इनके बारे में सोचने को विवश करता है। परिणामस्वरूप वह अपनी स्वतंत्रता खो देता है और बहुत से लोगों का दास बन जाता है। वह डरता है कि फलाँ व्यक्ति मुझे हानि पहुंचायेगा या परेशान करेगा।

डर की धारणा ने हमारे पारिवारिक जीवन को नष्ट कर दिया है। उदाहरणतया पत्नी यदि प्रभुत्व जमाने वाली हो या पति प्रभुत्व जमाने वाला हो तो डरने की कोई बात नहीं है। डर के द्वारा आप उनके हाथ में खेलते हैं। प्रभुत्व जमाने वाली पत्नी को मज़ाक में लें। यदि आप अपनी पत्नी या पति की उपस्थिति में मज़ाक नहीं कर सकते तो बेहतर है अलग से मज़ाक करें, 'ओह, उसे देखें' यह कहते हुए। यह आपका विशेष गुण्रा है कि आप अपने भय से पूर्ण रूप से मुक्त हो सकते हैं। अपनी पत्नी या पति से डरने का क्या कारण है? वह आपके साथ क्या कर सकता है? ज्यादा से ज्यादा वह आपको मार सकता है! तो क्या! आपको मरना तो है ही।

मौत का भय भी एक और बेवकूफी है। अभी आप जी रहे हैं। फिर आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं कि मृत्यु के बारे में क्या? बहुत से लोग मुझसे यह प्रश्न करते हैं। आप इसके बारे में क्यों जानना चाहते हैं? मैं आपको आज के बारे में बताती हूं बिलकुल अभी। यह भी एक दूसरा बेवकूफी पूर्ण विचार है कि हमें अपनी मृत्यु के बारे में पता चले और उसके बाद क्या होगा। एक बार आप मर गये तो आप समाप्त। आपको उसके बाद कुछ नहीं करना। तो फिर यह जानने की क्या आवश्यकता है कि आप कब मरेंगे, आपके साथ क्या होगा? जो कुछ भी होना है, होगा। हम जब सोते हैं तो नहीं पूछते क्या होगा?

व्यक्ति को जिस समय मरना है, तभी मरना है, क्योंकि जो भी पैदा होता है मरता है। मगर आप नहीं जानते कि आपको शाश्वत् जीवन प्राप्त हुआ है। आप कभी मर नहीं सकते। मृत्यु इस शरीर का मिट जाना नहीं है। मृत्यु तब है जब आप अपनी आत्मा का नियंत्रण पूर्णतया खो दें। एक बार आप आत्मसाक्षात्कारी हो जाते हैं तो आपके पास पूरा नियंत्रण है और यदि आप चाहें तो जन्म लेने के लिए जहां चाहें अपनी आत्मा को ले जा सकते हैं और बिना आपकी इच्छा के आपका जन्म न होगा। मैं जानती हूं कि बहुत सी महान आत्माओं ने, अपनी मूर्खताओं के कारण पतन तथा विनाशोन्मुख, इस समाज में साहसपूर्वक जन्म लिया है। अत: सहजयोगियों का मृत्यु से भयभीत होना हास्यास्पद है। अपनी मृत्यु के बारे में सोचने की क्या आवश्यकता है? आपके लिए मृत्यु जैसा कुछ नहीं है, क्योंकि आपको अमर जीवन प्राप्त हुआ है। ऐसा नहीं है कि आप इसी शरीर को कायम रखते हैं। आप अपने वस्त्र बदलते रहेंगे मगर आप जीवित हैं, आप सतर्क हैं और जानते हैं कि इस शरीर की अनुपस्थिति में भी आप सहजयोग और सत्य-कार्यों के लिए हर समय वहां पर उपलब्ध है। आपको अपनी उन्नत स्थिति के बारे में अवश्य पता होना चाहिए। आपका क्या कार्य है? आपके क्या विचार हैं? आपको क्या करना है? व्यक्ति को मृत्यु के विचार से अवश्य छूटना है क्योंकि मृत्यु का अस्तित्व आपके लिए नहीं है, समाप्त।

वे सब लोग जो मृत्यु से डरते हैं, बीमे करवाते हैं, सारा सिरदर्द। अन्तत: क्या होता है, जब आप जाते हैं तो यह सब सांसारिक वस्तुएं आप यहीं छोड़ जाते हैं। कोई भी नहीं है जो जाने वाली आत्मा के साथ थोड़ी सी मिट्टी भी ले जाये। मगर आप लोग क्योंकि निर्लिप्त हैं, इन भौतिक पदार्थों में आपका मोह नहीं होता आप पहले से ही इन्हें त्याग चुके हैं। भौतिकता से लिप्त न होने के कारण आपकी आत्मा स्वतन्त्र है। मृत्यु होने पर आप स्वयं को पूर्णत: स्वतन्त्र पाते हैं, इस स्वतन्त्रता का अनुभव करते हैं तथा निर्णय कर सकते हैं कि आपने क्या करना है। आपके अपने पथ प्रदर्शन में आपकी इच्छा कार्यान्वित होती है। आपको नहीं लगता कि आपने शरीर छोड़ दिया है। मृत्यु से भयभीत होने के स्थान पर उसका स्वागत करें क्योंकि मृत्यु के बाद आप स्वयं को अधिक स्वतन्त्र तथा सुखी पाएंगे। इस शीर के कारण संसार में होने वाली समस्याएं अब आपको न होंगी।

अब जब आप बिलकुल साफ बन गये, पूर्णरूप से धुल गये, आपका मस्तिष्क पूर्णरूप से बन्धनमुक्त हो गया है तो आप सुन्दर शीशे सम बन जाते हैं। इस दर्पण में, हम जिस समाज में रहते हैं, उसका सम्पूर्ण चित्र देख सकते हैं। उस सरकार की पूरी तस्वीर जो आप पर राज करती है। इतना साफ। उदाहरण के लिए आप किसी से पूछें तो वह कहेगा कि आपकी राजनीति क्या है? यदि मैं कहूं,

मेरी राजनीति है, मेरी कोई राजनीति नहीं है। वह कहेगा, क्या आपकी कोई राजनीति नहीं है। बिना राजनीति के आप कैसे रह सकते हैं। मेरे पास कोई राजनीति नहीं है। तो वे आपसे प्रश्न पूछते जायेंगे जो कि बहुत ही अनजाने हैं। मगर एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति के लिए यह बिलकुल दूसरी तरह है। एक आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति न केवल देखता है अपितु दिखाता है और स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। जिस प्रकार से लोग अपने समाज और देश को प्रतिबिम्बित करते हैं, मैं उससे हैरान हूँ। अत: पूर्ण पहचान ही खो गई है। आपको अधिक तादात्म्य नहीं लगता।

आप केवल देखते हैं कि उसमें क्या गलत है? आप यह देखना आरम्भ करते हैं कि आप कैसे मदद कर सकते हैं, आपको क्या करना चाहिए, आप उसे कैसे कार्यान्वित कर सकते हैं और उसका महत्व आपकी मुख्य बात बन जाती है। कल जिस प्रकार आप सभी झण्डे लाये थे। इन झण्डों के पीछे मैं देख सकती हूँ कि आप चाहते थे कि इन देशों में शांति फैले। उन्हें सहजयोग की सभी शान्ति और आनन्द मिले। कैसी अनुभूति है यह! यह स्वयं सहजयोगी बन जाना और एक कोने में बैठ जाने की तरह नहीं है। वे इसे उस राष्ट्र के लिए भी करना चाहते हैं जिसके साथ वे सम्बन्धित नहीं हैं। मगर सम्बन्ध के साथ उन्हें ऐसी गहरी अनुभूति है कि उन्हें यह कार्यान्वित करना है, उसे ठीक करना है, यह एक बिलकुल अलग प्रकार के व्यक्तित्व का आप विकास करते हैं।

यदि आप किसी को बतायें कि आप इस प्रकार क्यों करते हैं? इस प्रकार करने की क्या आवश्यकता है? नहीं, क्योंकि मुझे आखिरकार इस समाज में रहना है। मैं इस समाज से सम्बन्ध रखता हूं और जो मैं पसन्द करता हूं नहीं कर सकता। मगर जब आप अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं तो आप जो पसन्द करते हैं, कर सकते हैं क्योंकि आप जो नैतिक हैं वही पसन्द करते हैं, वह जो अच्छा है, रचनात्मक और सहायक है। आत्मसाक्षात्कार के बाद आप पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। यह सब प्रतिबन्ध ही वास्तव में आपको दास बनाते हैं। मगर आत्मसाक्षात्कार के बाद आप ऐसे मुक्त व्यक्ति बन जाते हैं कि कोई भी आपको दास नहीं बना सकता। उदाहरण के रूप में यहां बहुत से उपदेशक हैं जो उपदेश देते हैं कि आपको पीना नहीं चाहिए, आपको धुम्रपान नहीं करना चाहिए, आपको नशा नहीं लेना चाहिए। आपको यह नहीं करना चाहिए, आपको वह नहीं करना चाहिए। मगर यह समाप्त नहीं होता। यह सहायता नहीं करता। लोग संघर्ष करते हैं, हर वस्तु की कोशिश करते हैं मगर अन्तत: वे आत्महत्या करते हैं। वे उन आदतों से छूट नहीं पाते हैं। जबकि अब आप इतने शक्तिशाली बन गये हैं कि आपसे कुछ नहीं चिपक सकता है। बहुत से सहजयोगियों ने मुझे बताया है कि कैसे उनकी आंखें स्थिर हो गई हैं, किस प्रकार वे नैतिक बन गये हैं। कैसे वे इतने शुद्ध बन गये हैं। वे समझ ही नहीं पाते हैं। माँ यह आपकी पवित्रता है, यह आपने हमें दी है।

सहजयोग के बाद वही व्यक्ति हमें बताते हैं सारी स्थिति का मजाक उड़ाते हुए। उदाहरण के लिए मैंने कई सहजयोगियों को आपस में बात करते सुना है, "तुम देखो, मेरे देश में यह यह बेकार वस्तुएं हो रही हैं।" अन्य कहेगा, "कोई हमें नहीं हरा सकता। हमारे यहां स्थिति इससे भी बुरी है।" यह सहजयोगियों के बीच होने वाली बहुत ही साधारण प्रतियोगिता है। अत: हमें देखना चाहिए कि हम कितने पवित्र बन रहे हैं और इस पवित्रता में जो कुछ भी गन्दा है, जो इस पवित्रता को खराब कर रहा है वह हमें पसन्द नहीं करना चाहिए। हम भीतर से साफ हो चुके हैं, धुल चुके हैं और कोई अपवित्रता अपने अन्दर अब नहीं लेना चाहते। फिर मैंने यह भी देखा है कि लोग किस प्रकार दयालु बन गये हैं। यह देखना बहुत ही आश्चर्यजनक है कि लोग कैसे एक दूसरे के प्रति दयालु बन गये हैं। उदाहरण के लिए दो सहजयोगी थे जो एक-दूसरे से प्रसन्न नहीं थे। मुझे पता नहीं था कि उन्हें कैसे अनुभव कराऊं कि दूसरा सहजयोगी सही है। कोई बात नहीं, सब ठीक हो जाएगा। "नहीं, मुझे उसमें यह बात नहीं पसन्द" और दूसरा कहेगा, "अब मुझे उसमें यह नहीं पसन्द", अत: यह चलता रहा। वह बोला मुझे नहीं पसन्द। अत: मैंने कहा ठीक है, अब आप थोड़ी देर ध्यान करें, फिर ध्यान, ध्यान और मैंने कहा क्या तुम मुझे प्यार करते हो? एक बोला मैं आपको उससे अधिक प्यार करता हूं, मैंने कहा, "यह कठिन स्थिति है।" उन्हें कैसे समझाया जाये कि आप अपने प्यार को नहीं तोल सकते हैं, आप इसमें से चार्ट नहीं बना सकते। यह आपके अन्दर है और यदि आप किसी से प्रेम करते हैं तो आप उसका आनन्द लेते हैं। आप इसे न तो विशेष बना सकते हैं और न बढ़ा सकते हैं। यह इन दोनों भद्र पुरुषों के बीच हो रहा था और मैंने सोचा कि अब क्या किया जाये। वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और तब भी उनके बीच में कोई समझ नहीं है। अत: दिव्य शक्ति ने संभाल लिया, उनमें से एक अचानक बीमार पड़ गया। जब वह बीमार पड़ गया तो दूसरे ने उसके प्रति ऐसा अभूतपूर्व प्रेम अनुभव किया। यह कुछ ऐसा था कि कोई भी वर्णन नहीं कर सकता और वह रोगी के साथ 24 घंटे बैठा रहा। वह बीला यदि तुम्हें पैसे चाहिए तो मेरे पास हैं। वह स्वयं बहुत ही समझदार और सन्तुलित व्यक्ति था और उसने यह प्रेम और करुणा अतुभव की। मैं सोचती हूँ कि यह परमात्मा का खेल था जिसने उन्हें इतना नज़दीक ला दिया और ऐसी करुणा! अत: आपके अन्दर की दया की शक्ति इतनी है यह बहुत ही सूक्ष्म है, इसे आप नहीं देखते हैं। क्योंकि दिमागी स्तर पर मैं उन्हें बता रही थी, बहस करना, उन्हें शान्त करना। उससे कार्य नहीं हुआ। मगर जब इस करुणा कि शक्ति ने अचानक उनमें से एक कार्य करना आरम्भ किया तो दूसरे ने करुणा देखी, शुद्ध करुणा, और वे अच्छे मित्र बन गये।

आपको अपने अन्दर करुणा अनुभव होनी चाहिए। मैंने बहुत बार देखा है कि यहाँ पर बहुत से सहजयोगी हैं और कई बार मुझे उन्हें ठीक करना पड़ता है या कुछ कहना पड़ता है तुरन्त ही दूसरा

कहता है, ''मां क्या आप उसे क्षमा करेंगे'' मैने कहा, मैने उसे क्षमा कर दिया। मैंने कुछ भी नहीं किया, कृपया क्षमा करें मां, कृपा कर दें! मुझे सुनकर प्रसन्नता होती है कि एक सहजयोगी एक बिन्दु पर दूसरे की सहायता करता है। प्रसन्नता होती है इससे इससे पता चलता है कि आप केवल उदार ही नहीं अपितु करुणा से भरे हैं। अत: करुणा का यह स्त्रोत आपके हृदय में है, आपको केवल अपना हृदय खोलना है। यदि आप अपने हृदय को खोलते हैं तो वह सहस्रार को खोलने जैसा है। आप हैरान होंगे कि आप कैसे क्षमा करते हैं।

ऐसी बाते सुनने में आती हैं जो मुझे कई बार परेशान करती हैं कि लोग विभिन्न दल बना रहे हैं या अलग आश्रम बना रहे हैं और वे सामूहिकता में भी नहीं आते है आदि आदि। मुझे बहुत चिन्ता होती है। अब कभी इस बात की कि कुछ लोग सोचते हैं कि उनके अलग संस्था होनी चाहिए और वे सामूहिकता में क्यों रहें, आदि-आदि। यह निश्चित है कि ऐसे व्यक्ति ने सुहृदता की वह स्थिति अभी नहीं प्राप्त की है। एक जोड़ा था जो हर समय एक दूसरे से लड़ता रहता था। वे मुझे पत्र के बाद पत्र भेजते रहते थे, और टेलीफोन पर टेलीफोन। मेरी समझ में नहीं आता था कि उनके साथ क्या करुँ। मैंने सोचा बेहतर है वह तलाक ले लें और इसे समाप्त करें। मैंने उन्हें अलग से बताया कि बेहतर है कि आप तलाक ले लें आपकी जो शिकायतें हैं वे ऐसी है कि हल नहीं हो सकती। मैंने कहा, ''तुम कह रही हो कि मेरा पति मुझे अधिक समय नहीं देता है, वह हमेशा बाहर रहता है और वह मेरे साथ अच्छे क्षण व्यतीत नहीं करता है, हम बाहर नहीं जाते है। पति बोला कि वह हमेशा मुझे परेशान करती है, कि मैं उसे बाहर अवश्य ले जाऊँ, कि मैं यह करुँ, मैं वह अवश्य करुँ। मैं यह करना चाहता हूँ मगर मैं नहीं कर सकता। तो मैने कहा, ''तलाक लेकर तो आप कुछ भी न मांग पाओगी। तुम हमेशा के लिए अपने पति को खो दोगी। तो तुम ऐसी चीज़ क्यों करना चाहती हो? एकदम से यह सुहृदता कार्य करने लगी। फिर मैने कहा कि मान लो तुम में से एक कल बीमार पड़ जाये तो कौन एक दूसरे को देखेगा। इसने उन्हें एकदम से द्रवित कर दिया। आप जानते हैं कि सहजयोगियों के जीवन में ऐसी छोटी-छोटी घटनायें आती है कि अचानक उनका हृदय खुल जाता है और इससे वे एक दूसरे से तथा सामूहिकता से दूर करने वाले विचारों से निपट लेते हैं।

आपको एक दूसरे को प्रेम करना, एक दूसरे की परवाह करना, एक दूसरे से मज़ाक करना और एक दूसरे के साथ नाचते हुए देखना मुझे अत्यन्त आन्नद देता है। इसका मैं सब से अधिक आनंद लेती हूँ। मैं अपने इस विचार से हटना नहीं चाहती, इस सत्य के बावजूद भी कि कई बार यह मानना कठिन हो जाता है कि सहजयोगी इस प्रकार कैसे आचरण कर लेते हैं और आत्मसाक्षात्कारी व्यक्तियों के बीच में विरोध और दूरी पैदा करने की कोशिश करते है, क्योंकि विश्वभर से आत्म साक्षात्कारी व्यक्ति, एक दूसरे का आदर करते है। केवल आदर ही और प्रेम ही नहीं दूसरे आत्मासाक्षात्कारी व्यक्ति के लिए कभी बुरा नहीं बोलते। कभी नही, मैं नहीं जानती कि आप सन्तों के व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानते है या नहीं मगर भारत में वे जैसे एक दूसरे के प्रति व्यवहार करते हैं, एक दूसरे का ख्याल रखते हैं वह बहुत ही सुन्दर तथा श्रेष्ठ है। वे दूसरों की भावनाओं का ख्याल केवल इसलिए नहीं रखते कि वे उनकी मन चाही बात कहते हैं, या उनकी इच्छा के अनुसार कार्य करते हैं, या वे कोई विशेष व्यक्ति है। जब आप सहजयोग में आते हैं तो आप अपनी विशेषतायें खो देते है। उनमें से कुछ सोचते हैं कि वे बहुत विशेष है। मान लीजिए मैं किसी औरत को अपने पैरों में आल्ता लगाने बुलाऊँ तो वह सोचने लगेगी कि वो कोई खास है। मगर मैंने उसे बुलाया क्योंकि उसका आज्ञा पकड़ा है। जब किसी ने मुझे बताया, ''मां, वह सोचती है कि वो विशेष है।'' मैंने कहा, सच! उसको ऐसा क्यों सोचना पड़ा, ''क्योंकि आपने उसे आल्ता लगाने को बुलाया'' मैने कहा, ''मैने उसे बुलाया क्योंकि उसकी आज्ञा इतनी खराब थी कि वो सभी को परेशान करेगी। अत: मैं उसे साफ करना चाहती थी। या तो मैं सम्भव शब्दों में उसे साफ बता देती कि तुम बहुत अहंकारी हो, भयंकर। वरना वह नहीं समझेगी। यह इतना आश्चर्यजनक है।

एक औरत, जो अपने ससुराल वालों और भारत में सभी के लिए बहुत खराब थी, वह मुझे देखने आई। मैने उसे डाँटा, ''तुम्हें ऐसा करने का क्या अधिकार है। तुम्हारे पिता इतने जातिवादी है मगर तुमने उनके खिलाफ़ कुछ नहीं कहा। तो फिर तुम इन लोगो के खिलाफ़ क्यों कह रही हो?'' वह बाहर चली गई और बोली, ''ओह! देखो माँ ने मुझे बुलाया है। किसी को उन्हें देखने की इज़ाज़त नहीं है'' मैने कहा, ''यह क्या है। कई बार लोगों के साथ यह बहुत ही अजीब स्थिति हो जाती है। वे सोचते हैंकि वे कुछ खास हैं और वे स्वयं को कुछ खास बनाना चाहते हैं। यह वास्तव में कठिन होता जा रहा है।

अब किसी ने कुछ किया है उसके प्रति प्रेम और आभार दिखाने के लिए, यदि मैं उस व्यक्ति को उपहार देती हूँ या उसमें दिलचस्पी दिखाती हूँ तो वह सोचना आरम्भ कर देगा कि वह कुछ विशेष है। यह बहुत ही मुश्किल परिस्थिति है। मैं अपेक्षा करती हूँ कि यदि मैंने किसी व्यक्ति के लिए कुछ अच्छा किया है या किसी भी तरीके से उसके प्रति अपना प्रेम दिखाया है तो उस व्यक्ति को बहुत अच्छा सहजयोगी बनना है, बहुत ही विनम्र, ईमानदार और प्रेममय व्यक्ति के रूप में, अन्यथा इसका कोई अर्थ नहीं है। किसी के लिए अच्छा बनने का कोई उपयोग नहीं है। इसका अर्थ है वह व्यक्ति नर्क में कूद गया। अत: यह भी विशेषता का एक अन्य विचार है कि उन्होंने अपने विशेषता के बोध को खो दिया है। बूंद जब सागर बन जाती है तो बन जाती है, अब वह बूंद नहीं रह गयी है? यदि कोई सोचता है कि मैं विशेष व्यक्ति हूँ तो समझ लेना चाहिए कि अब वह सागर नहीं रहा। आप अभी भी बूँद है। क्योंकि जब तक आप बूँद है आप कैसे अनुभव कर सकते हैं कि मैं कुछ विशेष हूँ। अत: आपने अपनी

विशेषता खो दी। आपने इसे खो दिया है क्योंकि विशेषता के यह सब विचार आपके अतीत से आते हैं। एक बार मैं एक स्त्री से मिली, वह बहुत ही रूखी, अहंकारी और घमण्डी थी। यह दिल्ली में था जहाँ पर लोग अपने पति की नौकरी के प्रति बहुत सतर्क हैं आदि-आदि। मुझे अपने पति का पद भी नहीं मालूम था।

मैं बोली, ''तुम्हें क्या परेशानी है? तुम इतनी घमण्डी क्यों हो? क्या परेशानी है?

वह बोली, ''मैं फला व्यक्ति की पत्नी हूँ।''

मैने कहा, ''तुम पत्नी हो या पति।''

उसने मुझ से पूछा, ''तुम यहाँ पर क्या कर रही हो।''

मैं बोली, ''मैं गृहणी हूँ'' तभी मेरे पति वहाँ आये।

वह कहने लगी, ''क्या तुम इन्हें जानती हो।''

''हाँ'' मैने कहा, ''क्यों?'' मैंने सोचा शायद यहाँ भी कुछ गड़बड़ है।

उसने पूछा, ''नहीं, मैं केवल यह पता लगाना चाहती हूँ कि तुम इन्हें कैसे जानती हो?'' मानो मैं कोई अपराधी थी।

मैने उत्तर दिया, ''ये मेरे पति हैं,''

''अरे, हे ईश्वर यह तुम्हारे पति हैं?''

''क्या हुआ'' जैसे उसे किसी साँप ने डस लिया हो।

शायद उसका पति मेरे पति से बहुत छोटी स्थिति में था। यह विशेष होने के तुच्छ विचार सहजयोग में पूर्णरूप से त्यागने होंगे। दिमागी तौर पर नहीं। मानसिक रूप से यदि आप कह रहे हैं, ''मैं विशेष नहीं हूँ, मैं विशेष नहीं हूँ'' मंत्र की तरह, तो आप और बन जायेंगे। क्योंकि आप कहेंगे, ''मैंने मन्त्र को 23000 बार कहा है, मेरी तरह कौन कह सकता है?'' अत: यह विचार कि मैं विशेष हूँ। मैं कुछ महान हूँ, मैं समूह से कुछ बाहर हूँ, मैं दूसरों से कुछ ऊपर हूँ, एकदम समाप्त हो जाता है। जैसे मैने कहा कि आप सागर में बूँद की तरह हैं, आपको सागर बनना है, किन्तु आप तो बूँद भी नहीं है। किसी तुलनात्मक मूल्य व्यवस्था के लिए, यहाँ पर कोई तुलनात्मक मूल्य व्यवस्था नहीं है'' जिससे आप कह सकें कि मैं श्रेष्ठ हूँ और वह निम्न है। इस सब ने विश्व की सभी परेशानियों को पैदा किया है। भारत की जाति व्यवस्था को आप देखें। पश्चिम की सामाजिक व्यवस्था, पश्चिम में प्रजातिवाद भी आत्मचेतना के कारण आया है कि मेरा धर्म बेहतर है, तुम्हारा बेकार है। हम उत्तम हैं। इस सबने परेशानियाँ पैदा की है। इसने कुछ अच्छा नहीं किया है। यह असफल, असफल और असफल रहा है। अत: सहजयोग में इस बीमारी को और अधिक न लायें। कि मैं बेहतर हूँ, मेरा देश बेहतर है। यह विशेषता आप छोड़ दें और अपने व्यक्तित्व की वास्तविक सुन्दरता दिखायें। इसके लिए आपको किसी विशेष त्वचा, विशेष शरीर या मोहक रूप की आवश्यकता नहीं है, आपको सुन्दर हृदय की आवश्यकता है, और मैं आपको बताऊँ यह सुन्दर हृदय है जो आकृष्ट करता है। और कुछ नहीं। यह सुन्दर हृदय ही आप पाना चाहते हैं। मैं इस प्रकार के बहुत से लोगों को जानती हूँ, एक व्यक्ति था यहाँ पर जिसने अपन पहली पत्नी को इसलिए तलाक़ दिया कि वो शायद दिखने में सुन्द नहीं थी, बदसूरत या जो कुछ भी। फिर उसने दूसरी सुन्दर स्त्री विवाह किया। और वह घर से भाग गया, मैंने उससे पूछा, ''क्यों पहली औरत तो तुम्हें पसन्द नहीं थी क्योंकि वह बदसूरत थी प तुम इससे क्यों भाग रहे हो। वह बोला, ''इसमें हृदय नहीं है।'' आपक पास अति महान, उदार, सुन्दर तथा धार्मिक हृदय है। आपने इसे दिव उपहार के रूप में पाया है और आपको इसका आदर अवश्य करन चाहिए। आपको इस पर गर्व होना चाहिए और इसका आनन्द लेन चाहिए। प्रकृति जिस प्रकार अपना आनन्द लेती है इसी प्रकार आ भी अपनी उदारता का आनन्द लें। सदा छोटी-छोटी चीज़ों के लि सतर्कता, सदा दूसरे लोगों को सुधारते रहना तो सिरदर्दी है। स्वयं व सुधारना तथा स्वयं पर हंसना ही सर्वोत्तम है। सभी लोगों में कु न कुछ कमियां होती हैं। मुझमें भी हैं और मैं उनका मज़ा लेती क्योंकि प्रयत्न करके भी मैं सदा भूल जाती हूँ। उदाहरणार्थ यह चश मैं सदा भूल जाती हूँ। चलने से पूर्व मैं याद करती हूँ कि मुझे इनक आवश्यकता हैं, मुझे ये ले जाने चाहियें, इनकी याद रखनी चाहिए परन्तु सदा भूल जाती हूँ। मैं आपको बता दूं कि मुझे गणित अच्छ आता है फिर भी मैं गिनती नहीं कर सकती। मुझे चैक लिखना नह आता। क्या आप विश्वास करेंगे? आप लोगों को मेरे लिए चैक लिख पड़ते हैं।

इन सतर्क लोगों को मैंने देखा है, वे सदा असफल होते हैं क्योंकि उनका मस्तिष्क उन्हें धोखा देता है। एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि आपकी कार का आकार इतना है अत: गैराज़ का आकार इतना होन चाहिए। उसके कहे अनुसार जब हमने गैराज़ बनवाया तो कार उस न जा सकी। मैंने कहा इतना सतर्क वास्तुकार तथा पुरस्कार प्राप्त विख्यात व्यक्ति ऐसी गलती कैसे कर सकता है। मैं समझ न पायी उसने कहा कि अब आप एक छोटी मोटर खरीद लें। मैंने कहा इ गैराज़ को अब तो ठीक से नाप लें, कहीं अब जो गाड़ी मैं खरीदूं व भी इसमें न आए।

इतने विशेष और सतर्क! इन छोटे-छोटे फूलों को देखें, ये स्वत ही बढ़ रहे हैं। सभी को सूर्य किरणें मिलती हैं और सभी प्रसन्न हैं ये सतर्क लोग अपने ही लिए सतर्क हैं और अन्तत: उन्हें यह बा समझ आ जाती है।

सतर्कता का विवेक तुमने खो दिया है। मैं एक सहज योगि को जानती हूँ जो दुकान चलाती थी, उसने कहा, ''श्री माता जी इ दुकान पर रखी हर चीज़ की कीमत याद थी। परन्तु आत्मसाक्षात्क पाने के पश्चात मैं सब भूल गई हूँ।''

''तो तुम प्रसन्न हो या अप्रसन्न?''

''मैं प्रसन्न हूँ।'' उसने कहा।

मैने पूछा, ''क्यों?''

वह कहने लगी, ''क्योंकि मुझे अब बहुत लाभ हो रहा है।

लाभ कमाना ही तो मुख्य बात है। सभी चीज़ों को याद रखने का क्या लाभ है। कोई पेड़ सुव्यवस्थित नहीं है। अव्यवस्थित होकर भी वह व्यवस्थित है। कुछ पत्ते इधर हैं और कुछ उधर, कुछ डालियां एक ओर हैं और कुछ दूसरी ओर। कोई व्यवस्था नहीं। आयोजित रूप में तो आप मिलिटरी बन जाएंगे। सहजयोग में कोई आयोजन नहीं है। हम समय आदि सभी प्रकार की व्यवस्थाओं से ऊपर हैं। हमारा आन्तरिक सामंजस्य ही हमारी व्यवस्था है। इन दो हाथों की तरह–इनके अन्दर कोई व्यवस्था बनी हुई नहीं–फिर भी ये चलते हैं। बौद्धिक व्यवस्था का बनाया जाना गलत है तथा सहजयोग के विपरीत। कुछ लोगों ने मुझे लिखा कि श्री माता जी हम आपके लेखे हुए का अनुवाद करना चाहते हैं–आदि-आदि। मैंने कहा इसे 'भूल जाइए'', क्योंकि यदि आप योजना बनाने लगेंगे तो आयोजन के चंगुल में फंस जाएंगे। फिर आपको योजनानुसार चलना पड़ेगा–''यह प्रणाली अच्छी है, वह प्रणाली अच्छी है। ऐसा क्यों न कर लें?''

पश्चिमी देशों के लोग विशेषत: क्रमबद्ध हैं। कांटे छुरियों के हिसाब से लोग खाने बनाते हैं कि क्या खायें और क्या न खायें, यह तो अति है। खाना यदि खाना है तो सीधे हाथों से खायें। क्रमबद्धता की कोई ज़रूरत नहीं। ये सब नियम बन्धन बहुत अधिक हैं, इन्हें कम करने का प्रयत्न करें। परिणाम स्वरूप उन्हें संस्कृति विरोध मिला–एक अन्य-प्रकार की मूर्खता। जो लोग नई प्रणाली बना रहे थे वे कहने लगे कि हम अब हिप्पी बन गए हैं। अब उनके बाल बड़े और जुंओं से भरे होने चाहिए। कोई वैचित्र्य नहीं है। सभी हिप्पी एक जैसे हैं, आप उनमें भेद नहीं बता सकते। एक हिप्पी जैसे करता है सभी बिना सोचे-समझे वैसे ही करने लगते हैं। वे व्यक्तित्व की बातें करते हैं। परन्तु व्यक्तित्व कहां है? भेड़चाल ही फैशन बन जाती है।

भारत में ''अत्यन्त फैशनेबल'' का अर्थ है अत्यन्त मंहगा तथा अत्यन्त सुन्दर। अत्यन्त श्रेष्ठजन, अत्यन्त फैशनेबल अर्थात सभी उसे पसन्द करते हैं। चाहे ये कोई मामूली चीज़ हो–यह फैशनेबल है। आप्त। यह फैशन है, का अर्थ है कि न आपके अपने कोई विचार , न निजी सूझ-बूझ और न व्यक्तित्व। सहजयोग में आप किसी फैशन नहीं बंधे होते। आप को जो पहनना पसन्द है पहनें। जो करना चाहें करें। लेकिन तब आप स्वयं को अनुशासित करने लगेंगे। आप स्वयं गुरु, स्वामी बन जाएंगे और केवल अच्छे, सभ्य और देव-प्रिय कार्य करेंगे। आप ऐसा ही करेंगे क्योंकि अब आप सजयोगी हैं। इस प्रकार जीवन अत्यन्त सहज बन जाता है। आपको न आए की चिन्ता होती न गए की। किसी चीज़ को देखते ही आप सोचते हैं कि इसे किसी अन्य के लिए रख लें। मुझे ऐसा ही करना चाहिए। मेरे पास एक बड़ी अंगूठी थी। मैं सोचने लगी कि किस की अंगुलियां मोटी हैं जिसे मैं यह अंगूठी दे सकूँ। मैं सब की अंगुलियां देखने लगी। यदि आप सहजयोगी न होते तो अंगूठी को कटवा कर कुछ सोना बेच देते या उसका नग निकाल लेते। आप सभी प्रकार की बातें सोचते पर अंगूठी किसी को भेंट करने की बात आपको न सूझती। क्यों न यह किसी अन्य को दे दी जाए? बुराई क्या है? यह तो सहजयोग में ही सम्भव है। मैने देखा है कि लोग एक दूसरे के प्रति अत्यन्त सुहृद एवं मधुर है, दूसरे व्यक्ति की इच्छानुसार चीज़ खरीद कर उसे दे देते हैं। या कहते हैं, ''ओह मेरे पास एक है, दूसरी मैं किसी को दे दूँ।'' दूसरों के विषय में सोचते हुए वे सदा ऐसा ही करते हैं। मैं क्या दूं? मैं क्या करुं? यह आपके अन्तर्निहित आनन्द तथा सहृदता की अभिव्यक्ति है। भौतिक पदार्थों का उपयोग आप सदा इसी के लिए करते हैं। कैनाडा में किसी के घर चोरी हो गई तो उसने मुझे लिखा ''परमात्मा का शुक्र है कि मेरा घर स्वच्छ हो गया है। मेरी समझ में न आता था कि मैं इसका क्या करुं। इसमें इतना कबाड़ा था।'' तो इस प्रकार का दृष्टिकोण बन जाता है कि यदि आपने देना है तो अपने प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए किसी सहजयोगी को दें। पर प्राय: लोग इसके विपरीत करते है। घर के सारे कबाड़े को भेंट कर देते हैं। पर सहजयोगी हो जाने पर आप अति-सुन्दर हो जाते हैं, एक फूल की तरह जो अपनी सुगन्ध सदा दूसरों को देना चाहता है। आप भी सदा अपनी सुहृदयता, प्रेम, स्नेह तथा सुरक्षा की सुगन्ध दूसरों को दें।

हम कहते हैं कि यह नया-युग है, परन्तु मेरा कहना है कि मेरे सम्मुख मानव की नई जाति है और इस नवीनता के बहुत से पहलू हैं जो वास्तव में हीरों के समान चमकते हैं। आपको मेरा यही आशीर्वाद है कि आप इसमें गहरे उतरें और अधिकाधिक महान बनें। कभी न सोचें कि आप अन्य लोगों से महान हैं, या विशेष हैं। इस तरह का दृष्टिकोण आपके लिए सुखद होगा। हो सकता है किसी ने आपको कष्ट पहुँचाया हो। कोई बात नहीं। किसी ने आपको डांटा हो–कोई बात नहीं। आपकी सामर्थ्य क्या है? दूसरों को प्रेम करना तथा उनके प्रति करुणामय होना। मैं हैरान हूँ कि छोटी-छोटी समस्याओं तथा अच्छी बातों के बीच किस प्रकार ये 25 वर्ष बीत गए हैं। परन्तु इन सब चीज़ों ने कभी मुझे परेशान नहीं किया। कभी-कभी मैं नाटक करती थी कि मैं फलां बात के लिए नाराज हूँ। मैं वो बातें कह दिया करती थी जो मैं सामान्यत: न कहती क्योंकि ऐसा करना आवश्यक होता था। एक बड़े जल-पोत पर बैठे हुए हम कह सकते हैं कि दिव्य प्रेम की बुलंदियों को हमने पा लिया है और व्यक्ति को इसी का ही आनन्द लेना है। किसी व्यक्ति में यदि वह पावन प्रेम और सुहृदयता है तो वह इसे अन्य लोगों को भी दे सकता है। इस प्रेम का सौहर्द अत्यन्त सुन्दर है, शब्दों में इसका वर्णन नहीं हो सकता। जैसे कल मैं बोल ही न पाई! अपनी भावनाओं को मैं किन शब्दों में अभिव्यक्त करती? मैने सोचा कि जिस प्रकार आप लोगों ने सहजयोग को समझा और स्वीकारा है उन गहन भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अभी तक शब्द ही नहीं बने।

परमात्मा आपको धन्य करें।

चिकित्सक सम्मेलन

सेंट पीटर्सबर्ग, रूस 14-4-1994

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी जी का प्रवचन

(सारांश)

मैं आश्चर्य चकित हूं कि वैज्ञानिक नैतिकता की बात कर रहे हैं, यह असाधारण बात है केवल रूस के लोग ही ऐसा कर सकते हैं। विज्ञान क्योंकि निनैतिक (Amoral) है इसे अध्यात्मिकता से कुछ नहीं लेना देना। परन्तु मैं देख रही हूं कि आप लोग इतने विकसित हैं कि आप अध्यात्मिकता के विषय में जानना चाहते हैं। अध्यात्मिकता तत्व विज्ञान है। अब विज्ञान और वैज्ञानिक खोजों में नैतिकता विवेक आ गया है और वे लोग महसूस कर रहें हैं कि मानव में ऐसे जीन हैं जो मानव को परिवर्तन की अवस्था तक ले जाते हैं।

विशेषत: दो जीन हैं जो आपकी नैतिकता की देखभाल करते हैं। एक जीन परिवर्तन होने से हम मां के प्रति अपराध करते है अर्थात हम अनैतिक कार्य करते हैं, वे सभी कार्य जो आत्मघात हैं। आत्मघात को ही अनैतिकता कहते हैं। जब मानव अपने पिता के प्रति अपराध करता है तो उसकी दूसरी जीन परिवर्तित होती है। जब हम आक्रामक, हिंसक होते हैं, चोरी करते हैं या कानून विरोधी अनुचित कार्य करते हैं तब यह परिवर्तन होता है। इन दोनों जीन में परिवर्तन होने से व्यक्ति सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य करने लगता है, वह या तो अपना नाश करने लगता है या अन्य लोगों का। परमात्मा का बहुत-बहुत धन्यवाद है कि चिकित्सा विज्ञान में लोग जीन तक पहुँच गये हैं। मुझे विश्वास है कि मानव में परिवर्तनशील इन दोनों जीन को भी ये खोज निकालेंगे। नैतिक जीवन की परम्परा से ही इन्हें सुरक्षित रखा जा सकता है। प्रजातन्त्र देशों में अवांछित स्वतन्त्रता के कारण लोग पूरी तरह भटक गये हैं। इन दोनों जीनों में इतना परिवर्तन आया कि लोग समझ ही नहीं पाते कि वे गलत कार्य कर रहे हैं। एक प्रकार से विज्ञान ने दर्शाया है कि इसकी सीमाओं से बाहर जाने पर व्यक्ति में प्रति-क्रियाएं हो सकती हैं। विज्ञान द्वारा अविष्कृत चीजों के बनाने पर जब कोई सीमा नहीं रहती तो लोग एटम बम, हाइड्रोजन बम और इसी प्रकार की अन्य चीजों को बनाते चले जाते हैं। आज कल बम बनाने पर रोक लगाने के लिए एक बहुत बड़ा आन्दोलन चल रहा है। वैज्ञानिक प्रगति में आरम्भ हुई आक्रामकता बहुत दूर तक चली गई हैं। इन्होंने बहुत सारे लोगों पर प्रभुता जमाई और बहुत लोगों का विनाश किया। दूसरा भाग जो कि मां के प्रति अपराध है वहां लोगों ने नशे, शराब, पर स्त्रीगमन और सभी प्रकार के अनुचित कार्यों को अपना लिया। अमेरिका में आप समलैगिंकता के विरुद्ध बात नहीं कर सकते क्योंकि वहां पर समलैंगिक यौन सम्बन्धों वाले लोगों ने क्लिंटल को जिताने के लिए वोट दिये। प्रतिक्रिया स्वरूप एड्स फै गई। ये लोग सोचते हैं कि इन्होंने बहुत बड़ा कार्य किया है और स्व को शहीदों सम समझते हैं। उनके अहम् को चोट लगी है, फिर भ वे अपनी गलती को स्वीकार नहीं करना चाहते कि उन्हीं के कार ये भयंकर रोग (एड्स) फैला।

परन्तु ये जीन कौन बनाता है और कौन इन्हें परिवर्तन शी करता है? विज्ञान के पास अभी तक इसका कोई उत्तर नहीं है। य आप अपने अन्दर स्वयं इस यंत्र रचना को देखते हैं। हमारे अन्द सृजित यह अत्यन्त सूक्ष्म प्रणाली है। पर आप सब वैज्ञानिक लो बैठे हैं, आपको चाहिए कि अपने मस्तिष्क खुले रखें। आज जो कु मैं आपको बता रही हूं वह आपके सम्मुख एक परिकल्पना सम है यदि यह सत्य है तो निष्कपट व्यक्तियों की तरह आप इसे स्वीका करें क्योंकि यह आपके लिए व्यक्तिगत रूप में, आपके देश औ पूरे विश्व के लिए हितकर है। चित्र में आप एक त्रिकोणाकार अस्थि देख रहे हैं, यह "सेक्रम" कहलाती है यूनानी लोग जानते थे कि यह पवित्र अस्थि है। शुद्ध इच्छा केवल इसी अस्थि में विद्यमान शेष सभी इच्छाएं अशुद्ध हैं। आज आप एक घर खरीदना चाहते है फिर एक कार, फिर हैलिकाप्टर, इस प्रकार आप खरीदते चले जा हैं परन्तु कभी सन्तुष्ट नहीं होते। अर्थशास्त्र के अनुसार इच्छाएं प्राय सन्तुष्ट नहीं होतीं। हमारे अन्दर यह शुद्ध इच्छा है, आपको इसक ज्ञान हो या न हो। यह शुद्ध इच्छा है क्या? आत्मा बनने की इच्छ ही शुद्ध इच्छा है। आप यह शरीर, मस्तिष्क, बुद्धि भावनाएं और अह नहीं है आप पवित्र आत्मा हैं। विकास प्रक्रिया में आप एक ऐसी अवस्थ में पहुंच गए हैं जिसे हम मानव कहते हैं। परन्तु यह इस यात्रा क अन्त नहीं है। विज्ञान में भी आप कोई सत्य खोज निकालते है पर आपके बाद कोई अन्य आ कर कहता है कि यह बात ठीक नहीं है

पूर्ण सत्य को हम नहीं जानते। यदि हमने पूर्ण सत्य को जा होता तो ये सब झगड़े, लड़ाईयां और युद्ध न होते। यह तत्व विज्ञा है। और मेरे देश में (भारत) हज़ार वर्ष पूर्व इसका ज्ञान था। मैने मा इतना किया है कि मैं इस ज्ञान को जन-जन तक ले आई हूं। या कोई महान बात नहीं है। मानवीय समस्याएं विश्व समस्याओं को जन्म देती हैं और ये सारी सांसारिक समस्याएं इन्हीं केन्द्रों की देन है क्योंकि ये केन्द्र ही हमारे आधार हैं। ये केन्द्र हमारे बायें और दायें को का करते हैं। बायां और दायां अनुकम्पी एक ही कार्य नहीं करते। वे द

र्णतया भिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। मध्य में परा अनुकम्पी नाड़ी न्त्र है। यह तत्व विज्ञान है। चिकित्सको को यह बताने की आवश्यकता हीं कि दौड़ते हुए हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। खतरे के समय नुकम्पी गतिशील हो जाते हैं। परन्तु हृदय को सामान्य स्थिति में राअनुकम्पी ही लाता है। दायां और बायां तन्त्र मस्तिष्क की चोटी क पहुँचते हैं और बायां अनुकम्पी हक तन्त्रिका को पार करके गुब्बारे सी एक चीज़ की सृष्टि करता है। बायीं ओर की गतिविधियों से आपको बन्धन प्राप्त होते हैं जिन्हें हम मनस (Psyche) कह सकते ं, यद्यपि यह भद्दा शब्द है।

मान लीजिये एक मां अपने बच्चे को दूध पिला रही है, जब ह उसे अपने से दूर करती है तो उस बच्चे को अच्छा नहीं लगता और इस प्रकार अहम् को पसन्द आरम्भ होती है। तब मां बच्चे को ांटती है, "ऐसा मत करो।" इस प्रकार बन्धनों की पहली रेखा का ारम्भ होता है। अत: हम या तो बन्धन या अहम् ग्रस्त रहते हैं। हम ह सुन्दर फूल देखते हैं जो कि चमत्कार है, क्या ऐसा नहीं है? इन ूलों का सृजन कौन करता है? आप यदि किसी चिकित्सक से पूछें के हृदय को कौन चलाता है, तो वह कहेगा कि यह स्वचालित नाड़ी णाली है। परन्तु यह "स्व" (Auto) कौन है? इस प्रश्न का उत्तर ी नहीं दे सकते। अब त्रिकोणाकार अस्थि में स्थित कुण्डलिनी आपकी ां है, आपकी व्यक्तिगत मां है। यह आपके विषय में सब कुछ जानती ै, यह चिकित्सक है, मनोवैज्ञानिक है और वैज्ञानिक भी। यह सोचती ै, समझती है, और सर्वोपरि प्रेम करती है। आप सब में यह शक्ति ै। जागृत होने पर यह ऊपर के छ: चक्रों में से गुजरती है। यह ह चक्र आपके शरीरिक, भावनात्मक मानसिक और आध्यात्मिक स्तित्व के लिए उत्तरदायी है। दूसरा केन्द्र स्वाधिष्ठान कहलाता है। ौतिक रूप में यह महाधमनी चक्र के रूप में प्रकट होता है। आज म केवल एक चक्र के बारे में बात करेंगे और आप आश्चर्य चकित ोगें कि केवल इसी एक चक्र को जागृत कर लेने से बहुत से रोगों ा निदान हो सकता है। यह चक्र क्योंकि गतिशील है और संकुचित ी हो सकता है। इसका कार्य कमल की तरह से है। इसका कार्य जगर, अग्नाशय, प्लीहा, गुर्दे और मुख्य आंत की देखभाल करना ै। इसका एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य चर्बी को धुंधले सफेद रंग के ोषाणुओं में परिवर्तित करना है। वैज्ञानिक लोग इस तथ्य तक नहीं हुंच पाये हैं। अत्याधिक सोचने वाला, भविष्य की चिन्ता करने वाला, ोजनाएं बनाने वाला व्यक्ति इन धुधंले सफेद कोषाणुओं की ऊर्जा ा उपयोग करता है। यह चक्र वांछित ऊर्जा प्रदान करने के लिए चेन्तित हो उठता है। और आवश्यकता अनुसार ऊर्जा न प्राप्त होने र शरीर के ऊपर लिखे गए अवयव इस ऊर्जा से वंचित रह जाते ं। पहला आक्रमण जिगर पर होता है। जिगर का कार्य शरीर के रक्त े विष को दूर करना होता है। मैं सामान्य बात कर रही हूँ। इस प्रकार जगर के अन्दर गर्मी इकट्ठी हो जाती है। जिगर के अन्दर जहर भर जाने से व्यक्ति पतला होने लगता है। उसका स्वभाव उग्र हो जाता है। उसे चर्म रोग भी हो सकते हैं, शरीर के अन्य अवयवों की ओर भी यह गर्मी फैलने लगती है क्योंकि ये अवयव भी प्रभावित होते हैं; जब यह गर्मी अग्नाशय में जाती है तो लोगों को मधुमेह नामक रोग हो जाता है। मधुमेह केवल भविष्यवादी लोगों को होता है जो कुर्सी पर बैठ कर योजनाएं बनाते रहते हैं। मेरे देश के किसान एक कप चाय में छ: चम्मच चीनी पीते हैं परन्तु उन्हें मधुमेह नहीं होता क्योंकि जो भी कुछ वे कमाते हैं उसे खर्च करके आराम से सोते हैं। पश्चिमी देशों में इस रोग का बाहुल्य है।

पश्चिमी लोगों का छोटी-छोटी चीज़ों के लिए भी बीमा होता है। बीमे के लिए यह पागल दौड़ है। प्लीहा महत्पूर्णतम है। रूस के विषय में तो मैं नहीं जानती परन्तु अन्य पश्चिमी देशों में लोग रात को बहुत देर से सोते हैं। उन्हें मदिरा, नृत्य एवं मूर्खतापूर्ण पार्टियों में भाग लेना होता है। उन्हें प्रात: भी जल्दी उठना होता है, हड़बड़ाहट मे किसी तरह वस्त्र धारण करके समाचार पत्र पढ़ने लगते हैं। हमारा प्लीहा गतिमापक है। खतरे के समय यह लाल रक्त कोषाणुओं की सृष्टि करता है। एक तो जीवन इतना उत्तेजना पूर्ण है और उस पर समाचार पत्र पढ़ना! आप को इतना आघात लगता है कि बेचारा प्लीहा लड़खड़ा जाता है। इस स्थिति में लोग कार में बैठ कर चल पड़ते हैं, मार्ग में वाहनों की भीड़ होती है। बेचारे परेशान होकर भी देर से दफ्तर पहुँचते हैं, वहाँ अफसर उन पर चिल्लाने लगता है। वे समय के दास मात्र हैं। कोई यदि एक मिनट देर से आये तो उस पर पन्द्रह मिनट चिल्लाते हैं। बेचारे प्लीहा को समझ मे नहीं आता कि इस प्रकार के उत्तेजनापूर्ण व्यक्तित्व से कैसे ताल-मेल बनाये रखें और यह भी उत्तेजित होकर रक्त कैंसर के सम्मुख दुर्बल हो जाता है। मैं आपको सत्य बात बता दूं कि सहजयोग में बिना रक्त को बदले रक्त कैंसर का निदान किया जा चुका है।

गुर्दे तीसरी चीज़ हैं। इस गर्मी से गुर्दे जम जाते हैं और व्यक्ति पेशाब नहीं कर पाता। तब उसे डायलिसिस पर डाल दिया जाता है और दिवालिया हो कर वह मृत्यु को प्राप्त होता है। कुण्डलिनी की जागृति से इसे भी ठीक किया जा सकता है। डायलिसिस पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं। इस गर्मी से लोगों को बड़ी आंत में भयंकर कब्ज भी हो जाती है। इसके अतिरिक्त यह गर्मी जब ऊपर को चढ़ती है तो हृदय को प्रभावित करती है। कोई युवा यदि बहुत अधिक शराब पीता है, चाहे वह टेनिस या कोई अन्य श्रममय खेल खेलता हो, वह यदि बहुत अधिक सोचता है, तो उसे हृदयाघात हो सकता है जो कि सदा प्राणघातक होता है। लोगों को वृद्ध आयु में भी यह गर्मी बढ़ने पर हृदयाघात हो जाता है क्योंकि इस गर्मी से हृदय सिकुड़ जाता है।

तब ये गर्मी ऊपर को चल कर मस्तिष्क में चली जाती है और व्यक्ति की धमनियों को संकुचित कर देती है जिसके कारण उसे बायीं ओर को मस्तिष्क में आघात लगता है। बायीं ओर को, क्योंकि यह गर्मी

बायीं ओर को चली जाती है और व्यक्ति को दायीं तरफ पक्षाघात हो जाता है। यह प्रतिक्रिया है। बायीं ओर के भी कुछ रोग हो सकते हैं। बायीं ओर के रोग जब होते हैं तो यह अत्यन्त गम्भीर प्रकार के होते हैं। बायीं ओर व्यक्ति को मनोदैहिक रोग देता है, सभी ला-इलाज बिमारियां-मांस पेशियों के रोग, कैंसर, हृदय शूल, पागलपन और उन्माद। उन्माद केवल दैहिक रोग है और बाकी सब वर्णित रोग मनोदैहिक हैं। ये सब रोग वायरस (विषाणु) से आते हैं। मानव की सृष्टि से लेकर उसका पूरा भूतकाल वायीं ओर को है अत: इस ओर विकास प्रक्रिया से लुप्त हुई बहुत सी मृत वनस्पति है, मृत पशु और मृत मानव। व्यक्ति का चित्त जब बायीं ओर को जाने लगता है, भूतकाल की ओर, या जब उसको सदमा पहुँचता है या जब उसे किसी चीज़ के लिए खेद महसूस होता हैं तब बायों ओर को झुक जाता हैं। राजनीतिक परिस्थितियों के कारण मुझे लगता है कि रूस में बायीं ओर का प्रकोप अधिक है। व्यक्ति को मध्य में रहना चाहिए क्योंकि यदि वह बायीं ओर को जाता है तो वहां पर ये विषाणु, या मृत पशु, या सूक्ष्म मानव या पशु आप को पकड़ सकते है। इस प्रकार भूत बाधाएं हो सकती है।

कुण्डलिनी की जागृति के अनुसार आपका चित्त मध्य में चला जाता है। सभी धर्मों की सृष्टि सन्तुलन बनाने के लिए की गई थी, अति में जाने के लिए नहीं। परन्तु सन्तुलन क्यों आवश्यक है? क्योंकि सन्तुलन में रह कर ही आपका उत्थान हो सकता है। परमात्मा की सर्वव्यापी शक्ति ही सारा जीवन्त कार्य करती है। बाईबल में इसका वर्णन शीतल लहरियों या परम चैतन्य (Holy Ghost) के रूप मे किया गया है और कुरान में इसे रूह कहा गया है। भारतीय दर्शन शास्त्र में इसे परमचैतन्य कहा गया है। आदि शंकराचार्य ने ''सलीलं, सलीलं'' कहा है अर्थात शीतल-शीतल, आपको इसके साथ एक होना होगा, यही योग है। एक बार इस सर्वव्यापी शक्ति से जुड़ जाने पर आप शक्तिशाली हो जाते हैं।

हमारे विचार उठते हैं और गिरते हैं, उठते है और गिरते हैं और इस प्रकार हम विचारों की नोक पर सवार ऊपर नीचे होते रहते हैं। हम वर्तमान में नहीं रह सकते। परन्तु वास्तविकता तो वर्तमान में ही है। कुण्डलिनी जब हक तॅन्त्रिका पर स्थित अज्ञन्य चक्र से ऊपर उठती है तो व्यक्ति में यह वर्तमान की सृष्टि करती है, आप शान्त हो जाते हैं। निर्विचार समाधि की स्थिति, चेतन होते हुए भी आप निर्विचार होते हैं। अपनी समस्याओं से भी आप निकल जाते हैं। यदि आप पानी में खड़े हों तो आपको ऊँची लहरों का भय बना रहता है। परन्तु यदि आप नाव में सवार हो जाएं तो उन्हीं लहरों को देख सकते हैं और उनका आनन्द ले सकते हैं और यदि आप तैरना सीख ले तो लहरों में कूद कर बहुत से अन्य डूबते हुए लोगों की भी रक्षा कर सकते हैं। इस प्रकार आप निर्विकल्प समाधि की अवस्था प्राप्त कर सकते हैं। आपमें बहुत सी शक्तियां हैं जो कि जागृत हो गई हैं।

भारत में बहुत से कलाकार एवं चित्रकार विश्वविख्यात हो गए हैं। यह वरदान है। वास्तव में आप परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर जाते हैं ओर हर क्षण आपको लगता है कि आपकी देखभाल हो रही है, आपका पथ प्रर्दशन किया जा रहा है और रक्षा की जा रही है। यह आपका अधिकार है, इसे हम सहजयोग कहते हैं। ''सह' अर्थात साथ, ''ज'' अर्थात जन्मा, अर्थात आपके साथ जन्मा परमात्मा के साथ एकाकारिता का ये अधिकार। स्वत: ही आप दिव्य बन जाते हैं। पूर्णतया नैतिक और धर्मपरायण। अपने सद्गुणों का आप आनन्द लेने लगते हैं और अपनी आत्मा के प्रकाश में आप स्वंय के पथप्रर्दशक बन जाते हैं। रातों-रात लोगों ने नशे छोड़ दिये। हमारे विकास की यह चरम-उपलब्धि है।

क्या आप ईसा-मसीह को इस प्रकार आपको प्रवचन देते हुए कल्पना कर सकते हैं? लोगों ने उसे क्रूसारोपित कर दिया। ईसा मसीह दिव्य व्यक्तित्व थे। अत्यन्त महान। मेरे विचार में वे मानव को न समझ सके क्योंकि वे अत्याधिक पवित्र थे। उन्होंने कहा है कि यदि आपकी आंख अपराध करती है तो उसे निकाल दीजिये, आपका दायां हाथ यदि अपराध करता है तो उसे काट दीजिये। उनके कहने पर चल कर तो पश्चिमी देशों के सभी लोग बिना हाथों या आंखों के होते। मोहम्मद साहिब ने सोचा कि ईसा ने पुरुषों को तो अनुशासित होने के लिए कहा है परन्तु स्त्रियों के लिए कुछ नहीं कहा। अत: उन्होंने स्त्रियों के लिए कहा। मैंने सोचा कि पहले इनमें थोड़ा सा प्रकाश आने दूँ। अब मान लो मैं जिद्दी हूँ, हाथ में सांप पकड़े हूँ अन्धेरे में खड़ी हूँ, आपकी बात सुनना नहीं चाहती, आप मुझे बताये चले जा रहे हैं कि मेरे हाथ में सांप है। मैं इसे तब तक नहीं छोड़ूँगी जब तक ये मुझे काट नहीं लेता। परन्तु यदि थोड़ा सा प्रकाश हो जाए तो तुरन्त मैं स्वयं इसे छोड़ दूंगी। मैने भी यही सोचा कि मानव को थोड़ा सा प्रकाश यदि मिल जाए तो वह तुरन्त परिवर्तित हो जाएगा। और इस विचार ने कार्य किया। मैनें कभी स्वप्न में भी न सोचा था कि रूस में मैं इस प्रकार के लोगों को प्रवचन दूंगी।

मैं सोचती हूं कि यह वास्तव में नियति ही है कि इतने दिव्य लोग मेरे सम्मुख बैठे हैं। मुझे खेद है कि इतने छोटे भाषण में आपको सहजयोग के विषय में सभी कुछ नहीं बता सकती। केवल अग्रेंजी भाषा में मैने पांच हजार भाषण दिए होंगे। परन्तु भाषण तो केवल मस्तिष्क की कलाबाजियां मात्र हैं। आपको इससे आगे जाना होगा और ज्योर्तिमय अवस्था प्राप्त करनी होगी। ज्योर्तिमय, कोई मार्का नहीं है जैसे 'पुर्नजन्मित' आदि। यह वास्तविकरण और बनना है। यह बातें ही बातें नहीं है और न ही अन्धविश्वास है यह वास्तविक घटना है। इस घटना को घटित होना होगा और इस घटना के लिए आपको कोई धन नहीं खर्च करना। यह जीवन्त प्रक्रिया है। पृथ्वी मां में जब आप कोई बीज डालते है। तो यह अकुंरित होता है। पृथ्वी मां हमसे कितना धन लेती हैं? अकुंरित होना बीज को और अकुंरित करना पृथ्वी मां का गुण है। स्वाभाविकता की यह जीवन्त प्रक्रिया है। कोई नहीं बता

सकता कि इस पृथ्वी पर हम क्यों हैं? कोई नहीं कह सकता कि मां के गर्भ में भ्रूण कब बढ़ना आरम्भ कर देता है? जिस प्रकार शरीर अन्य चीजों को बाहर फैंक देता है भ्रूण को क्यों नही फैंक देता? इसकी देखभाल की जाती है, रक्षा की जाती है। और जब तक बालक जन्म नहीं लेता इसे गर्भ में ही रोका जाता है। यह सारा कार्य गर्भ में ही होता है। उस दिन किसी ने मुझसे पूछा कि आप क्यों इस पृथ्वी पर अवतरित हुई है? मैने कहा, ''दिव्य बनने के लिए और परमात्मा के साम्राज्य में प्रविष्ट होने के लिए।'' तो उसने कहा कि, ''इससे मुझे क्या लाभ होगा?'' मैने उसे बताया, ''पहले आप इसमें प्रवेश कर पाएं तो यह न केवल आपको शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक सहायता देगा परन्तु अन्य लोगों की भी सहायता करेगा।'' अपनी अगुंलियों के सिरो पर आप अपने चक्रों को अनुभव कर सकते हैं। अपनी अगुंलियों के सिरो पर ही आप अन्य लोगों के चक्रों को भी अनुभव कर सकते हैं अन्यथा निदान करते समय में ही आधे लोगों की मृत्यु हो जाती है। अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप जान सकते हैं कि समस्या क्या है? सहजयोगी चक्रों की भाषा बोलते हैं। आप किसी की भी लहरियों को महसूस कर सकते हैं, चाहे जीवित हो, मृत हो या बहुत दूर हो। अब यदि आपको चक्र ठीक करना आ जाए तो आप अपने और अन्य लोगों के चक्रों को ठीक कर सकते हैं। क्योंकि अन्य लोग हैं कौन? आप तो अब सामूहिक बन चुके हैं अर्थात बूंद सागर बन चुकी है। यही आपका क्षेम है, यही आपकी गरिमा है और इसी को आपने अपना व्यक्तिगत बनना है। यह कोई अहसान नहीं, यह सब प्रेम और सौहार्द्रता है, प्रेम की, दिव्य प्रेम की, शुद्ध प्रेम की शक्ति है। बिना किसी लालच या कामुकता के हमने कभी इस प्रेम की शक्ति का उपयोग नहीं किया था। अब समय आ गया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह रूस एक दिन पूरे विश्व का अगुआ होगा। यह ज्ञान आपको एक भारतीय या भारत से प्राप्त हो रहा है। परन्तु विज्ञान पश्चिम से आया है अत: इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि यह पूर्व से आया है तो लोग इसे निम्न क्यों समझे? सभी विवेकशील व्यक्ति यह समझ लेंगे कि वे एक हैं।

परमात्मा आपको धन्य करे।

●●

सिडनी पूजा–14–3–1983

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

ध्यान–धारणा

सामूहिकता एवं आनन्द प्राप्ति की ओर व्यक्तिगत यात्रा

अब तक आप सब लोग यह महसूस कर चुके हैं कि हमारे आस्तित्व की शान्ति, सौन्दर्य एवं गरिमा हममें अन्त:निहित है। इसका एक महान सागर हमारे अन्दर है। इसे हम बाहर नहीं खोज सकते। हमें अपने अन्तस में इसे खोजना होगा। ''ध्यान–धारणा की स्थिति में आप इसे खोजें और इसका आनन्द लें। जब आपको प्यास लगती है तब आप नदी पर जाते हैं, या समुद्र पर जा कर अपनी प्यास बुझाने का प्रयत्न करते हैं। समुद्र आपको मधुर जल प्रदान नहीं कर सकता। तो बाहर फैली हुई वस्तुएं किस प्रकार आपको वह गहन आनन्द प्रदान कर सकती जो आपके अन्त:निहित है। आप इसे बाहर खोजने का प्रयत्न कर रहे हैं जहां यह है ही नहीं। यह हमारे अन्तर्निहित है, केवल हमारे अन्दर है। यह आपका अपना है और अत्यन्त सहज है। आपकी पहुँच में है। जो भी कुछ आप करते रहे, वह केवल तथा–कथित आनन्द, प्रसन्नता, सांसारिक शक्तियों की गरिमा और सांसारिक वस्तुओं के पीछे दौड़ना था। अब इन सब गतिविधियों के विपरीत कार्य करना होगा। आपको अपने अन्तस में झांकना होगा। आपका भौतिक पदार्थों के पीछे भागना भी अनुचित न था, उसके लिए अपने अन्दर दोष भाव न लायें। परन्तु यह आपके जीवन के वास्तविक आनन्द, वास्तविक गरिमां को प्राप्त करने का सही मार्ग न था। बहुत लोगों ने इस सत्य को अनुभव किया। इसी कारण आप सूक्ष्म सूझ–बूझ में प्रवेश कर सके।

कुछ लोग केवल मानसिक स्तर पर हैं और कुछ केवल शारीरिक स्तर पर कि वे महसूस कर सकते हैं। परन्तु आप ठीक रास्ते पर हैं–आप सही दिशा में चल रहे हैं।

ध्यान धारणा करने का प्रयत्न करें। अधिकाधिक ध्यान करें ताकि आप अपने आन्तरिक अस्तित्व तक पहुँच सकें। यह आन्तरिक अस्तित्व हम सबके अन्दर विद्यमान आनन्द का विशाल सागर है। यह विशाल प्रकाश–पुंज है जो सभी के आन्तिरिक सौन्दर्य को दैदीप्यमान कर देता है। अत: इस तक पहुँचने के लिए सभी विरोधी चीज़ों को अस्वीकार करते हुए आपको अपने अन्दर जाना होगा।

कभी–कभी मस्तिष्क इस सत्य को स्वीकार ही नहीं कर पाता कि परमात्मा की गरिमा हमारे अन्दर है। श्वास–श्वास याद रखें कि आपकी गति अन्दर को होनी चाहिए। अन्दर की ओर चित्त करने पर बाह्य गरिमा के विचार आप भूल जाएंगे।

तुच्छ स्वभाव मानव यह सोचता है कि बहुत सा धन कमा लेने से उसे आनन्द की प्राप्त हो जाएगी। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता। वह अत्यन्त दु:खी होता है, जीवन की छोटी-छोटी चीज़ों के लिए परेशान। बहुत अधिक धनी लोग प्राय: कंजूस होते हैं। वे अपनी आदतों को गुलाम बन जाते हैं। इस प्रकार वैभव कभी-कभी मानव के लिए अभिशाप बन जाता है। अत: केवल धन के पीछे दौड़ने वाले लोग उसका आनन्द नहीं ले सकते।

एक अन्य प्रकार के लोग होते हैं जो सोचते हैं कि दूसरे लोगों पर प्रभुत्व जमाने से उन्हें जीवन में बहुत उच्च स्थान प्राप्त हो जाएगा। आप जानते हैं कि उनके हाथ भी निराशा ही लगती है। वे अपने विषय में बात तक नहीं करना चाहते।

कुछ लोग किसी व्यक्ति विशेष, अपने परिवार, बच्चों या सम्बन्धियों से लिप्त हो जाते हैं। भारत में यह आम बात है। यह भी परमात्मा को प्राप्त करने की विधी नहीं है। लिप्सा से आपकी शक्तियों का ह्रास हो जाता है। उन्हीं से लिप्त होकर आप अपनी सारी शक्ति का नाश कर लेते हैं। परन्तु एक बार यदि आप अपने अन्तस में प्रवेश कर जाएं तो अर्थहीन चीज़ें भी विवेकमय बन जाती हैं। लिप्सा में फँसा व्यक्ति निर्लिप्त हो जाता है और सभी चीज़ों को नाटक की तरह से देखने लगता है। वह अत्यन्त उदार हो जाता है और अपनी उदारता का आन्नद लेता है।

व्यक्ति का पूर्ण दृष्टिकोण ही परिवर्तित होकर अत्यन्त प्रगल्भ हो जाता है। बिना लिप्त हुए मनुष्य सभी चीज़ों का आनन्द लेने लगता है। वह जान जाता है कि लिप्सा मिथ्या है।

सहजयोग में आकर कुछ लोग अन्य लोगों पर प्रभुत्व जमाने का या सहजयोग में धनार्जन करने का प्रयत्न करते हैं। उनका चित्त पैसे पर ही रहता है। धनार्जन या सहजयोग में व्यापार करना मूर्खतापूर्ण है। परन्तु जब आप ऐसा करना ही चाहते हैं तो मैं कहती हूँ, ''ठीक है, कुछ समय ऐसा करने का प्रयत्न करके देख लो।'' आपको पता चल जाएगा कि सहजयोग व्यापार नहीं है। नि:सन्देह सहजयोगी मिलकर कोई व्यापार कर सकते हैं परन्तु सहजयोग व्यापार नहीं है। यह परमात्मा का कार्य है जहाँ आपने अपना सर्वस्व समर्पण करना होता है। अत: लिप्त न हो और अपने हृदय सहजयोग को समर्पित करें। बिना हृदय समर्पित किए आप कुछ प्राप्त नहीं कर सकते।

सत्ता के विषय में भी ऐसा ही है। कुछ लोग समझते हैं कि वे सहजयोगियों को प्रभावित कर सकते हैं, वश में कर सकते है। तथा उन पर प्रभुत्व जमा सकते हैं। ऐसे लोगों को भी परमचैतन्य सहजयोग से बाहर फैंक देता है। आपको प्रेम की शक्ति का आनन्द लेना चाहिए। ताकि लोग आपको अपने रक्षक, सहायक और मित्र के रूप में देख सकें, रौब जमाने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं। आपको पिता सम होना है, लोगों को डराने धमकाने वाला व्यक्ति नहीं। आसुरी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को सहजयोग स्वीकार नहीं करता। ऐसे लोगों के साथ कभी सहानुभूति न रखें। उनसे दूर रहें क्योंकि सहजयोग उन्हें तो बाहर फैंक ही देता है कहीं आप पर भी उनका दुष्प्रभाव न पड़ जाए। अत: सावधान रहें। कुछ ऐसे लोग सहजयोग में आ जाते हैं। जिनका चित्त सदा अपने परिवार, पति, पत्नी और बच्चों पर ही रहता है। उनका पूरा चित्त ही गलत दिशा में चला जाता है। वे सदा यही सोचते रहते हैं कि विवाह किस प्रकार सफल होंगे, उनके बच्चों का हित किस प्रकार होगा आदि-आदि। ये सब बातें परमात्मा पर नहीं छोड़ते। आप सब सन्त हैं, ये सारी चीज़ें आपको परमात्मा पर छोड़नी होंगी। आरम्भ में जब लोग सहजयोग में आते हैं तो कहते हैं– ''मेरे पति ऐसे हैं, मेरी पत्नी ऐसी है, मेरा भाई ऐसा है, मेरे बच्चे ऐसे है–श्री माता जी उन पर कृपा करो।'' आरम्भ में तो यह सब ठीक है परन्तु विकसित होकर आपको इन सब बातें से मुक्त हो जाना चाहिए। **जब आप ध्यान-धारणा करते हैं तो परमात्मा की ओर यह आपकी व्यक्तिगत यात्रा होती है। लक्ष्य पर पहुंचने के बाद आप सामूहिक हो जाते हैं इससे पूर्व यह 'पूर्णतया व्यक्तिगत आन्तरिक यात्रा है।**

आपमें यह देखने की योग्यता होनी चाहिए कि इस यात्रा में कोई आपका सम्बन्धी, भाई या मित्र नहीं है। आप पूर्णतया अकेले हैं 'पूर्णतया अकेले'। आपको अपने अन्तस में अकेले यात्रा करनी होगी। किसी से घृणा न करें। किसी के प्रति गैर जिम्मेदार न हों। फिर भी ध्यान-धारणा की स्थिति में आप अकेले हैं। वहां किसी अन्य का कोई अस्तित्व नहीं। एक बार उस सागर में जब आप उतर जाते हैं। पूरा विश्व आपका परिवार बन जाता है। पूरा विश्व आपकी अपनी अभिव्यक्ति है। सभी आपके बच्चे बन जाते हैं और आप सब लोगों के साथ समान सूझ-बूझ से व्यवहार करते हैं।

यह सारा विस्तार तभी घटित होता है जब आप अपनी आत्मा में प्रवेश कर जाते हैं और आत्माचक्षुओं से देखने लगते हैं। तब आप अत्यन्त शान्त हो जाते हैं।

इस यात्रा के लिए आपको तैयार होना होगा। यह यात्रा केवल आपकी ध्यान-धारणा में ही संभव है। जितनी अधिक उपलब्धि ध्यान-धारणा में होती है उतना ही अधिक आप उसे अन्य लोगों में बांटना चाहते हैं। यह भावना आनी ही चाहिए यदि ऐसा नहीं होता तो अवश्य ही कोई कमी है। इस व्यक्तिगत खोज में जो भी कुछ आप प्राप्त करते हैं उसका आन्नद अन्य लोगों के साथ लेना चाहते हैं। ध्यान-धारणा करने वाले व्यक्ति की यही निशानी है। जो भी आनन्द आप ध्यान-धारणा में प्राप्त करते हैं वह बांटा जाना चाहिए। जो गहनता आपने प्राप्त की होती है उसका प्रकाश चहुं ओर फैलने लगता है। जितने अधिक गहन आप होते हैं उतना ही अधिक प्रकाश फैलाते हैं। कोई भी सर्वसाधरण मनुष्य, जो ध्यान धारणा की गहनता में उतर

जाता है, इस प्रकार का प्रकाश पुंज बन सकता है। लोग उस पर निर्भर होते हैं। आवश्यक नहीं कि आप ध्यान-धारणा पर बहुत अधिक समय लगायें। ध्यान-धारणा से प्राप्त गहनता की अभिव्यक्ति बाहर भी होनी चाहिए। बिना गहनता प्राप्त किए हम अन्य लोगों की रक्षा नहीं कर सकते। जो स्वयं ऊपर उठ जाते हैं वही अन्य लोगों को उत्थान में सहायता करते हैं।

अत: अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखें। सहयोगी के रूप में जीवन के अपने लक्ष्य को समझने का प्रयत्न करें। अब आप परिवर्तित लोग हैं। आप को अपनी सम्पत्ति, सांसारिक वस्तुओं तथा अपनी जीविका की चिन्ता नहीं करनी। आपको अपने स्वस्थ्य एवं निजी जीवन की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। ये सब बातें महत्वहीन हैं। आपका परिवार, बच्चे, पति-पत्नी की चिंता अनावश्यक है। परमात्मा के प्रेम में ही आप की सुरक्षा है।

सिडनी ने पहले भी बहुत अच्छा कार्य किया है और अब भी अच्छी उन्नति कर रहा है। परन्तु गति अपेक्षा से कम है। अत: सहजयोग को फैलाने की नई विधियाँ खोजनी होंगी। पर पहले आप अपने पद को ग्रहण कर लें। आप सब समझ लें कि आप संत हैं और आपने महान कार्य करना है। आप सबने अपने लिए निर्णय लेना है। मुझे विश्वास है कि इस बार मेरे यहाँ आने से आपको यह समझने में सहायता मिलेगी कि सर्वत्र इस प्रकाश को फैलाने के लिए क्या करना सर्वोत्तम होगा।

परमात्मा आपको धन्य करें।

कुण्डलिनी और ब्रह्मशक्ति

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज का विषय है कुण्डलिनी और विष्णु-शक्ति तथा ब्रह्मशक्ति। वैसे देखा जाय तो ये बहुत ही बड़ा विषय है। थोड़ी देर में इस विषय में बहुत ही थोड़ा सा जिसे प्रारंभिक ज्ञान कहते हैं उतना ही बता सकते हैं।

तब भी अगर आपने ध्यानपूर्वक ये विषय सुना तो आप के समझ में आएगा कि भाषण देते समय भी मेरा ध्यान आपकी कुण्डलिनी पर ही रहता है। इसलिए आप हाथ मेरी तरफ रखें जैसे कुछ मांग रहे हों, इससे पूरे भाषण का अर्थ समझ सकते हैं और तभी आप पार हो सकते हैं। नहीं तो उसका कुछ मतलब नहीं है। पाँव में जूते हों तो उतारकर रखिए। गले में काले धागे अर्थात् गंडा हों, कमर में काला धागा बांधा हो, तो उसे भी उतारें तो अच्छा है। कल मैंने बताया परमेश्वर की शक्ति आप के बायें तरफ से इड़ा नाड़ी से बहती है। उस इच्छाशक्ति का थोड़ा सा हिस्सा कुण्डलिनी है। मतलब परमेश्वर की इच्छा ही आपकी इस त्रिकोणाकार अस्थी में रखी है। मनुष्य का पिंड तैयार होने के बाद जो बची हुई शक्ति है-वही ये शक्ति है।

इसे अंग्रेजी में Residual Energy (अवशिष्ट ऊर्जा) कहते हैं। परंतु ये शुद्ध शक्ति है। वैसे ही ये शुद्ध इच्छाशक्ति भी है। ये संपूर्णतया परमेश्वर की इच्छा होने के कारण अथवा इसमें अपनी इच्छा होने के कारण अथवा इसमें अपनी इच्छा का कोई समागम न होने के कारण और उस पर आप की इच्छा का कोई समागम न होने के कारण और उस पर आप की इच्छा का कोई परिणाम न होने के कारण वह अत्यंत शुद्ध है। उसी शुद्धता पर यह वहाँ पर बैठी हुई है। वह त्रिकोणाकार अस्थि की शक्ति जो बाहर से दिख रही है किन्तु अन्दर से वह साढ़े तीन बल दिए हुए हैं। उसका बहुत बड़ा गणित है परन्तु मैने कहा कि मैं सभी बातों का केवल उल्लेख करुंगी उस पर जो किताबें लिखी गयी हैं वही आप पढ़िए। हमारे यहाँ 'दी अडवेन्ट' (The Advent) एक बहुत सुन्दर किताब है। वह आप पढ़ें तो आपको बहुत लाभ होगा। जैसे एक बीज़ में शक्ति है वैसे ही ये भी एक अपार शक्ति है। अब ये जो इच्छाशक्ति है ये जब आप इस्तेमाल करने लगे तब ये आप के इड़ा नाड़ी से बहने लगी। तब इच्छा को पूरा करने के लिए कुछ क्रिया करनी पड़ती है। केवल इच्छा करने से आपको कोई दृश्य नज़र नहीं आएगा। इसलिए उस इच्छा को क्रिया में ढालना पड़ेगा और उसी इच्छा से क्रियाशक्ति निकली है। और वही क्रियाशक्ति आप के दायीं तरफ आयी है। वह आपके शरीर से पिंगला नाड़ी में से बहती है। यह दोनों नाड़ियाँ नीचे जहाँ मिलती हैं वहाँ श्री गणेश का स्थान है। इच्छा-शक्ति भावनामय है, भावनात्मक है। मनुष्य की भावनाएं दिखाई नहीं देती है वह अदृश्य होती है। उन भावनाओं को जब साकार रूप आ जाता है तभी उन का आविष्कार होता है। तभी यह दूसरी क्रियाशक्ति बाएं से दायें में आती है। इस क्रियाशक्ति को हम सहजयोग में महासरस्वती की शक्ति कहते हैं। पहली महाकाली की व दूसरी महासरस्वती की शक्ति। महासरस्वती की शक्ति आपके पिंगला नाड़ी (दायीं) में से बहती है। यही ब्रह्मशक्ति है। यह ब्रह्मशक्ति जब कार्यान्वित होती है अर्थात् क्रियाशील जब कार्यन्वित होती है तब इसी को ब्रह्मशक्ति कहते हैं और इसके देवता है ब्रह्मदेव महासरस्वती, इस ब्रह्मक्रिया को मदद करते हैं। यदि वह शक्ति उनमें से होकर बहती है, तभी ब्रह्म कार्यान्वित होता है। अब जो कुछ आपने वेदान्त वगैरा पढ़ा है वह केवल ब्रह्मशक्ति के ऊपर लिखा

है। आश्चर्य की बात है जब मनुष्य संसार में आया तब उसे भी क्रिया करने की इच्छा हुई। इच्छाशक्ति तो उसमे थी परन्तु क्रिया करने की इच्छा हुई।

क्रिया करने के लिए मनुष्य को पहले पंचमहाभूतों से सामना करना पड़ा। ये पंचमहाभूत हमारे अंदर कहाँ से आए? उनकी पांच तन्मात्राएं होती हैं। उससे पहले महद् अंहकार के (ego) कुल मिलाकर 24 गुण होते हैं। इन सब शक्तियों से ही ये 24 गुण प्रगट हुए। और उन्होंने इस संसार में पंचमहाभूतों का निर्माण किया। इन पंचमहाभूतों को कैसे हाथ में पकड़ना, उन पर मास्टरी (नियन्त्रण) कैसे प्राप्त करनी और उन्हें किस तरह उपयोग में लाना है? उन्हें कैसे समझना? तब एक अंदाज़ मिला कि इन पंचमहाभूतों के एक-एक देवता है और एक-एक कोई-कोई शक्ति है और वही शक्ति उन्हें नियमबद्ध करती है। प्रत्येक पंचमहाभूतों की एक-एक शक्ति है और वे उन्हें अबाधित रखती है। और वही शक्ति उन में अविनाशी रहती है। तब उन्होंने अग्नि, वायु वगैरा प्रत्येक देवता की पूजा शुरू में की।

उसके बाद उन्होंने यज्ञ-हवन करके इन पंचमहाभूतों को जागृत किया। इन्हें जागृत करते समय उनको पता चला कि, इनमें सात शक्तियाँ हैं। उन सातों में से एक है गायत्री व दूसरी है सावित्री। ऐसी सात शक्तियाँ हैं। तब गायत्री मन्त्र वेदों में से निकला है। गायत्री मन्त्र, ये भी पिंगला नाड़ी पर बैठे हुए सभी देवताओं को और पंचमहाभूतों के सारे देवताओं को विराट के दाएं तरफ के देवताओं को जागृत करने के लिए है।

एक महान शक्ति का मनुष्य ने निर्माण किया और जब उन्होंने पंचमहाभूतों को आहुति देकर उनके देवताओं को आह्वान किया तब वे देवता जागृत हुए। उन देवताओं की जागृती से वे सभी शक्तियाँ जागृत हो गयीं और तब उन से गुण जागृत करके, मनुष्य ने सारी सुख-सुविधाएं निर्मित करके आज मानव उच्च स्थिति में पहुँच गया है। ये बहुत वर्षों पुरानी बात है। श्री रामचंद्र जी के जमाने में भी हवाई-जहाज़ थे। हवाई जहाज़ों से लोग घूमते थे। उन्होंने (रामचन्द्र जी ने) खुद लंका से अयोध्या तक सफ़र किया है। और अर्जुन के समय में अपने यहाँ चक्रव्यूह था। इस तरह विशेष साधन थे। ऐसे उपकरण थे कि जिससे आप लोग बड़े-बड़े युद्ध जीत सकते थे। आयुध (लड़ाई का सामान) वगैरा सब कुछ अपने यहाँ था। और सब एटमबम्ब है, इस प्रकार के अस्त्र भी थे। उसी प्रकार अंतरिक्ष में जाने की सभी व्यवस्था थी। ये बात बिलकुल सच है।

उस समय भारत की स्थिति बहुत अच्छी थी। "भारतीय वास्तुशास्त्र" आप कहते हो, उस समय आप उच्चतम स्थिति में थे। लोगों के पास अनेक प्रकार के वाहन थे। प्रासाद वगैरा बहुत ही सुन्दर बनाये हुए थे। ये सभी पिंगला नाड़ी की कृपा से मिले हुए थे। अंग्रेज़ी में हम इसे supra conscious area (सुप्रा कॉन्शस एरिया) कहते है। मतलब इस प्रॉंत में अगर मनुष्य आया और उच्च स्थिति में पहुँचा तो भू-गर्भ में क्या है, आकाश में क्या है, इसका विवरण दे सकता है। परंतु इस पिंगला नाड़ी की प्रार्थना करते समय अनेक बातों का ध्यान रखा जाता था। सर्वप्रथम आप की वर्णव्यवस्था थी। वह वर्णाव्यवस्था विशेष पद्धति से बनी थी। लड़का अगर 25 साल का हुआ तब लड़का या लड़की एक ही युनिवर्सिटी में जाते थे और उसे ही हम गोत्र कहते हैं। इस युनिवर्सिटी के लड़के-लड़कियाँ विवाह नहीं कर सकते थे। अगर उनकी ऐसी इच्छा हुई कि यहाँ विवाह कर लें तो यह रूढ़ी के विरोध में होता है। अभी भी अपने यहाँ सगोत्र विवाह नहीं होते। पूरी पच्चीस साल ब्रह्मचर्य में रहना पड़ता था। उन के आत्म-साक्षात्कारी गुरु होते थे। वे उन लड़के-लड़कियों को ब्रह्मचर्य में हठयोग सिखाते थे।

आजकल का हठयोग सिनेमा ऐक्टर, ऐक्ट्रेस बनाने वाला है। कल ही मुझे सवाल किया गया था, "माताजी हठयोग और कुण्डलिनी का क्या संबध है?" अब आजकल सब गंद होने के कारण पुराना जो पातंजली शास्त्र था उसमें जो अष्टांग योग कहा गया है उससे सारे आठो अंगों पर जोर है। इसलिए केवल आसन करने से लोगों के दिमाग में ये आने वाला नहीं था। पूर्व समय में आसन वगैरा ये सब पच्चीस साल तक जब तक लड़का या लड़की जिनकी शादी नहीं हुई है और भाई-बहन बनकर एक साथ रहकर किसी आत्म-साक्षात्कारी पुरुष के पास रहकर आसनों की शिक्षा लेते थे। आजकल सिखाने वाले आसन झूठे है। अब सभी आसनों मे मैं देख रही हूँ कुण्डलिनी को विरोध करने वाली घटनाएँ होती हैं। इन आसनों मे से बहुत ही थोड़े आसन ऐसे हैं जो आत्मिक उन्नति के लिए पोषक हैं। पहले जमाने में सच्चे गुरु के पास जो लड़के होते थे वे गिने-चुने रहते थे। उन्हें बचपन से पच्चीस साल तक बहुत ही कड़ी मेहनत से योगाभ्यास सिखाना पड़ता था। इस स्थिति में साधक बच्चों की धार्मिकता बहुत अच्छी तरह से बनायी जाती थी। ऐसे बच्चों में भी कुछ ही गिने-चुने बच्चों को ही गुरु आत्मज्ञान देते थे। आजकल ऐसा ज्ञान लेने दो-चार लोग गए हुए हैं। हिमालय के सच्चे गुरु लोग उन को निकाल देंगे इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसके अलावा इस प्रकार हठयोग का ज्ञान समाज में फैलाने वाले जो कुगुरु हैं उन के पास अगर धर्म का कोई मेल ही नहीं है तो आत्मज्ञान कहाँ से आएगा?

कुछ लोग कहते हैं कि ऐसे आसनों से हमें अच्छा लगता है। शारीरिक दृष्टि से आप को ठीक लगने लगेगा। पिंगला नाड़ी आपने ज्यादा उपयोग में लायी तो आप का शरीर बिलकुल ठीक होगा क्योंकि शारीरिक और मानसिक इन दोनों बातों के लिए इसमें से शक्ति बहती है। परन्तु शरीर को ठीक लगने लगा तो आपकी भावनाओं का क्या? इस मार्ग से चलने वाले लोग अत्यंत रूखे होते हैं, क्योंकि ये सूर्यनाड़ी है। कई बार ऐसे लोग इतने रूखे होते हैं कि ऐसे लोगों का जीवन हमेशा खराब ही होता है। उनकी अपनी बीबी से कभी नहीं पटेगी और इससे घर में हमेशा अशांति। इस के अलावा इन लोगों में एक तरह वैराग्य होता है और कभी-कभी ऐसे लोग इतने गुस्सैल होते हैं कि जैसे अपने यहाँ कुछ पुराने लोग होते थे। वे त्राहि-त्राहि करके सताते थे। ये आपको मालूम भी नहीं होगा। "विश्वामित्र ऋषि" ये कोई कल्याणकारी थे? ऋषि विश्वामित्र बहुत पहुँचे हुए तपस्वी थे कि जिसे देखते उसे भस्म

करके रख देते। ये कोई कल्याण का रास्ता है? ये मार्ग हमारा नहीं है और सहजयोग में आपको ये मार्ग अपनाकर नहीं चलेगा। इस मार्ग से कहते हैं कई लोग महर्षि बने हैं ! बने होंगे! परन्तु इनका मनुष्य को क्या फ़ायदा? इन्होंने इतना करके क्या प्राप्त किया? कभी-कभी मुझे लगता है इस तरह के जो आधे पहुँचे लोग केवल सन्यासीपन का पाखंड रचाकर घूमते रहते हैं। इसीलिए संन्यासी का सहजयोग में कोई स्थान नहीं है। संन्यासी वृत्ति पिंगला नाड़ी की पूर्ण जागृति से होती है, परन्तु वह नाड़ी सहजयोग में आत्मज्ञान प्राप्त होने के बाद जागृत होनी चाहिए। उससे पहले की जागृति ठीक नहीं है। वह अधूरी, मतलब एकांगी होती है। इसलिए गलत है। मैं आप को स्पष्ट कहती हूँ संन्यासी लोग भगवे वस्त्र पहनने के लिए संन्यासी होते हैं। मतलब ये कि वयस्क होने के बाद भी उनकी नानाविध करतूतें छूटती नहीं हैं, और उसी में फँसे होते हैं। उसके लिए उन्हें अपना पूरा जन्म व्यर्थ करना पड़ता है।

लेकिन एक बार आप सहजयोग में आते ही आप इतने व्यवस्थित और धर्म में बंध जाते हैं। आप को ज्यादा प्रयास भी नहीं करना पड़ता और मनुष्य में अपने आप शुद्धता, पवित्रता जागृत होती है। उसे औरतों के प्रति और दूसरी स्त्रियों के प्रति कोई आकर्षण नहीं रहता क्योंकि वह समाधानी हो जाता है।

जब वेद व श्रुति ने पंचमहाभूतों को जागृत किया उसी के मूर्तस्वरूप आज अपने यहाँ विज्ञान आया। विज्ञान भी कहां से आया। ये जो वेदमंत्र वगैरा बोलने वाले लोग थे उन्होंने पाश्चिमात्य देशों में जन्म लिया और उनका जो परमेश्वरी शोधकार्य अधूरा रहा था उसे उन्होंने पंचमहाभूतों को विज्ञान के जरिये जीतने का प्रयास किया और विज्ञान के बल पर उन्हें लगता है कि विज्ञान के कारण ही हम जीतेंगे और इसलिए वे अब चाँद पर, शुक्र पर कहाँ-कहाँ जा रहे हैं। परन्तु ये दांयी साईड बहुत अजीब है। मनुष्य को उसी में ज्यादा महत्ता लगने लगती है। मतलब ये कि किसी ने आप से कहा आप आकाश में उड़ सकते हैं तो वे तुरन्त एक हज़ार पौंड देने के लिए तैयार हैं। ये एकदम मूर्खतापूर्ण बात है। अब आकाश में उड़ने की क्या ज़रूरत है? अजी अब पंछी बनकर क्या मिलने वाला है? पंछी से ऊँची स्थिति प्राप्त करोगे? अब पंछी बनने के लिए हमारे पास हवाई जहाज है, सब कुछ है। अब क्या पंछी बनने की स्थिति आप की आयी है? और उड़कर भी क्या मिलने वाला है? अमेरिका से अपने यहाँ कुछ साल पहले एक बड़े वैज्ञानिक आये थे। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। मैने उन्हें कहा उड़ने की जो बात है वह हो सकती है, लेकिन उस में भूतबाधा होती है। उड़ रहे हैं ऐसा लगता है, उसका आभास होता है। उसे लगता है सब लोग अलग है और मैं अलग हूँ। ऊपर से मुझे सब कुछ दिख रहा है। ये सब भूतबाधा हैं। इस दाँयी तरफ के ही बहुत से लोग होते हैं वे अत्यंत महत्वकांक्षी होते हैं। ऐसे लोग जब मरते हैं तब उनकी आत्मा अतृप्त रहती है। उन्हें लगता है कुछ भी करके फिर से संसार में आ जाएं। वे मरने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए वे किसी मनुष्य में घुसकर प्रयोग करते रहते हैं। उनका एक गुण है कि लोगों को ठीक करना।

ब्रह्मशक्ति मतलब पाँच तन्मात्रा और उनमें से निकले हुए पंचमहाभूतों को जागृत करने की शक्ति। वह पिंगला नाड़ी पर है। मनुष्य जब कोई भी क्रिया करता है और आगे की सोचता है और अगर वह अपने शरीरिक कार्य के लिए उपयुक्त होता है, मतलब मेरा शरीर अच्छा रहना चाहिए, शरीर का आकार अच्छा रहना चाहिए, मेरी प्रकृति अच्छी रहनी चाहिए, इस तरह की बात सोचता रहता है तब ये पिंगला नाड़ी की शक्ति बहने लगती है। उसके अलावा जब अपनी शारीरिक स्थिति का उपयोग करने लगता है तब भी ये शक्ति बहने लगती है। एक ही शक्ति के ज्यादा प्रवाह से दूसरी शक्ति खत्म हो जाती है। मतलब एक ही शक्ति ज्यादा बहने से इस मनुष्य में कभी-कभी विकृति का निर्माण हो जाता है। जब आप दायीं तरफ ज्यादा इस्तेमाल करेंगे तब बांयी तरफ बेकार हो जाती है। अब दांयी तरफ ज्यादा उपयोग में लाने से कौन सी बीमारियाँ होती हैं, ये हम देखेंगे।

अब सर्वप्रथम ये देखिए हम जब ये शक्ति बहुत उपयोग में लाते हैं तब आप को जो मुख्य काम करना है वह हम नहीं कर सकते। स्वाधिष्ठान चक्र में इस नाड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि 'ब्रह्मदेव' स्वाधिष्ठान चक्र पर बैठे हैं और वे ही इसे शक्ति देते हैं। तो इनका पहला कार्य ये है कि सृजन कार्य के लिए जो शक्ति चाहिए उसे देते हैं। अब देखिए अगर आप artist (कलाकार) हैं और सहजयोगी नहीं हैं तो आपको कौन सी बीमारी होने के chances (सम्भावनाएं) हैं।

पहली बीमारी ये कि आप बहुत कठोर स्वभाव के हो सकते हैं। आप में कोई प्रेम नहीं है। आपके साथ कोई मनुष्य खड़ा नहीं रह सकता। कोई कहता है वह बड़ा आर्टिस्ट होगा। फिर वह दाढ़ी बढ़ाएगा। कुछ भी दिखावा, हम कोई संन्यासी वगैरा हैं, ये सभी दिखावा इत्यादि। इस तरह की हरकतें करने लग जाता है। आर्टिस्ट का मतलब आप इसे हज़ारों लोगों में पहचान लेंगे, "क्यों जी आप आर्टिस्ट हैं?" ऐसा कहते ही उन्होंने अपनी एक कालर ऊपर उठानी। ऐसा मनुष्य बहुत क्रोधी होता है। उसका कारण दांयी तरफ ज्यादा उपयोग में लाने के कारण संतुलन नहीं आता है। उसकी भावनाएं कम हो जाती हैं।

अगर कोई मनुष्य बहुत दौड़ता है। हिन्दुस्तान में ये सब नहीं दिखाई देता, परन्तु बाकी सभी देशों में इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बहुत चलती हैं। वहाँ के सारे लोग भागते रहते हैं। एक दिन हमारे यहाँ ऐसा एक आदमी आया और कहने लगा, मैं हमेशा भागता रहता हूँ, मुझे कोई सुख नहीं है और दु:ख नहीं है, मैं सुख-दुख के परे हूँ। मैंने कहा ऐसा कुछ नहीं है। आनन्द एक चीज़ है और सुख-दुख के उस पार जाकर सहना, पत्थर का होना, इन्सानियत नहीं है। ये मनुष्य मनुष्यता को ही भूल जाता है। मतलब अब कई लोग अत्यंत स्पष्ट बोलते हैं। किसी को कुछ दु:ख होगा, परेशानी होगी या हमारे बोलने से किसी को दर्द होगा, ये उस मनुष्य के दिमाग में ही नहीं आता है। क्योंकि कभी-कभी वह बहुत विजयी भी होता है। जिसे हम विजय कहते हें वह पाँच तत्वों के जीतने से भी आ सकता है। मतलब कोई मनुष्य बहुत बड़ा अफसर है या वह कोई बड़ा सत्ताधीश बना, तो उसे खास पिंगला नाड़ी की बीमारी होगी

मतलब ego की (घमन्ड की) बाधा होगी। इस प्रकार के मनुष्य के पास एक ढाल लेकर जाना पड़ता है। सीधे तरीके से आप मिलने जाओगे तो कब आप का सर टूटेगा इसका कोई पता नहीं। एक बार एक मनुष्य के पास एक आदमी मिलने आया। वहाँ पर एक और आदमी था। वे सभी पर चिल्ला रहे थे। मिलने गया हुआ आदमी बेचारा सीधा, गांव का आदमी, उसके समझ में कोई बात नहीं आ रही थी। उन्होंने चिल्लाने वाले से पूछा, "आपको क्या चाहिए?" तो जवाब मिला, "आप कौन होते हो पूछने वाले?" "मैं पी.ए. हूँ," "अरे पहले बताओ तुम?" उन्होंने फिर से कहा, "मैं पी.ए. हूँ।" पी.ए. बन गये तो कौन सी बड़ी बात हो गयी? पिंगला नाड़ी पर जो बहुत कार्य करते हैं वे "हम ये करेंगे, वो करेंगे" ऐसा बोलते रहते हैं। उनके पीछे एक अत्यंत विचित्र प्राणी जिंदा होता है। वह है अत्यंत कठोर हृदय कि जिसको प्रेम का विचार ही नहीं होता है; अत्यंत कठोर हृदय जिसे किसी के भी सुख-दुख का ख्याल नहीं रहता।

अब अपने महाराष्ट्र में लोगों का कहना है कि महाराष्ट्रियन लोग जरा ज्यादा ही कठोर बोलते हैं। कठिन बोलने का रिवाज़ महाराष्ट्र में बहुत है। मीठा बोलना अपने यहाँ ज़रा कम है। उसका कारण मुझे लगता है, अपने साधु-सन्तों ने शब्दों के वार किये। तब हमें भी लगता है कि हम भी दो-चार चिकोटे काटें तो क्या हर्ज़ है? परन्तु साधु-सन्तों का अलग है। उनका परीक्षा लेने का वही तरीका था। तब भी हमें सब के साथ मीठी बोली-बोलनी चाहिए। मीठी बात बोलने में आप किसी की चापलूसी नहीं कर रहे हैं। एक तो आप किसी की चापलूसी करेंगे, नहीं तो किसी को तोड़ देंगे। कुछ बीचों-बीच है कि नहीं? हमारा सहजयोग मध्यमार्ग में होता है। कहने का उद्देश्य है कि मनुष्य में एक तरह की मिठास होनी चाहिए। बोलते समय उसमें कुछ भावना चाहिए। दूसरों की भी भावनाएं होती हैं। उन्हें दुखाते समय हमें सोचना चाहिए। विशेषत: औरतों को ज्यादा भावनाएं होनी चाहिएं। वही कभी-कभी इतनी दुष्टता करती हैं कि आश्चर्य होता है। इतनी दुष्टता उनमें कहाँ से आती है? उसका कारण है वे बड़ी विचित्र होती हैं। मतलब हमेशा आज खाना क्या बनाना है? अब लड़की के ऑफिस में खाना भेजना है, मेरे पति का ये काम करना है, इस तरह सारी भविष्य की बातें सोचनी हैं। उस समय ये दांयी बाजू (तरफ) पकड़ी जाती हैं। दांयी तरफ जाने वाला मनुष्य एकदम दुखी जीव होता है। क्योंकि मनुष्य को कोई भी अपने नज़दीक नहीं आने देता। ये सबसे बड़ी बीमारी है। ये किसी को नज़र नहीं आती। भारत में बड़े-बड़े विजयी लोग हैं। परन्तु उनके रूखेपन के कारण उनका नाम कोई सवेरे लेने के लिए तैयार नहीं होता। ज्यादा से ज्यादा शाम को लेंगे और तुरन्त मुंह धो डालेंगे। ऐसी स्थिति है। अब इस तरह से चलने वाले लोगों का-मतलब जो अति पर उतरते हैं, माने अति काम करते हैं-वो समझते हैं हम बड़ा भव्य, दिव्य काम कर रहे हैं। ऐसी धारणा बनाकर बाकी सभी से वंचित रह जाते हैं। आपका परिवार है, बच्चे हैं, ये हो गया एक मार्गीपन। विशेषत: ये हमारे देश में बहुत हैं, औरतों का भी, पुरुषों का भी। उन्हें लगता है पूरा समय हमें बाहर कुछ करके दिखाना चाहिए, दुनिया में कुछ तो करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात पैसे कमाने चाहिए और किस तरह से कमाने चाहिए ये दूसरी महत्वपूर्ण बात। इसलिए सारी औरतें व पुरुष उसी के पीछे लगे हुए हैं। इस पैसे कमाने की धुन में कभी पति-पत्नी की पटती नहीं और किसी से भी किसी की पटती नहीं।

मैं लंदन गयी थी तो मुझे लगा सब कोई कुत्तों की तरह क्यों भोंक रहे हैं? बात करते समय लड़ाई पर उतर आएंगे। टेलीविज़न पर भी पति-पत्नी की लड़ाई दिखाएंगे, नहीं तो माँ-बेटों की, नहीं तो भाई-बहनों की लड़ाइयाँ दिखाएंगे। लड़ाइयों के सिवाय और कुछ नहीं। कोई प्यार से किसी से बातें कर रहा है ये कभी नहीं दिखाई देता। हँसने लगेंगे तो इतने गन्दे हँसेगे कि देखने को जी नहीं करता। आखिर आप को टेलीविज़न बंद करना पड़ेगा। आपस में प्यार से रहना चाहिए। चिक चिक करना, दूसरों को नीचा दिखाना, किसी से बुरी तरह से बातें करना ये सभी मनुष्य के दोष हैं। ये बीमारियाँ फैलते ही सारे समाज का विनाश होता है। जब पिंगला नाड़ी अपने में बहुत बलशाली होती है तब मनुष्य में एक तरह की उन्मत्तता आ जाती है और उस वेग में उसे ये भी समझ नहीं आता कि हम दूसरों को बुरी बातें सुना रहे हैं व उनके साथ बेशरमों की तरह बर्ताव कर रहे हैं। दूसरों की भावनाएं दुखा रहे हैं। दूसरों को ठेस पहंचायी है। अब इस पर क्या इलाज करना चाहिए?

अगर मैंने लोगों से कहा आप नियोजन (planning) मत करिए तो उनको लगता है माताजी पुराने ख्यालात की है। पर मैं कहती हूँ आप नियोजन मत करिए। पहले परमेश्वर का नियोजन देखिए और उसके बाद नियोजन कीजिए। परमेश्वर का planning पहचानना चाहिए। जब तक परमेश्वर का नियोजन हम पहचानते नहीं तब तक आपके नियोजन का कोई मतलब नहीं। हर प्लानिंग में आध्यात्म है, हर एक काम नियोजित है। हर एक नियोजन में परमेश्वर का हाथ है क्योंकि उनका कार्य बहुत बड़ा है। उनकी शक्ति भी बहुत बड़ी है। उनके पास सभी प्रकार की शक्तियाँ हैं। अब ये ब्रह्मतत्व है ये हमारे हाथों से आता रहता है। इसका फायदा सहजयोग में कैसा होता है ये अब मैं बताने जा रही हूँ।

अब आपको आश्चर्य होगा कि सहजयोग से आप में ब्रह्मतत्व जागृत होता है। तब क्या होता है? तो अपने हाथों से जो vibrations (चैतन्य लहरियां) आते हैं वे हमारे साथ बोलने लगते हैं। यहाँ बैठे-बैठे आप बता सकते हैं कि आपके पिताजी की हालत कैसी है? अपनी माता की स्थिति कैसी है? देश का क्या हाल है? Prime Minister (प्रधानमन्त्री) की स्थिति कैसी है? वे कहाँ हैं? उनकी कुण्डलिनी कहाँ है? वे कहाँ पर बैठी हैं? उन्हें क्या परेशानी है? उन्हें कौन सी बीमारी होने वाली है? और कौन सी बीमारी हुई है? यहाँ पर बैठे-बैठे आप बता सकते हैं।

जब ब्रह्मतत्व जागृत होता है तब अपने पूरे कार्यक्षेत्र में जो कुछ भी हम करते हैं उसमें एक प्रकार की तेजस्विता आती है और उस कृति को एक प्रकार की (discipline) अनुशासनबद्धता आ जाती

है। उसका एक गुणकसंख्यांक है (coefficient) है। उसका गुणकसंख्यांक निकाला जाय तो उसके एकदम ठीक vibrations (चैतन्य लहरियां) शुरु होते ही दूसरा जो मनुष्य बैठा है उसकी आत्मा को आनन्द होने लगता है और उसे भी वह प्राप्त होता है। अब हमारे एक सहजयोगी थे, वे मेरे पास आये और कहने लगे "माताजी मैं क्या करुं?" तो मैंने कहा interior Decorator (घर की भीतरी सज़ावट करने वाला) बनिए। तो वे कहने लगे "सर मेरा!" लकड़ी किस चीज़ से काटते हैं ये भी मुझे पता नहीं और आप मुझे Interior Decorator होने को बता रही हैं। मैने कहा करके तो देखिए आप, केवल चैतन्य लहरियों पर! और आज उन्होंने लाखों रुपये कमाये हैं। मतलब ये कि केवल vibrations पर मालूम होता है और जो vibrations पर मालूम होता है वह शाश्वत (universal) है। जो चीज़ सारे संसार ने मानी हुई है उसे ही अच्छे vibrations आते हैं। सौंदर्य दृष्टि उसी से आती है अब यहाँ बैठे-बैठे ही आप बता सकते हैं कहाँ अच्छे vibrations हैं, आप के गुरु कौन हैं? कोई हर्ज नहीं वे अब इस संसार में नहीं है तब भी आप बता सकते हैं वे सच्चे हैं कि झूठे हैं। ज्यादा से ज्यादा आप लंदन फोन कर सकते हैं। लंदन में आप के मित्र बीमार हैं या कैसे हैं ये यहाँ बैठे-बैठे कह सकते हैं और उसके लिए आप का एक पैसा भी नहीं लगता। उसका ये है कि वहाँ वे बीमार हैं तो यहीं से आप उन्हें बन्धन दीजिए तो वे वहां पर ठीक हो जाएंगे। ये सब आप से हो सकता है और उसके मज़ेदार खेल भी होते रहते हैं।

अंहकार ये चीज़ ऐसी है कि ये जब आप में फैल गयी तो वह आप को एकदम अन्धकार में खींच सकती है। अपने आप को साधक पहचान नहीं सकता इतने अंधकार में मनुष्य जाने लगता है। अब अंहकार कैसे आता है ये मैं बताती हूँ। ये इड़ा नाड़ी ये यहाँ से शुरू होती है और ये पिंगला नाड़ी ये जब कार्यान्वित होती है तब उसमें से निकाला हुआ धुआँ--कहिए किसी फैक्ट्री से धुआँ निकलता है न?--या उसी का कोई by-product (उप-उत्पादन) कहिए, ये दोनों संस्थाए तैयार होती हैं। एक है अंहकार, दूसरा है प्रति अंहकार--मतलब हम जो क्रियाशक्ति उपयोग में लाते हैं उससे हमारे में अहंकार निर्माण होता है। वह ऐसे यहाँ से बांयी निकालकर उल्टी तरफ से निकलता है। और जब हम भावनात्मक (emotional) बर्ताव करते हैं तब प्रति-अहंकार आते हैं। इसमें जो लोग अति भावनात्मक होते हैं उनमें प्रति-अंहकार होता है। समझ लीजिए एक छोटा बच्चा माँ का दूध पी रहा है और दूध पीते समय उसे बिलकुल खुश रखना है। उस समय उसकी माँ कहती है "अब मत रोना। मैं तुझे दूसरी तरफ से पिलाती हूँ। माँ ने उसे ऐसे घुमाया तो उसमें अहंकार आ गया। इसलिए इन्होंने मेरे आनन्द में disturb (विघ्न) किया। अहंकार आते ही मां ने कहा--"अब रोना नहीं, चुप रहो" तो वह चुप हो गया। अब प्रति-अहंकार आया। जब अहंकार दबता है तब प्रति अहंकार आता है। उसे ही conditioning (संस्कारित, चित्रित होना) कहते हैं। हम जितना भी पढ़ते हैं, मतलब जितने अपने में संस्कार होते हैं वे सारे प्रति-अहंकार से होते हैं और जो अहंकार से हम कार्य करते हैं वह तो आप को मालूम है। परन्तु सुख, सुसंस्कार अलग बातें हैं। संस्कार करवाने के लिए बहुत से लोग कहते हैं, हम इसे मानते नहीं है, आपने कुछ अनुभव किया है? आप में मन का खुलापन नहीं है। दूसरा अंहकारी मनुष्य कहता है मेरा परमेश्वर पर विश्वास नहीं है। मैं परमेश्वर को नहीं मानता हूँ। मैं किसी को भी नहीं मानता। मतलब उस पर कोई संस्कार नहीं है। एक में अति संस्कार हुए हैं और दूसरे में कोई संस्कार नहीं है। उसे अंहकार और प्रतिअंहकार कहते हैं। अब ये शक्ति जो पिंगला नाड़ी में है वह हमारे दायीं Sympathetic nervous System (सिम्पेथेटिक नाड़ी तन्त्र) में आती है। जब हम वह शक्ति उपयोग में लाने लगते हैं--ज्यादा या बहुत ही कम करने लगते हैं--तब हमें कैंसर जैसी बीमारियाँ होने लगती हैं। कैंसर जैसी बीमारी कैसे होती है ये देखना बहुत जरूरी है। एक बांयी संस्था है, एक दांयी संस्था है। उस के बाद ये ईड़ा नाड़ी का कार्य है व दूसरा पिंगला नाड़ी का, और बीच में सुषम्ना नाड़ी है। अगर हमने ये दांयी बाजू ज्यादा इस्तेमाल किया तो बांयी बाजू पर बहुत जोर पड़ता है और इस बाजू का चक्र है, वह टूट जाता है और हमारे उस चक्र पर के देवता एक तो सो जाते हैं या तो कभी-कभी लुप्त हो जाते हैं। उसके बाद वह बाजू (ईड़ा या पिंगला नाड़ी जिस पर ज्यादा जोर पड़ा है) वह अपने आप चलने लगती है। उससे कैंसर जैसी बीमारी हो सकती है। तो किसी भी बात की तरह से आपकी sympathetic nervous system (सिम्पैथेटिक नाड़ी संस्थान) ज्यादा उत्तेजित नहीं होना चाहिए। वैसे भी गलत गुरु करने से व काली विद्या black magic की वजह से कैंसर होता है। आश्चर्य की बात है कैंसर के पीछे किसी न किसी गुरु का ही हाथ है। कितने प्रकार के गुरु हैं। मैंने जितने रोगी ठीक किये हैं उन सभी में किसी न किसी गुरु का प्रकार या काली विद्या, मतलब ये जो कैंसर की शक्ति है वह बांयी तरफ से शुरु होती है और बांयी तरफ डाक्टर नहीं जा सकते। वे गर्दन काटेंगे ज्यादा से ज्यादा नाक काटेंगे, कान काटेंगे या आंख परंतु कैंसर वे ठीक नहीं कर सकते। अब जो बीच की शक्ति है वह है--विष्णुशक्ति। इस शक्ति के बारे में इतनी थोड़ी देर में मैं नहीं बता पाऊँगी।

तो इस शक्ति के बारे में मैं कल बताऊँगी। और इसी शक्ति के दम पर आप ने सहजयोग अपनाया है। अगर ये दोनों शक्तियां नहीं होंगी तो आप का evolution (विकास) नहीं होता। हम अमीबा से मानव नहीं बनते और न आज इस स्थिति तक पहुँचते। परमेश्वर आप को सुखी रखे ये मेरा आशीर्वाद है।

(23 सितम्बर 1979 को श्री माताजी द्वारा दादर में अमर हिंद मंडल में दिये हुए भाषण पर आधारित)

गुरु वही है जो साहिब से मिलाए।

--श्री माताजी

●●